

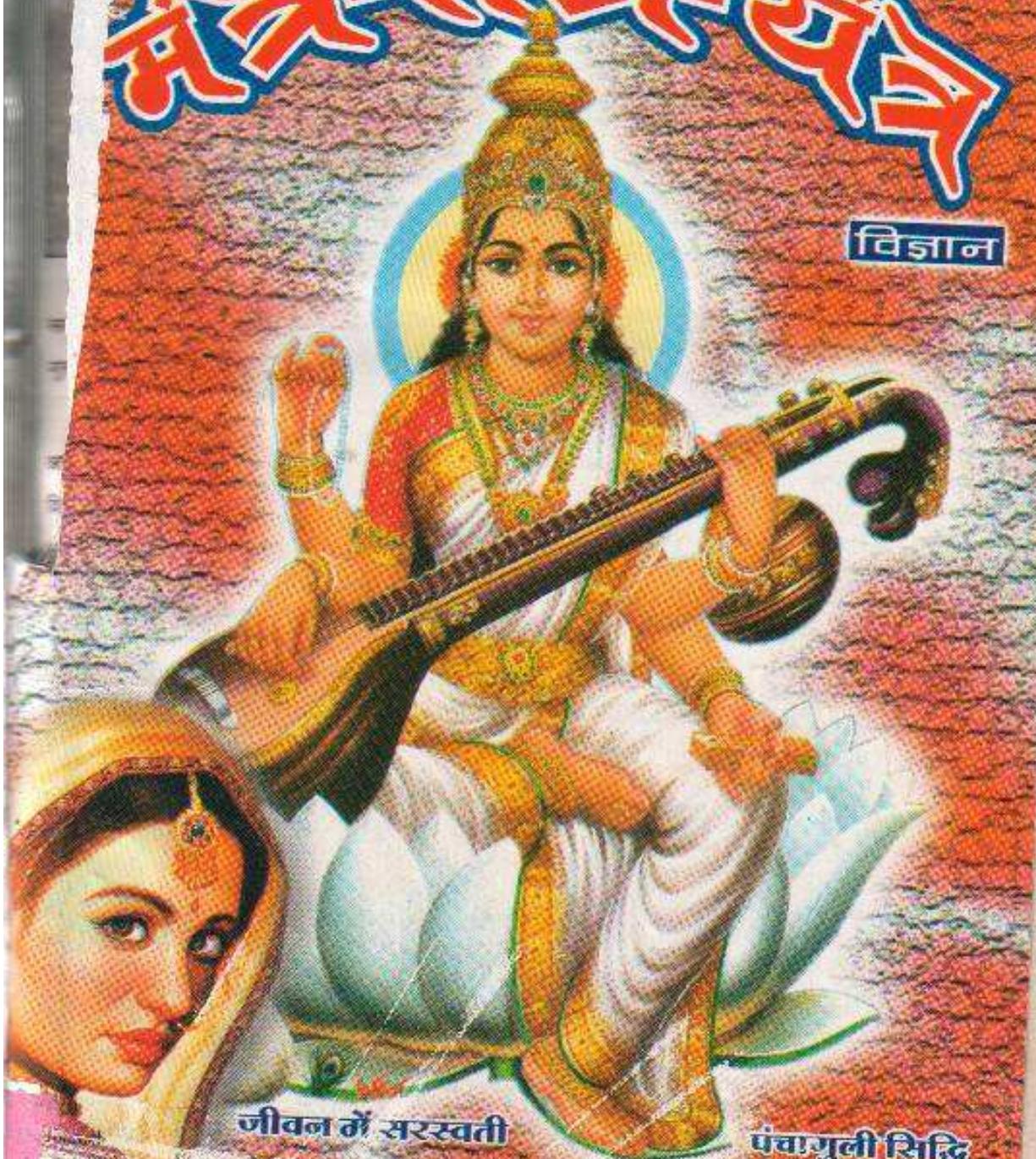
सौन्दर्य-सम्मोहन विशेषांक

मंबरे 2000

गुरुवा 100

श्री-तंत्र-संग्रह

विज्ञान



जीवन में सरस्वती

संख्या १० नवीन सौन्दर्य

पंचागुली सिद्धि

अमृतजय महाकृष्ण



COLLECTION OF VARIOUS

- > HINDUISM SCRIPTURES
- > HINDU COMICS
- > AYURVEDA
- > MAGZINES

FIND ALL AT [HTTPS://DSC.GG/DHARMA](https://dsc.gg/dharma)

Made with
By

Avinash/Shashi

Icreator of
hinduism
server

आत्म-प्रकाश

ॐ परम तत्त्वाय नारायणाय गुरुकृप्यो नमः ॥



सद्गुरुदेव

सन्तुष्ट प्रवचन	7
गुरु काणी	44
स्तम्भ	
जगनो से अपनी बात	34
जिज्ञासा धर्म	43
नवास्थ्य सरिता	58
नवत्रों की बाणी	60
मैं समय हूँ	62
वराहभिंहीर	63
इस मास मिल्ली में	80
एक दृष्टि में	86

वर्ष 20 अंक 12
दिसंबर 2000 दृष्टि 68



साधना	
मेधा सरस्वती साधना	28
वागेश्वरी साधना	29
वाताली साधना	30
गीरी सरस्वती साधना	31
भगवती शारदा साधना	32
आकर्षण साधना	40



पंचांगुली साधना	41
सूर्य साधना	49
ललिताम्बा साधना	77
पंचांगुली साधना	82
विशेष	
कुंभ महापर्व	46
सदगुरु प्रसंग	52
नववर्ष वीक्षा-आळान	67



विवेचन	
भगवती सरस्वती	22
काहे होत अधीर	50
दूर कदम्ब की छाव में	55
सम्मोहन सौन्दर्य योवन	61
मुण्डकोपनिषद् रहस्य	73

स्तोत्र शक्ति	
ललिताम्बा स्तोत्र	64



:: सम्पर्क ::

सिद्धाश्रम, 306 कोहाट एन्क्लेव, पीतमुख, दिल्ली-110034, फोन: 011-7182248, देली कैम्प: 011-7196700
गंगा-रु-यत्र विज्ञान, ३०३ शीलनगर, हाईलेट कॉलोनी, जामुर-३४२०१ (गोज) फोन: 0291-432206, देलीफिल्स: 0291-432010
WWW address - <http://www.siddhashram.org> E-mail add. - mtv@siddhashram.org



प्रेरक संस्कारक

डॉ. नारायणदत्त श्रीमाली
(पद्ममुख स्वामी
किन्द्रियोऽवश्वानंद
जी)

प्रधान सम्पादक

श्री लक्ष्मिश्वर श्रीमाली

कार्यवाक सम्पादक

पृष्ठ संसोजक

श्री कैलाशचन्द्र श्रीमाली

ब्रह्मस्थापक

श्री अश्वितद श्रीमाली

संपादन सलाहकार मंडल

डॉ. नम येतना श्रीमाली,
श्री शुभ देवक श्रीमाली,
श्री स्वेत पातिल, श्री पत्र के, शिशा,
श्री आर. री. चिह्न, श्री नगापर
महापाल, श्री बरनन पाटिल, श्री
सतीश मिश्रा (वस्त्रई), श्री पम,
जार. विष्णु, श्री लक्ष्मी राजेश्वर,
श्री विजय शास्त्री (शर्मिष्ठा),
श्री कृष्ण मोहन (वेङ्कटेश),
डॉ. एस. के. शीताल (देवाल),

प्रकाशक पर्व स्वाक्षिक
श्री कैलाश चन्द्र श्रीमाली

द्वारा

नैन आर्ट प्रेन्टर्स

10/2, DLF, इंडियन्स निवास,
मोली नगर, नई दिल्ली
से दूरित न्या
मंत्र-संघ-यत्र विज्ञान शाहकोट
कौलीनी, जोधपुर से
प्रकाशित।

मूल्य (भारत में)

एक प्रति 18/-

वार्षिक 195/-

प्रार्थना

नियम

पत्रिका में प्रजाशिल सभी रचनाओं का अधिकार पत्रिका नहीं है। इस 'मंत्र-तत्र-यत्र विज्ञान' पत्रिका में प्रकाशित लेखों में सम्बन्धित काम सहन देना अनिवार्य नहीं है। तर्क-ज्ञानक बरने वाले पटुक पत्रिका में प्रकाशित पूरी सामग्री के गल्प समझें। किसी नाम स्थान के घटना के बिसी से कोई सम्बन्ध नहीं है, यदि कोई घटना, नाम या तथ्य निलं जाय, तो उसे स्वेच्छा समझें। पत्रिका के लेखक युमकड़ी से हुए सत होते हैं, अतः उनके ज्ञान के बारे में ऊँह भी उन्ह्य जानकारी देना सम्भव नहीं होगा। पत्रिका में प्रकाशित किसी भी लेख या सामग्री के बारे में बाद-विवाद या तर्क नाम्य नहीं होगा और न ही इसके लिए लेखक, प्रकाशक, गुरुक या सम्बादक जिम्मेदार होंगे। किसी भी सम्बादक को किसी भी जगत् का पारिश्रमिक नहीं दिया जाता। किसी भी प्रकार के बाद-विवाद में जोड़ा गया तथ्यालय ही मान्य होगा। पत्रिका में प्रकाशित किसी भी सामग्री को साइक या पाइक कहीं से भी प्राप्त कर सकते हैं। पत्रिका का वार्षिक से संग्रहने पर इन इन्हीं तरफ से प्रयोगिक और सही नामग्री अद्या यह भेजते हैं, परं निर भी उसके बाद में, असली या नकली के बारे में अद्या प्रभाव होने पर न होने के बारे में डमरी जिम्मेदारी नहीं होगी। पाठक उन्हें जिम्मेदार पर ही ऐसी सामग्री पत्रिका का बोलता से मानदायें। सामग्री के सूल्य पर तर्क या बाद-विवाद मान्य नहीं होगा। पत्रिका का वार्षिक गुरुक वर्तमान में १५/- है, परं यदि किसी विशेष एवं आपराह्नार्द कारणों से पत्रिका को ब्रैनसिक या बद करना पड़े, तो जितने भी अंक आपको प्राप्त हो चुके हैं उसी में वार्षिक सदस्यता अद्या दो वर्ष, तीन वर्ष या पंचवर्षीय सदस्यता को पूर्ण समझें, इसमें किसी भी प्रकार की आपत्ति या आलोचना किसी भी रूप में स्थीकर नहीं होगी। पत्रिका में प्रकाशित किसी भी साधन में सदस्यता-असफलता, छानि-ताप की जिम्मेदारी साइक की त्वय की होगी तथा साधक कोई भी ऐसी उपासना, उपयोग न करें, जो नैतिक, सामाजिक एवं कानूनी नियमों के विरुद्ध हैं। पत्रिका में प्रकाशित लेखों के लेखक योगी या सन्धारी लेखकों के विषय नाम्य होते हैं, उन पर भाषा या आवरण पत्रिका के कम से कम पारियों की तरफ से होता है। पाठकों की मांग पर इस अंक में नैतिक के विषय लेखों का भी ज्यों का त्वय सन्देश दिया जाया है जिससे यह नवीन पाइक लाभ उठा सके। साधक या लेखक उपने प्रयोगिक अनुभवों के आधार पर जो मंत्र, तत्र या यंत्र (भले ही वे इन्तीम आस्था के द्वारा हों) बताते हैं, वे ही देखें हैं, अतः इस सम्बन्ध में आलोचना करना वार्षिक है। आवरण पृष्ठ पर या अन्दर जो भी फोटो प्रकाशित होते हैं, इस सम्बन्ध में सारी जिम्मेदारी फोटो भेजने वाले फोटोग्राफर जप्ता आर्टिस्ट की होगी। यीक्षा जप्ता करने का तार-न्य यह नहीं है, कि साइक उससे सम्बन्धित लाभ तुरन्त प्राप्त कर सकें, यह तो हीने और सतत प्रतिक्रिया है, अतः पूर्ण गुरुक और विश्वास के साथ ही दीक्षा जप्ता करें। इस सम्बन्ध में किसी प्रकार भी कोई भी अवचति या आलोचना स्वीकार्य नहीं होगा। गुरुदेव या पत्रिका परिवर्त इस सम्बन्ध में किसी भी प्रकार की जिम्मेदारी बहन नहीं करेंगे।

या कुन्देन्द्रु तुष्टार हार धवला या शुभ्रवस्त्रवत्तरा,
या वीणा वशवण्डमण्डित करा या श्वेत कमलासन्ना
या ब्रह्माच्चुत शकर प्रभुतिमिर्देव लदा विनिवता
सा मां पातु सरस्वती प्रजवती त्रिः शेष जाडवायहा।

कुन्द्र पुष्ट, चन्द्रमा, जोस के बूद एवं स्फुटिक माला के चमान और वर्षानवी झेन बरव बन्नी हुई, जाने हाथी में वीणा, श्वेत कमल, अफटिक माला, तथा अध्य प्रदान करने वाली, बद्धा, विष्णु एवं शिव भी ब्रह्मपदी जिस स्वरूप के ध्यान करते हैं, वह भगवती सरस्वती मेरे सम्पूर्ण अज्ञान के नार वनके बड़े नान के द्वारा पुरात प्रदान करें।

* भलाई का संदेश *

स्वामी विवेकानन्द अमरीका जाने वाले थे। अमरीका जाने से पूर्व मां शारदा का आशीर्वाद लेने गए और कहा, मां मैं अमेरिका जा रहा हूँ, मुझे आपका आशीर्वाद चाहिए। यह सुनकर भी मां पर तो जैसे कोई प्रभाव ही नहीं पड़ा। स्वामी नी ने मां से फिर आशीर्वाद मांगा, मां फिर चुप्पी साधे रही।

बड़ी देर बाद मां ने स्वामी जी से कमरे की ताक में पड़ा चाकू ले जाने को कहा। उन्होंने चाकू तो झट से लाकर दे दिया। पर आशीर्वाद से चाकू का क्या रिश्ता है, वह वे न समझ सके।

इधर मां ने चाकू पाने ही आशीर्वाद की बड़ी सी लगा दी। स्वामी को बड़ा आश्चर्य हुआ और वे मां से चाकू और आशीर्वाद का सम्बन्ध पूछ ही चेते।

मां ने मुख्यरत्ने हुए नवाब दिया, बेटा नव मने तुम से चाकू मांगा, तो तुम चाकू का फल तो आपने हाथ में एकड़े रखे और दूसरी ओर से चाकू मुझे दिया दिया। इससे मैं नमझ गई कि तुम सारी बुराइयों को अपने पास सम्भाल लेंगी की भलाई करोगे। स्वयं चाहे तुम विष ले लो, परन्तु लोगों में अमृत ही बाटेगे। मैं तुम्हें हृदय से आशीर्वाद दे रही हूँ।

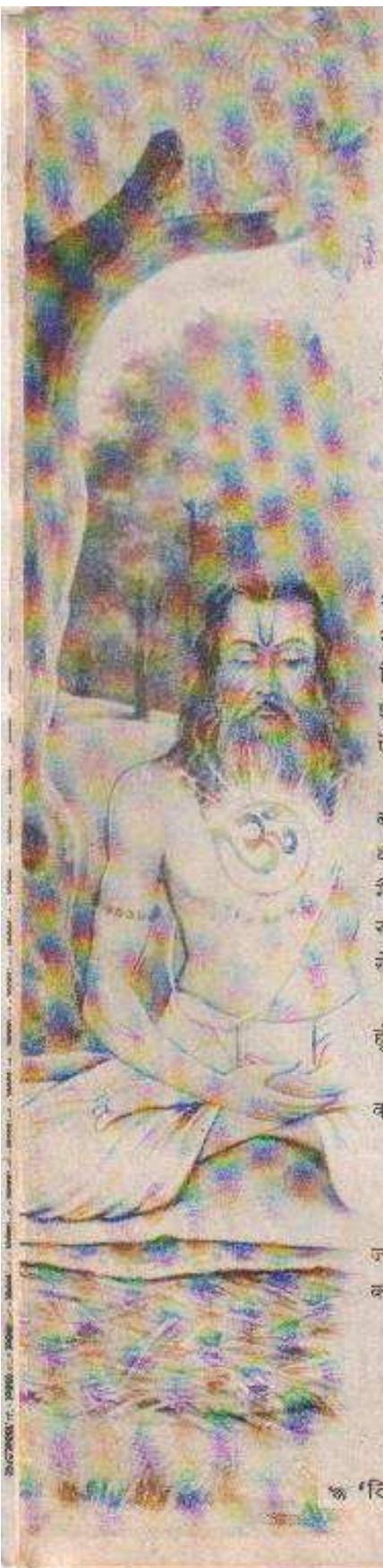
इतना सुनकर स्वामी जी बड़े निश्चित भव्य में कहने लगे, पर मां मैंने तो यह सब मोत्ता भी नहीं था, मैं चाकू का फल इस कारण पकड़े रहा, जिससे तुम्हें चोट न लगे।

मां और भी प्रसन्न होकर कहने लगी कि तब तो और भी अच्छा है, तुम्हारे तो स्वभाव में ही भलाई है, तुम किसी का बुरा कर्मी नहीं करोगे तुम जन्म से ही महान हो, सहज संत हो।

इस तरह मां द्वे भलाई का संदेश लेकर स्वामी जी ने प्रसन्नता पूर्वक विदा ली।



पली गांग सरोकर विनाल - ०१
पाहाड़सामाजिक तिरंगे



सदगुरुवेद छाँ, नारायण दत्त श्रीमाली का व्यक्तित्व महान है और अपने जीवन में हर बात को उसी रूप में कहा जिसे साधारण व्यक्ति समझ सके। जीवन में अविरत गति से चलते हुए किस प्रकार एक एक कदम आगे बढ़कर पूर्णत्व की ओर अग्रसर हुआ जा सकता है और जीवन में सिद्धांश्रम प्राप्त हो, उसी का सारगमित विवेचन गुरुवेद की ही भाषा और शैली में—

— अब आप क्या समझे? अब अगर मैं यह कह भी दूँ, तो आप क्या समझे?

— ये अणु क्या हुआ? ये महान, विराट व काल पुरुष ये सब क्या हैं?

— इसको समझाना कठिन है।

मैंने किया योग को समझाते हुए बताया, कि किया योग की तीन स्तर हैं— पहली है धारणा, दूसरी है ध्यान, तीसरी है सम्माधि।

मैंने धारणा के बारे में समझाया, कि हम सादृश्यपेक्षी हैं... हम अपने ब्रह्मबरी बाले से बोसनी, और दुष्मनी कर सकते हैं। शराबी, शराबी के भाथ बैठ कर आनन्द मना सकता है। गुरु के पास बैठेगा ही नहीं, पिछले साठ वर्षों में एक भी ऐसा अवसर नहीं आया, कि वह बोतल लेकर भगवान के पास बैठा हो, और शराब पीने में उसको आनन्द आया हो। इसलिये हम गृहस्थ हैं, और हमारी पत्नी है, पुत्र हैं, परिवार है, बनधु-आनधु हैं... तो हमें ऐसे ही गुरु की आवश्यकता है, जो इस सादृश्यपेक्षी हो।

एक सन्यासी है, और आश्रम में बैठा है, यदि आप उससे कहें— महाराज! आप बहुत महान हैं, और... आप मुझे जान दीजिये। वह कहेगा— बच्चे! चार छँ साल सेब्रा जरी आश्रम में रहे, फिर हम आपको समझायेंगे... वरअसल उनके आपके बीच में गैरिंग इतनी अधिक है, कि आप उनकी ब्रह्मबरी में नहीं आ सकते। आप न तो सन्यास ले सकते हैं, और न आपको सन्यास लेने की किया का जान ही है— और भगवे बज़ड़े पहिनने ने सन्यास आ भी नहीं सकता।

भर्तृहरि गुरु के पास जाये और गुरु से नियेदन किया— “मैं सन्यास लेना चाहता हूँ।”

गुरु बोले— “मैं तुम्हें सन्यास अवश्य दूँगा, पर पहले तुम बैठकर गुरु मंत्र का जप करो।”

भर्तृहरि ने एक सप्ताह तक मिशनर गुरु मंत्र का जप किया।

तब गुरु ने कहा— “अब बोलो, तुम्हारे नम में कुछ इच्छा हो रही है?”

भर्तृहरि बोले— “और तो कोई खाल बात नहीं है, पर कभी-कभी पत्नी का ख्याल जल्द आता है। वह बेचारी कैसे रहती होगी, मैं तो यहाँ आ गया, वह सारा राज कैसे करती होगी?”

गुरु ने कहा— “तुम नहीं ले सकते सन्यास तुन वापिस जाओ।”

और वे पुनः राजा बने।

सात बार गुरु के पास आकर दीक्षा ली, और सात बार वापिस जल्नी के पास

सुख में नहीं – जाती बात वे पूरी दीक्षा प्राप्त कर सके। संन्यास लेना इतना सामाजिक नहीं, यह जीवने पहले से कोई संन्यासी नहीं बन सकता।

जीवन के प्रारम्भ में कहा है, कि जीवन के सत्यों से युक्त हमारा जीवन सामाजिक हो देना चाहिए हो। रोग भी तीन प्रकार के होते हैं – पहला शारीरिक रोग, सामाजिक रोग, और तीसरा आन्तिक रोग। संसार के प्रत्येक व्यक्ति को शारीरिक तीन लीला मानविक रोग है, यह मैं गणपटी के स्थापना के साथ कह सकता हूँ। ऐसा कोई नहीं कह सकता, कि मैं शारीरिक व मानसिक रूप से पूर्ण स्वस्थ हूँ, और तीसरा आन्तिक नहीं हूँ, किन्तु तात्पर्य है – कभी कभी हमारे शरीर में खून उबाल खाता है, कि हम कुछ करें, कुछ प्राप्त करें, पर कर कुछ भी नहीं पाने हैं . . . कर नहीं पाने हैं – आन्तिक सन्ध्या जी के कारण, आर्थिक समस्याओं के कारण, और भी कई कारण हैं।

इन तीनों रोगों को निघृत करने के लिए यह एक विशेष प्रयोग इस किया जाना है, और इस प्रयोग के सम्पन्न करने की विधि आप मैं अत्यन्त चिराट है। जावशपकाता है, कि व्यक्ति इस प्रक्रिया को भली भांति पूर्णता से समझ ले, इसलिए यमद्वारा ले, कि उसको जीवन में उतार नके . . . और यमद्वारा ने कहीं पर भी, किसी भी योगी और सन्ध्या सी को क्रिया योग समझा सके, यह धनता आप में आनी ही चाहिए।

– और आप इस बात का बोडे तो ‘एक्सप्रियोजेन्ट’ भरें। यदि आप हरिहर, नष्टुरा या काशी कहीं पर भी युमने नाये, वहाँ आपको कोई योगी, गुरु या साधु सन्ध्यासी मिले और आप उनसे पूछिये – गुरु जी! अगर महात्मा नंदी ने क्रिया योग लीखने की इच्छा की, और बाइबिल में हसा नसीह ने कहा, कि क्रिया योग से जीवन में पूर्णता प्राप्त होती है, यदि ऐग्मबर साहब ने कुरान की जायतों में क्रिया योग का वर्णन किया है, सारे धर्मों में अगर क्रिया योग सन्ध्या है, तो नम्रर इसके पीछे कुछ सत्य है, अतः आप हमें क्रिया योग के बारे में बताइये।

और तब आप जान जायेंगे, कि वे किनने चिनान हैं। उनको खुद को जान है ही नहीं, शायद उससे ज्यादा तो जान आपको होगा। उस योगी से ज्यादा तो आप अच्छी तरह से बता सकेंगे – लहकर भी, प्रेक्षिकाल करके भी, और प्रवचन के माध्यम से भी, क्योंकि आप उसे पूर्णता के साथ समझ सकते हैं, और वह पूर्णता आपको निवेदी गुरु के सान्निध्य से भी।

क्रिया योग पूर्णतः प्रैक्टिकल ज्ञान है, तथ्य और चिन्तन के माध्यम से भी और जीवन में प्रयोग के माध्यम से भी। शंकराचार्य ने इस प्रकार क्रिया योग की संगुम्फन विधि को स्पष्ट किया, कि हम रोग रहित कैसे हों? आप प्रयोग करके देखें, क्योंकि जब कोई भी चीज़ पूर्ण मंशसिद्ध होनी, तो पूर्ण फल प्रदान करेगी ही – व्यक्ति को पूर्णस्तप से प्रवीण कर देना, योग्य कर देना, मनवृत बना देना वे सब मन्त्र सिद्ध करना ही तो हुआ।

क्रिया योग को लीखने के लिए सबसे पहले जरूरी है, कि आप रोग रहित जीवन प्राप्त कर सकें। रोग रहित जीवन प्राप्ति के लिए ही क्रिया योग में ‘एकमूर्खी स्वाक्षर’ पर एक विशिष्ट प्रयोग बताया गया है, अतः इस प्रयोग को आपको करना

हो चाहिए।

इस प्रयोग को जब घर करें, तब अपने सामने एक बाजोट पर, एक तांबे की प्लेट रखें। एक 'हकीक माला' ले और इसके केवल छः आटे देकर शिखरगुड़ बना कर रखें। इसके बाद माला के दोनों तरफ तांबे के दो मिन्डस रख देया शुद्ध तांबे के दो तरफ रुड़े कर दें (जो तांबा आपको दिखाई देता है, वह तोहे मिथिल होता है, शुद्ध तांबे का प्रयोग करें) उसके बीच में आप उस सद्राश को रख दें। तांबे और मिन्डस के संश्यार्थ से सद्राश अपने आप कल्पनदुल हो जायेगा; इन दोनों को किसी तांबे के पास में ढी रखें। नत्यञ्चात् रुद्राक्ष पर धोरे धोरे जल वर्ष करते हुए मंत्र उच्चारण करें, और यह मंत्र कवल दो अक्षरों का है।

‘सोउहं’

— ये ‘सोउहं’ शब्द किसी विशेष धर्म, और सम्प्रदाय का मंत्र नहीं है। तिष्ठत में जितने लामा हैं, वे अपने-आप में सेनार के सर्वश्रेष्ठ तांत्रिक और योगी हैं। यदि आप कभी धर्मशाला जायें, (यह स्थान हिनोचन प्रदेश में है) वहाँ आपको कई लामा देखने को मिल जायेंगे, जो अपने आप में पूर्ण तांत्रिक ज्ञान से युक्त हैं, ऐसे लामा लोगों का नायन मंत्र ‘सोउहं’ ही है।

‘सोउहं’ ये परा युरुष ये,

वः रत्नवै व्रत क्रियात्मा वै सत्योजत्वं वः ॥

क्रिया शब्द का वाचन, और ‘सोउहं’ शब्द का वर्गन ने सबसे पहले निय श्लोक को उद्घोषित किया, उसका सोउहं है।

मंत्र ‘सोउहं’ पर पूरी दो हजार पृष्ठों की पुस्तक शायद इस शब्द को सही ढंग से समझाया आप में ये दो अशर अत्यधिक गूढ़ रोग रहित जीवन की पूर्णता है।

— वह ब्रह्म में हूँ, और मैं पूर्ण मैं हूँ। मैं ‘अ’ से लगाकर उसको ‘सोउहं’

तब बनेंगे,

... आयो
प्रथम अक्षर
विद्य
निख्वी जाय, तो भी
नहीं जा सकता। अपने
है। ‘सोउहं’ का सारांश
सोउहं का अर्थ है — सः + अहं
हुँ, सारी वाइमय का मूल आधार
हुँ तक पूरे ज्ञान को पीने वाला हुँ,
कहते हैं।

— और वास्तविक सोउहं हम
जब पूरे ज्ञान को इम पी सकेंगे। अहं, का
मतलब है — धमण्ड, अहकार . . . और धमंड
का तात्पर्य है — रोग, चाहे वह मानसिक हो अथवा
शारीरिक।

धन है, तो उसमें धमंड की क्या जरूरत है,
परन्तु अधिकतर धनी व्यक्ति अत्यधिक धमंडी होते हैं। फिर

— किंवदं यह यह मी देखते हैं, कि जो नितना भी ज्यादा पैसे वाला होता है, वह उसकी अपनी जगह नहीं होता है, और बहुत लोटे व्यक्ति जिनके पास उल्पनाथ रहता है, वहुत ज्यादा उठता जाते हैं, फिर तो धन से इसका कोई सम्बन्ध नहीं। आमतर है, जो मानसिक चिन्तन से, जैसा मानसिक चिन्तन होगा, वैसा अवस्था होगी, जैसा ही सम्बन्ध होगा। इस रोग की निवारिके लिये भी 'सोइङ' अब कही जानी चाही नहीं है।

जनतिए नुक ने शंकराचार्य को समझाया — “किया योग को सीखने से यहाँ तक पूर्ण रोग रहते होकर मेरे सामने आओ।” तुम्हें उस एकमुखी निष्ठा के वायर से जो शिव का प्रतीक है, उस माला के माध्यम से जो शक्ति का प्रतीक है, उसने शिव शक्ति का समन्वय करके, एक विघ्न ऊर्जा पैदा करके उसी रोगों को दूर करना होगा . . . और तब उन्होंने शंकराचार्य को यही अपना सम्पन्न करवाया।

इस प्रक्रिया द्वारा तीन हजार वर्ष पहले वाली कही वापिस जुड़ी है। अवश्यक को यह प्रयोग जरूर करवाया गया, पर इसके अलावा तीन हजार वर्षों में यह अपना सम्पन्न हो, ऐसा उत्तरण नहीं मिलता।

इससिए नहीं हआ, क्योंकि जिस चीज को समझेंगे नहीं, तो प्रयोग केसे करें?

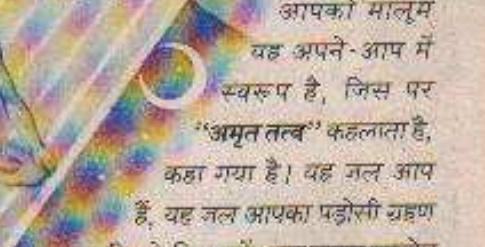
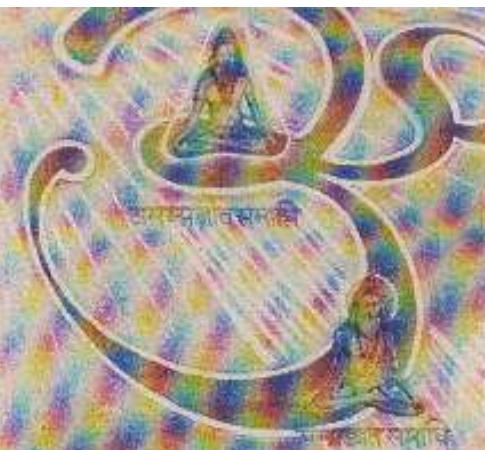
सोइङ-सोइङ रहने रहने से 'सोइङ' नहीं हो सकते, इसकी तो एक नियमित विधि है, एक तरीका है, जो हम प्रकार है - स्त्रांश के ऊपर तांबे की आचमनी से निरन्तर 'सोइङ' शब्द का उच्चारण करते हुए नहीं डालते रहें।

— “कितना जल प्रक्षेप करें?”

— “इककोप्स तोला जल प्रक्षेप करें, इककोप्स का अर्थ है— करीब दो सी ग्राम।”

उस जल को लेकर आप स्वयं नित्य पाये, स्मार होने ही, निरचित रूप से परिवर्तन स्वयं पड़ेगा ही इसको संग्रहन विधि कहते हैं। शिव और शक्ति का पूर्ण संग्रहित प्रसेपित जल अपने आप में पृष्ठतः जिसको ‘चन्द्रोदय जल’ भी स्वयं ग्रहण कर सकते कर सकता है, कर सकते हैं।

रोगमुक्ति



और अब आपका प्रश्न होगा, कि पानी से कैसे सम्बन्ध है?

— मैं भी आश्चर्यचित हूँ, कि एक छोटी

जलने की दैर्घ्य समाप्त हो जाएगा। अब आपको इस जल की चुप्पी में बैठकर आपको अपनी विद्या का अभियान करना चाहिए। आपको इस जल की चुप्पी में बैठकर आपको अपनी विद्या का अभियान करना चाहिए।

से कट नहीं च थी बीमा - सर तुम्हें क किया है रूप से तो ध्या-

सी गोली लेने वे सिर दर्द के समाप्त हो सकता है? गोली तो बहुत छोटी है, मगर उस गोली में पिर दर्द मिटाने की कुछ क्षमतायें हैं . . . और इव मन्त्र में भी कुछ दिव्य क्षमतायें हैं, जो हमेशा के लिए उस रोग को शोत कर सकती हैं। यह जल एक ऐसी दिन से ज्यादा लेने की जरूरत पड़ती ही नहीं है। सारे रोगों को दूर करने के लिये यह ट्राइम लिमिट दिया है, पहली लिमिट है – एक दिन, और लास्ट लिमिट है – एक सी बीम दिन।

ऐसा प्रयोग तीन बार करें, तीन बार प्रयोग इसलिए करें, क्योंकि युग व बालावरण के अनुसार प्रभाव होने की किया थी ही क्षमी हो सकती है, देसा आवश्यक नहीं है, क्योंकि अभी मैंने बताया, कि एक दिन में भी पूर्ण प्रभाव प्राप्त हो सकता है। बहने का तत्पर्य सिफ़ इतना ही है, कि जब आपको एहसास हो, कि आप पूर्ण रोगमुक्त हो चुके हैं, तब समझ लें, कि वह प्रयोग पूर्ण हो गया है और माला तथा तद्वाह को पवित्र जल में प्रवाहित कर दें। जो भी व्यक्ति किया योग में आगे बढ़ना चाहता है, उसे तो यह सब करना अनिवार्य होगा ही, चाहे आपको रोग हो या नहीं हो, मगर इस क्षेत्र में आगे बढ़ने के लिये यह अनिवार्य शर्त है, क्योंकि कोई शारीरिक रोग नहीं होगा, तो मालिक या आमिक रोग तो होगा ही, और उन रोगों को दूर करने के लिये इस जल की ध्यान करना जरूरी है।

किया योग की दृष्टिरूपी स्टेज है – किस प्रकार ये धारणा को ध्यान में 'कनवर्ट' किया जाय, क्योंकि ध्यान नशरी है . . . और रोग रहित जीवन प्राप्त करने के बाद ही ध्यान लग सकता है। यदि हाथ चोट गर्जन है, तो वह होगा और आप ध्यान लगाना चाहें, तो ऐसी स्थिति में ध्यान नहीं लग सकता। यदि आपकी पल्ली बीमार है, और आप ध्यान लगाना चाहें, तो नहीं लगा सकते। इसलिये इन सारे रोगों, इन सभी चिंताओं को मिटाने के लिए संग्रहीत प्रयोग जरूरी है।

जिस प्रकार कोई साधना करने से पहले स्नान करना जरूरी होता है, ठीक उसी प्रकार से किया योग में आगे बढ़ने वे पहले इस प्रयोग की करना जरूरी है। यह प्रयोग अपने-आप में इतना महत्वपूर्ण है, कि जीवन में आपको अन्य औषधियों की ऊबश्यकता पड़ ही नहीं सकती, साठ साल की उम्र में भी आप चालीस साल के दिखाई दे सकते हैं।

और इस प्रयोग को करता हुआ व्यक्ति अपने-आप ध्यान में चला जाता है, ध्यान का मतलब है, कि आदमी अपने-आप से बातें करने लग जाय . . . आदमी सब कुछ कर सकता है, मगर वह अपने-आप से बातें नहीं कर सकता . . . और जिसने

ज्ञाने आप से ब्रह्म करनी सीख ली, वह अपने आप में सिद्ध करनी होता है। जीव की पहिचान ही यह है, दो चीजें मिलने से ही दोष होता है, अपने आप से ब्रह्म करने की क्षमता को योग लाते हैं, ऐसे ज्ञाने-ज्ञान में ज्ञानन्वित हो रहा हूँ। कई बार मैं ज्ञाने-ज्ञान के जिसरे बैठता हूँ, और एक घटे भर तक बैठता रहता हूँ। मुझे कोई दूसरा होश नहीं रहता है... मैं तभीरों में एक शिखीकृदृष्ट देखता रहता हूँ। वह भी अपने-आप में एक ज्ञाने-ज्ञान में खो जाये वह 'ध्यान' है।

— कोई आपको सुई भी थमा दे और आपको एहसास नहीं हो, इसको ध्यान कहते हैं। मात्र आंखें बन्द करने के बजाए नहीं कहते। अपने-आप में पूरी लीन हो जाना, मुग्ध हो जाना ज्ञाने-ज्ञान में, अपने-आप को मिटा देन — यह जीवन की बहुन बड़ी उपलब्धि है, यह जीवन का बड़त बड़ा आनन्द है। उद्धिष्ठित हो जाय, तो किर जीवन में ओर चाहिए भी क्या?

हम इन तनावों से मुक्त हो सकते हैं, जिन्हीं भी चिन्तायें हैं, परेशानियाँ हैं, उन सबसे मूल हो सकते हैं। जब हम चिन्ता और परेशानियों से मुक्त हो सकेंगे, तो वृद्धावस्था का प्रकोप हम एक ही नहीं सकेगा, क्योंकि बुद्धपा आता है छिचारों के संक्रमण से, इसलिए हम ध्यान योग की पूरी प्रक्रिया, जो कि शोकराचाय ने पूर्ण की उसी को में समझा रहा है।

ध्यान

'ध्यान' शब्द बना है द्वार्ह अशरों से, 'प्रभु' और 'प्रेम' शब्द भी अशरों से ही बना है। 'ध्यान' का मतलब है — चेतना, ज्ञान, जाग्रति और 'न' का मतलब है — नहीं होना, निर्विकल्प, जर्थात् जिसको चेतना नहीं रहती, जिसके माझण्ड में तक और चितक नहीं रहते, जिसके माझण्ड में कुतक नहीं होते, जो किसी प्रकार का सीधा नहीं कर सकता, उसको ध्यानावस्थित कहते हैं।

ध्यान का मतलब है, कि सारी प्रतिकूल परिस्थितियों से कट जायें। हम सभय हम टेन्शन में हैं..., और हम चाहें या नहीं चाहें हम टेन्शन में रहते हो हैं, कोई हम टेन्शन में है, कि चौबीस तरीख को जाना है, मगर रिगर्वेशन तो हुआ ही नहीं.

सारा डिसाइ-किनाब माझण्ड में चलता ही रहता है। कोई तुम्हें कह नहीं सका है, कि तुम ऐसा सोचो, मगर थड़ अटिमैटिक किया है, दे किया हमारे जीवन के साथ है ही। व्यक्ति को सांसारिक रूप से यह सब करना पड़ता है, मगर इनसे यवि बड़ कट जाय, तो ध्यान है, और इसको जागेजी में कहते हैं — 'धौत्लैस माझण्ड'



जब माध्यम में कुछ विचार ही नहीं हों, उनको ध्यान कहते हैं, अर्थात् अपने आप में पृथक्खण्ड में निमग्न हो जाना। मैं सोचता हूं, कि वह तो अपने-आप में बहुत ही ऊँची प्रक्रिया है।

मानसिक तर्क-वितर्क, चिन्तनों ओर विचारों के माध्यम से ही व्यक्ति रोगी होता है, अवश्यक होता है, और मृत्यु को प्राप्त होता है, इसको हन जितने समय तक काट सके और जितने क्षण तक काट सके, उसको ध्यान कहते हैं, और ध्यान के लिये उपनिषद में एक बहुत सुन्दर व्याख्या की गयी है। उस व्याख्या का अर्थ है – “एक दिन रात में चौबीस घंटे होते हैं, तो व्यक्ति बीबीस घंटों में नित्य तीन घंटे ध्यान लगाये।” यहां तीन घंटे का मतलब है – जो हमारी आयु है, उसमें तीन घंटे और नुह गये, जोकि जब व्यक्ति सक्रिय होता है, तब वित्तित होता है, जिससे वह मृत्यु की ओर अप्रसर होता है, और ध्यान में व्यक्ति सक्रिय ही नहीं, तो जितने घंटे आपने जीवन में ध्यान लगाया, उतने ही घंटे आपके जीवन में नुहते गये। यदि हम नित्य आधा घंटे भी ध्यान लगायें, तो हम नित्य अपनी आयु में पांच घंटे जोड़ते हैं। इसका मतलब यह नहीं, कि हमारी मृत्यु होगी ही नहीं, मतलब यह है, कि हम मृत्यु को परे छोड़ सकते हैं।

जब निधिकेता प्रधन करता है यम से – ‘मैं आप से विमुख कैसे ही सकता हूं?’

यम उत्तर देते हुए कहते हैं –

“स: क्लिवः दक्षः सः मृत्योर्वै यस्म पूर्णः”

हम कुण्डलिनी के माध्यम से अमृतत्व को प्राप्त करते हैं। अमृत पैदा करने के लिये कोई विशेष तरकीब नहीं है। जितने क्षण तक हम ध्यान लगाते हैं, उतने ही क्षण तक अमृत-वस्त्र होती रहती है, वह अमृत ही अपने-आप में मृत्यु को पीछे हटाता रहता है।

निधिकेता ने पूछा – ‘मैं कितना ध्यान लगाऊ, जिसके माध्यम से मैं अमृत्यु को प्राप्त कर सकूँ?’

– ‘हम जीवन में चौबीस मिनट तक ध्यान लगाकर पूर्ण एक वर्ष आयु को बढ़ा सकते हैं।’

यह ध्यान की प्रक्रिया है, चौबीस मिनट तक ध्यान, प्रारम्भिक स्टेज में एक महीने के पूरा करता है, मध्यम स्टेज पर छ. महीने बढ़ा सकता है, पूर्ण स्टेज में पूरे एक साल की आयु

जीवन का है। जब उस प्रश्न को प्राप्त किसे करें, जो कि आपके लिए
उसे प्रत्येक व्यापक के लिए जरूरी है, जिसमें कि हम ध्यानावस्था में
जीवन करें।

— ध्यान से ध्यान अवस्था में कैसे जायें, किस
समझ के जायें?

उच्च शीक्षण विद्यालय मृत्यु शायदा पर पढ़े थे, तब उन्होंने
लगात ले कर — “कृष्ण! मेरी मृत्यु नहीं हो सकती, क्योंकि मैं
क्रिया द्वारा माध्यम से अमृतत्व को प्राप्त कर सकता हूं, अले
जहाँ जाइंगा, तभी मृत्यु प्राप्त होगी। इच्छा मृत्यु की साधना
में बहुत कुका हूं।”

इच्छा मृत्यु का अर्थ है, जब हम चाहें तब मृत्यु आये।
जब उस जिन्दगी भर नहीं चाहे, तो जिन्दगी भर मृत्यु नहीं
जायेगी, और मृत्यु नहीं आने का मतलब है — “पूर्ण सिद्धांश्रम
प्राप्ति” क्रिया द्वारा की पूर्णता द्वारा ही सिद्धांश्रम में प्रवेश प्राप्त
होता है।

ध्यान की प्रारम्भिक स्टेप धारणा है, और धारणा का
नाम्बर में बताया — गुरु को अपने आज्ञा चक्र में स्थापित
करना, और धारणा के माध्यम से ही ध्यान उत्तरशा में जा
नकरे हैं। केन धर्म में यह ‘विषयना’ साधना है, इसके बारे में
जब उस अखबार में बहुत पढ़ होगा, अभी कुछ साल पहले
बहुत प्रत्यार हुआ था, नैकड़ों डिविर लगाये गये, विषयना
साधना के . . . इसके माध्यम से भी ध्यान लग सकता है,
करन्तु यह बहुत लम्बी त्रिक्रिया है।

— “विषयना का मतलब क्या है?”

— “एक मुँह देखने का गीरा है, यदि हम उसमें मुँह
देखें, तो चेहरा एकदम साफ़-साफ़ विश्वार्द्ध देश, परन्तु यदि
उसके ऊपर धूल लग जाय, तो हम चेहरा साफ़ नहीं देख
सकते। जब चेहरा साफ़ नहीं विश्वार्द्ध देता, तब हम रूमाल से
उस कांच को पोछ लेते हैं, और अपना चेहरा देख लेते हैं —
इसी प्रकार मन के दर्पण को साफ़ करने की क्रिया को विषयना
कहते हैं।”

इमारा मन एक कांच की तरह है, जिसमें हमारा
वास्तविक रचनात्मक प्रतिक्रियित होता है, और मन-दर्पण के
ऊपर दिनभर में कई बार धूल लगती है। शूठ, छल, कपट,
असत्य, व्यभिचार, गन्दी आदि, बुरी दृष्टि — इन सबकी परत
मन के दर्पण को धुधला कर देती है। विषयना साधना का अर्थ
है — रोज़ शाम की आप बैठकर उसे पोछ दें, देखें और एहसास

करें, कि आज दिन भर मैंने क्या गलतियों की। अपनी गलतियों का चिन्तन करें, और ऐसा चिन्तन करने का मतलब है – शीशा पौछना। इस प्रकार से हमारी गलतियों की संख्या घटती जायेगी। फिर बाब मैं आप ज्यों ही गलती करेंगे, तो आपका इवाय कहेगा, कि नहीं यह गलती है, यह नहीं करना चाहिये मुझे... और जब आपकी ऐसी आदत हो जायेगी, तब शीशे पर झूल पड़नी भी नहीं। इस प्रकार से नित्य शीशे को साफ करने की क्रिया को विपश्यना करने हैं, और जब तक आपके पास दृढ़, छल, कपट हैं, तब तक आपका ध्यान नहीं लग सकता। यह ध्यान की जैन पद्धति है, नियमों की विपश्यना साधना कहते हैं।

यह भी एक तरीका है, मगर यह तरीका कठिन जब लम्बा है। इसमें तो दस साल लग सकते हैं, क्योंकि हम रोज जाप करते रहेंगे। यह कहने मात्र से क्या होगा, शीशा ही तो साफ करना है, तो कर लेंगे... वर इससे कुछ नहीं डेंगा। होना तो यह चाहिये, कि आप दृढ़ संकल्प करें – नहीं! अब बापिस ऐसा नहीं करना है।

सही तरीका यही है, कि हम धारणा के साथ ही ध्यान प्रक्रिया में जायें। ध्यान के माध्यम से जब गुरु स्थापित हो जाते हैं, तब हम नित्य आधा धंटा गुरु कार्य में लग दें – नियमों गुरु सेवा कहते हैं। चौबीस घण्टे में साथै तेहस घटे, आपको जो कुछ करना है, करते रहिये। मगर आधा धंटा आप जहर उन कार्य में दीजिये, जो कार्य गुरु का हो। उनके पास आने की जरूरत नहीं, उनके पैर दबाने की भी जरूरत नहीं, किन्तु यदि उनका कोई मिशन है, कोइ लक्ष्य है, उसमें सहयोग दे – इसको गुरु सेवा कहते हैं। साधना, स्नान करने के बाद की जाती है, और साधना विस्तर पर बैठे-बैठे भी को जा सकती है।

गुरु आपके आज्ञा चक्र में होंगे, तभी तो आपको एहत्यास होगा, कि वे जो कुछ कहें, सुन लेना चाहिए, समझ लेना चाहिए – ये सब धारणा का बेस है। अब उसमें पूर्णता देने के लिये ‘समर्पण’ क्रिया होना चाहिये, और समर्पण क्रिया होनी है नित्य उस गुरु पूजन के माध्यम से, जिसे आप स्नान करके कर सके या बिना स्नान किये भी कर सकते हैं, साथ ही नित्य योगा बहुत गुरु का कार्य करने की क्रिया भी – ये सभी कुछ अपने आप में समर्पण करने की क्रिया हैं।

यह सब कहने का तात्पर्य यह है, कि यदि आप चाहें, तो कल से भी ध्यान प्रक्रिया में जा सकते हैं। सेवा, और सेवा के बाद समर्पण, फिर धारणा, फिर गुजरण, और इस गुजरण के बाद में ध्यान की स्थिति में आ सकते हैं।

धारणा का अधार मिलने के बाद में शंकर कार्य जो कहते हैं – गुजरण क्रिया के माध्यम से ध्यान लग जाता है। गुजरण का मतलब है – अपने आप में इन शरीर को समीतयुक्त बना देना, चार्ज कर देना, चिनानी का प्रवाह पैदा कर देना। जब शरीर में चिनानी का प्रवाह पैदा होगा, तब मन और मस्तिष्क अपने आप में पूर्ण सक्रिय होते हुए एक ही बिन्दु पर केन्द्रित हो जायेंगे और वह केन्द्र बिन्दु है लेवल आपका गुरुत्व, जिसको हमने आज्ञा चक्र कहा है।

जीवन की बहुत उच्च स्थिति है, यदि उन लग जाय। पास में ढोल बजे और आपको पता नहीं चले, तो ऐसी अवस्था में पहुंचने की क्रिया को ध्यान कहते हैं..., अपने आप में लोन हो जाने की क्रिया को ध्यान कहते हैं, और चौबीस मिनट ध्यान का मतलब है, पूरे एक साल की आनु वृद्धि होना, क्योंकि मृत्यु से अनृत्यु की ओर जाने के लिये यही एक प्रैक्टिकल क्रिया है। मैं आपको क्रिया योग समझा रहा हूं, कि कैसे नृत्य से अमृत्यु की ओर जायें?

ध्यान की दो अवस्थाएँ हैं – पहली अवस्था है – अलिस और दूसरी अवस्था है – गुजरण।

अनियं का मतलब है — हम बाहरी वातावरण से कट कर बैठें। यदि हो हल्ला हो रहा है, तो आप छल पर जाकर बैठ जायें,

जल्दी ही जानि नहीं पिलेगा, इसलिए ध्यान के निये सबसे ऊच्छा समय बताया गया है, सुबह चांच से छु के बौच का।

जो भी हमारे सामनों में धर्म, अर्थ, काम और सोश को पूरे चैबोस घंटों में बोधा है —

सुबह उठते ही धर्म — “धारयति सः धर्मः”, जिसको हम धारणा करते हैं, वह धर्म है हमारा।

अर्थ — जगन्नी दृक्षान पर या नीकरी पर जाना।

काम — रात्रि की कामवासना में प्रवृत्त होना।

माल — सुबह उठकर धिन्दन करना, कि इन सबसे में निर्नित हूँ, यह मोक्ष की किया है।

विलक्षण शुद्ध-सात्त्विक वातावरण में गुबह आप छत पर बैठ जायें, पाली धोली पड़िनी हुई हों, और उत्तर की ओर नुह

निर्नियं बैठें। निर्लिपि का मतलब है, किमी से आप कैनैक्टेड नहीं हैं उस समय।

— “उत्तर की ओर ही क्यों?”

— क्योंकि उत्तर की ओर ही हमारा हिमान्य है। उत्तर की ओर ही हमारे कष्ट-मुखि, समस्त नियंत्रों का उदगम स्थल है, जो इन्द्रियों भी उत्तर की ओर ही है, इसलिए उत्तर दिशा सभी साधकों के निये एक श्रेष्ठतम् दिशा है।

उसके बाय दूसरी अवस्था जाती है — गुंजरण की। गुंजरण किया का मतलब है, कि हम अन्दर अपने शरीर में, कण-कण व गुंजरण प्रारम्भ करें। गुंजरण से विद्युत प्रवाह पैदा होता, तपस्या का प्रभाव पैदा होता। सोउड के गुंजरण से लेखा सम्बद्ध है, और सोउड की ध्वनि न केवल उठारण लाता अपितु “उदान शंख” के माध्यम से भी प्राप्त हो सकती है। शंख की ध्वनि और सोउड की ध्वनि एक समान होती है, इसलिये सबसे पहले उदान शंख को बजाइये। जब यह गुंजरण किया बाहर शंख के माध्यम से होता, तो वह बाहरी क्रमण अन्दर प्रविष्ट होता — यह बाहरी गुंजरण केवल उदान शंख के माध्यम से ही प्राप्त हो सकता है, और इसके लिये कोई दूसरा तरीका है वही नहीं। उपनिषद् ने बताया है, कि छु बार शंख के गुंजरण किया जाना चाहिये। किनने समझ तक किया जाय? जिन्हे भन्य तक आपका श्वरोंपर नियंत्रण है। उसके बाद शंख लो अपसे सामने रख दे और आन्तरिक गुंजरण प्रारम्भ करें।

— और अन्दर गुंजरण प्रारम्भ होगा सोउड के माध्यम से, और इन आन्तरिक गुंजरण में होटों को नहीं खोलना है। आन्तरिक रूप से स्वन करना है, यह गुंजरण रेणों को समाप्त करना हुआ मूण् समाप्ति अवस्था में जने को किया होता है। यह आन्तरिक गुंजरण भी आप छु बार करें, और धूरे-धूरे आप देलेंगे, कि अनवरत रूप से स्वतः सोउड की ध्वनि हो रही है..., और आपको अपनी चेतना का जान ही नहीं — यिन्होंने दुले निश्चल बैठे रहने की किया को ध्यान कहते हैं।

अब यहां पर एक प्रश्न पैदा होता है, कि उग्र ध्यान लग गया और बापिस बैठे - दो धंटे तक चेतना आई ही नहीं, तो क्या करें? इस गुंजरण किया के माध्यम से जो ध्यान लगता है, वह चौबीस मिनट से ज्यदा लग नहीं सकता, वह तो समाप्ति अवस्था होती है जब बैठे, दो धंटे, दस धंटे तक ध्यान लगते हैं।

आप गुंजरण करके बैठें, तो पायेंगे कि पूरा दिन आपका अत्यन्त आनन्द और मस्तों के साथ बहती होगा, कोई तनाव

ही नहीं रहेगा। कोई प्रौढ़नम आयेगी ही नहीं, आपका दिमाग इतना स्वस्थ रहेगा कि आप तुरन्त निर्णय लेने में सक्षम होंगे। सामने वाला प्रश्न करेगा और आप तुरन्त समझ जायेगे कि क्या प्रश्न किया है, और क्या जवाब देना है। माइण्ड अपने-आप में पूरा शिलेक्षण हो जायेगा चौबास मिनट में—यह बहुत बड़ी बात होती है। आपके बेहोर पर एक ओज, एक चमक होगी, आप ज्योंही बात करेंगे, तो सामने वाले पर एक प्रभाव पहुंचा—‘कोई बात नहीं है, इसमें कुछ क्षमता है।’ वह आपकी बात के लिये मना नहीं कर सकता, और यह तेज इस ध्यान के माध्यम से ही आ सकता है, यह बहुत बड़ी उपलब्धि है, रोगों को मिटाने में और शरीर को पूर्णता देने में... यह थॉटलैस माइण्ड बनाने की सीधी क्रिया है।

मैंने संक्षेप में धारणा और ध्यान की प्रक्रिया समझाई, और इस ध्यान की प्रक्रिया का अभ्यास निरन्तर होना चाहिये। नित्य करें, बीच में रोक नहीं, और यही भी कोई जरूरी नहीं, कि आप चौबास मिनट तक ही करें। चाहे पांच मिनट, वह मिनट, पन्द्रह मिनट तक ही करें, पर करें अवश्य। केवल एन्ड्रह बीस दिन के अभ्यास के बाद में निरन्तर इस गुणरण से प्राप्त आनन्द को आप एहसास करेंगे, और जब अभ्यास हो जायेगा तब खाले-पाते, उठने-बैठने निरन्तर गुणरण होता रहेगा, और यह गुणरण ही अपने-आप में ब्रह्मात्म से साश्रात्कार की पहली सीधी है।

और इसकी अनिम नीही है—‘समाधि’, जिसको कित्या योग की उच्चतम अवस्था कहते हैं। मह सारा ही क्रियात्मक पक्ष है, परन्तु उसकी निरन्तर चिन्तन प्रक्रिया के लिये उपकरण तो जरूरी है ही—धोती जरूरी है, उत्तर शंख जरूरी है, एक मुखी रुद्राक्ष जरूरी है। ये कितने जरूरी हैं इस बात का आप प्रयोग करके देखें—“आप आंच लगा दें और यदि उसके पास मैं बैठूं, तो जरूर आपको उसी गर्भी लगेगी, उस आंच के और अपने बीच में आप शंख रखकर बैठ जायें, तो आपको एहसास होने लग जायेगा, कि मन जो बाहरी वातावरण से काटने में शंख पूर्ण उपयोगी है।

प्रत्येक साधक को जो भी इस स्टेन पर जाना चाहता है, उसके लिए सोऽहं मंव उच्चारण शंख ध्वनि के साथ अनिवार्य है ही, ज्योंकि उस बातावरण में पहुंचकर संसार से कटना जरूरी है। आप एक बालटी में पानी भर दीजिये जिसमें जीवाणु हों, मच्छर भरे हों, और उस पानी के सामने पांच-छँ बार शंख बजाइये और फिर उनको

जीवन कीर्ति, उसके पचास प्रतिशत जीवाणु समाप्त हो जायेगे। ये तो साइन्स का जगाना है, साइन्स के विषय में देखिये आप।

ज्योही जलने क्रियायोग पूर्ण किया, त्योही सिद्धाश्रम की ओर पहला बाह्य बढ़ाया। उसके बाद तो गुरु की उंगली के सहारे सिद्धाश्रम में बहुचरण है, जहाँ सिद्धाश्रम, जिसको अपने आप में पूर्णत्व का प्रतीक कहा गया है। जब जलने सामन जारीर प्राप्त किया है, तो इस शरीर में आप वहाँ जाकर उसमें लोकों के हमारे जीवन की विधि उपर्योगिता है। जो हमारे जीवन का सामन्द है, हमारे जीवन की पूर्णता है।

क्रिया योग दीक्षा

न्यूनं पूर्णत्वं प्राप्नो ति,
दीक्षा इति च यद् भवेत् ।
स भवेत् पूर्ण मारोहवं,
सिद्धिर्भवति कर्मजा ॥

अर्थात् “संसार की दुर्लभ और अत्यन्त कठिन
प्रक्रिया को दीक्षा कहा जाता है, जो कि जीवन की पूर्णता
का एक प्रतीक है, मानव की न्यूनता को पूर्णता में
वर्णवर्तित करने की क्रिया है, उसे सिद्धाश्रम
देखा कहते हैं।”

इस श्लोक के अनुसार — पूर्वजों के पुण्य
ओर स्वयं के जीवन के पुण्यों के उदय से ही ऐसे
उत्तमर, ऐसी स्थितियों उत्पन्न होती हैं, जिनके
माध्यम से हम इस दीक्षा को प्राप्त कर सकते हैं,
और इसी के द्वारा पूर्णता और सफलता प्राप्त कर सकते
हैं।

इसलिये सिद्धाश्रम की यह दीक्षा दुर्लभ तो है ही,
महत्वपूर्ण भी है। इसर सिद्धाश्रम दीक्षा का महन्त्र इसलिये
है, क्योंकि क्रिया योग का समाप्त सिद्धाश्रम में प्रवेश
द्वारा होता है।

यह दीक्षा गुरु वेते है, जिससे
कि जीवन में जलवी से जलवी
धारणा का, ध्यान का और

समाधि का समर्गम हो सके। जीवन में विन्तन बन सके — और जो कुछ शिष्य अपने प्रयत्नों से प्राप्त नहीं कर सका हो, उसको भी वह प्राप्त कर सके।

शिष्य अपने आप में अपूर्ण होता है, अपूर्ण इसलिये, कि उसके जीवन के रास्ते उलझे हुए होते हैं। स्पष्ट रास्ते उसके पास नहीं होते, उसे यह जान नहीं होता, कि मुझे किस रास्ते पर चलना है और कहाँ तक चलना है। यदि शुरू उस को रास्ते पर खड़ा भी कर लेने हैं, तो भी उसको जान नहीं होता, कि उस रास्ते पर कितना चलना है, इसलिये उसके सामने एक व्यामोह सा बना रहता है, परन्तु गुरु के सम्में सब कुछ स्पष्ट होता है, वे नानते हैं, कि वह शिष्य की मिलिल है, वह बड़ा से चला है, किन्तु शिष्य की असमर्पिता के कारण उसकी धारणा में मजबूती नहीं आ पाती, वह दृढ़ता नहीं आ पाती, जिसमें एकदम से धारणा को आहमसात कर सके, ध्यान कर सके या समाधि में जा सके, वह किया योग में वशता प्राप्त कर सके।

— फिर भी मैंने इस प्रवचन में उन रिक्तियों को समझाने की कोशिश की है, जिन स्थितियों के माध्यम से आप ध्यान की, धारणा को समझ सकते हैं।

यह दीक्षा शुरू अपने शिष्य को तब देते हैं, जब उसको सेवा और समर्पण को अपने-आप में पूर्णतः रचा पचा लेते हैं, जब युक्त एहसास कर लेते हैं, कि अब इसकी सेवा में और समर्पण में किसी प्रकार की न्यूनता नहीं है। शुरू उसकी परीक्षा लेते हैं, उस सेवा की भी, उस समर्पण की भी, और जब एहसास कर लेते हैं, कि कोई भी विषम अवस्था अब शिष्य को इस मार्ग से हटा नहीं सकती, तो यह दीक्षा प्रदान करते हैं।

भगवन् कृष्ण सांदेशन के आश्रम में रहते हुए जंगल से लकड़ियां काट कर लाते, खाना बनाते और गये चराकर लाते, तब तक उन्होंने ये कार्य किये, जब तक उनकी शिक्षा पूरी नहीं हुई, यह तो सेवा का एक रूप है। यद्यपि वे पूर्ण योग्यवर थे, कृष्ण थे, जन्म के समय भी ईश्वर के पूर्ण अंश थे, परन्तु फिर भा उन्हें सेवा और समर्पण को मात्रसात करना ही पड़ा। नब कृष्ण पैदा हुए, गो पूतना को मार करके उन्होंने यह सिद्ध कर पाया, कि वे अपने-आप में ही सर्वशक्तिमान, समर्थवान् युग पुराण हैं। उनको सार्वात्मक आश्रम के इतना सब कुछ करने की जरूरत नहीं है।

— जिसको 'सेवा' कहा

बनता है, जिसको 'चिन्तन' कहा जाता है।

— और सदीमन ने कहा, कि तुमको लकड़ियां काटकर लानी हैं, जिससे कि भी जन बन सके, और तुम्हें यहाना बन ना है, जिससे कि मूँह दिखाए रखना खा सके, तुम्हें गाथ चशाने जाना है, वाहे अरसात हो, 'चाड़ सर्दी हो या गर्मी हो'। उन्होंने ऐसा किया जैसे इसनिको के पूर्ण जन को प्राप्त कर सके, और जब वे उस क्रिया योग की अन्तिम स्तर पर चल गए थे, तब उनका और गुरु का एक सुन्दर वानरियाप महाभारत में आता है। वेदव्यास ने बड़े ही सुन्दर ढंग से उस वानरियाप को स्पष्ट किया है। इस प्रसंग पर मैं उन दोनों चिन्तनों की आपके समझ रख रहा हूँ —

कृष्ण कह रहे हैं — 'विनाश स्वयं प्रविष्टं गुरुदेव तुभ्यं'

— गुरुदेव मैंने आपके साम्राध्य में बैठकर इन मंत्र-तंत्र-यंत्र, योग, मीमांसा, राजनीति और शिक्षा को प्राप्त किया है। जानने मुझे कुण्डलिनी जागरण किया दी, आपने मुझे क्रिया योग की दीक्षा दी, आपने मुझे धारणा, ध्यान और समाधि की जड़स्थाओं पर पहुँचाया... किर भी मैं रिक्तता अनुभव कर रहा हूँ, ऐसा लग रहा है, कि मेरा सारा शरीर पात्र तो बना हुआ है, जरन्तु वह खाली है... और इस खाली पात्र में आप कुछ ऐसा प्रवान करें, जिससे कि मैं अपने-आप में पूर्णता प्राप्त कर सकूँ, और ऐसी पूर्णता के बल आपके अनुग्रह से ही प्राप्त हो सकती है, जिससे कि मैं सिद्धाश्रम साधना को अपने-आप में समाहित करने हूँ, उस दीक्षा को अपने-आप में पूर्णतः प्राप्त करते हुए उस लोक में पहुँच सकूँ, जिसको शिद्धाश्रम कहते हैं।"

सार्वापन ने कहा —

मम पुत्र स्वरं शिष्यं वदेयं उत्तम स्वरूपं श्रीकृष्ण रूपं ।

सिद्धाल्मर दिल्ल्य मदेयं पूर्णं आश्रेष्वदि वदितं सः दीक्षा रोपी ॥

“ मैं तुम्हें जरूर सिद्धाश्रम दीक्षा दूँगा, इसलिये कि तुम मेरे आत्मस्वरूप रहे हो, मेरे प्राप्त स्वरूप रहे हो, मेरे अन्यलूट छिप रहे हो, कोई और तुम्हें यह दीक्षा नहीं दे सकता, यह भी मैं जानता हूँ। तुम्हारे इस खाली पात्र को मैं भर सकता हूँ, क्योंकि मुझमें सामर्थ्य है... और जब मैं इस खाली पात्र को भरंगा, तब तुम जरूर पूर्णता प्राप्त कर सकोगे। ”

— यदि इन्होंने सेवा और स्मरण के बाद गुरु उस तथ्य को देते हैं, तब भी वास्तव में गुरु की नहानता है। उसी सिद्धाश्रम की दीक्षा को जब आप प्राप्त करेंगे, तो उहसाल होगा कि जरूर आपकी कई पीढ़ियों का पुण्य उदय होकर, पूजीभूत होकर आपके सामने उपस्थित हुआ होगा, जिसकी बजह से आप इन्होंने महान और उच्चकोटि की दीक्षा प्राप्त कर सकें।

यह सिद्धाश्रम दीक्षा दो चरणों में दी जाती है। एक इसका पूर्वार्द्ध चिन्तन होता है, और एक इसका उत्तरार्द्ध चिन्तन होता है। दोनों ही रूपों में मिलकर यह दीक्षा अपने-आप में पूर्णता प्रवान करती है। नहां इसका पूर्वार्द्ध चिन्तन आवश्यक होता है, वही इसका उत्तरार्द्ध चिन्तन भी आवश्यक है। गुरु पहले इसकी पूर्वार्द्ध दीक्षा देते हैं, और पूर्वार्द्ध दीक्षा देने के बाद वे शिष्य के चिन्तन की महसूस करते हैं। पहले अनुभव करते हैं, कि शिष्य के चिन्तन और मनन को अनुभव करने के बाद यह पहसुल करते हैं, कि उत्तरार्द्ध



दीक्षा देने का
समय आ गया है,
कि नहीं।

इन दोनों
दीक्षाओं के बीच में शिष्य की
कितनी पुष्ट भावना है, अपने आप
में कितना सामर्थ्य है, उसको गुरु
परखते हैं।

पूर्वार्द्ध के द्वारा पूर्ण रूप में शिष्य
को सामर्थ्यवान बनाया जाता है।

उत्तरार्द्ध में धारणा, और ध्यान और समाधि को पूर्ण रूप से
शिष्य के पूरे शरीर में नमायेजित किया जाता है, इसलिये उत्तरार्द्ध और अधिक महत्वपूर्ण होता है। पूर्वार्द्ध में जहाँ उसका घट
तैयार होता है जान लेने के लिये, वहाँ उत्तरार्द्ध में उस घट को पूरा भर दिया जाता है।

— कृष्ण देखा समझ रहे थे, कि मैंने पूरा पात्र खाली है, इतना सब कुछ आपने दिया, किर भी मैं खालीपन महसूस कर रहा
हूँ।

— यह खालीपन का एहसास उस स्थिति का घोतक है, जहाँ आपने आप में एक गुरु के प्रति पूर्ण चिन्तन और मनन होता
है, उनके प्रति पूर्ण समर्पण और साधना होती है।

जैसा कि मैंने बताया, यह पूर्वार्द्ध अपने आप में अपने पूरे शरीर को पात्र बनाकर उस पूर्ण ज्ञान को भरने की क्रिया का
आशार है।

सुपात्र बनना बहुत कठिन है, क्योंकि यह शरीर छल, द्युष्ट और कपट से भरा हुआ है, और इसको खाली करना बहुत
कठिन क्रिया है, इसलिये इस महत्वपूर्ण चिन्तन हेतु आप तैयार हों, यह बहुत आवश्यक है।

सिद्धाश्रम माध्यम में इस शरीर को पूर्ण वायवीय (हल्का) बनाने की क्रिया प्राप्त होती है, जिसके माध्यम से व्यक्ति अपने
सृष्टि भन को सिद्धाश्रम में ले जा सके या वायवीय दृष्टि से अथवा वायु के द्वारा अपने शरीर को सिद्धाश्रम ले जाने का सामर्थ्य प्राप्त
कर सके, इसलिये पूर्वार्द्ध में यजोवित संस्कार और समस्त देवी देवताओं की स्थापना शरीर में करने के बाद ही उसको सिद्धाश्रम
साधना ही जाती है, और तत्पश्चात ही उसको उत्तरार्द्ध दीक्षा ही जाती है।

पूर्ण पूर्णविवरकर सचतं ज्ञानं च विद्याम् वर्
वरातं वै परमं परेश परितं किवावोज मे वाचतं ।
सिद्धं स सवितं सहेव परितं सुजन्मितं वीर्यतं,
व्यामोहं करतं परेश परितं सिद्धाश्रमो वै तमः ॥

यह एक ऐसी दीक्षा है, जिसकी प्रतीक्षा देवता और मानव, ऋषि और गन्धर्व सभी अपने जीवन में करते रहते हैं, बड़ा ही

विशिष्ट दीक्षा के होता है वह विशिष्ट दीक्षा प्राप्त होती है, जिसको किया योग दीक्षा एवं जिसको प्रारम्भिक सिद्धांशु दीक्षा भी कहा जाता है।

वह दीक्षा प्राप्त हो और व्यक्ति अपने उच्चर्वगामी प्रवृत्तियों से, ऊपर उठने वाली प्रवृत्तियों के माध्यम से चम्पूर्ण देश और विश्व का नेतृत्व करते हुए, उनके मार्गदर्शन करते हुए, अपने पूर्वजों के पुण्यों को काल के भाल पर लिखकर पूरे विश्व को बताते हुए, उस परा को प्राप्त करे, जो यश भवस्तु पूर्वजों के मूरख को चमका देता था — वही सबसे बड़ा सीधार है। ऐसे ही यश के आप आजीवन बन पाये, तभी भाष्का मानव जीवन नफल है।

मैंने पिछले पूर्वों में किया योग जैसे अन्यन्त बटिल और संवेदनशील विश्व को नितनी भी सरलता द्वारा नियन्त्रण की कोशिश करनी चाहिये थी, वह मैंने की... जिसके अंतर्गत मैंने समझाया, कि

जीवन की यह प्रवृत्तियां हैं — उच्चर्वगामी प्रवृत्तियां और अचर्वगामी प्रवृत्तियां।

नाभि के नीचे की जितनी भी प्रवृत्तियां हैं, उनके माध्यम से माया का नियन्त्रण होता है, पूर्व होते हैं, पौत्र होते हैं, पत्नी, बन्धु बान्धव इन सबका अन्वन्ध नाभि से नीचे की प्रवृत्तियों के संचालन से है। नाभि के ऊपर जिसने भी चक्र है, जितनी भी प्रवृत्तियां हैं, उन प्रवृत्तियों को जायत बनाया, उत्तेजित करना, उन प्रवृत्तियों को ऊपर उठाना मानव जीवन का अन्वय है, उच्चर्वगामी प्रवृत्तियां जीवन की पूर्णता की प्रतीक हैं।

नाभि के नीचे की प्रवृत्तियां मृत्यु की ओर अग्रसर होती हैं, और नाभि से ऊपर की प्रवृत्तियां अमृत्यु की ओर अग्रसर करती हैं।

नाभि के नीचे की प्रवृत्तियां आलोचना, अपवाश, निन्दा, पश्चाना, मोह, व्यामोह इन बाधाओं और विश्वासनाड़ों को यन्म देती हैं, और उच्चर्वगामी प्रवृत्तियां जीवन में पूर्णता देती हैं, भूख देती है, संतोष देती है तथा जीवन के उस आयान को स्पर्श करने की क्रिया करती है, जिसको गुंजरण कहा जाता है।

जिस प्रबार से एक पुष्प को लेवकर भगवन ब्रह्मवर गुंजायमान होता रहता है, जिस उकार से नमुद्र की ओर जाती हुई नविनों ब्रह्मवर कलकल अवर का गुंजरण करती हुई बढ़ती हो जाती है, ठीक उसी प्रकार से व्यक्ति उन उच्चर्वगामी प्रवृत्तियों का गुंजरण करते हुए उस सिद्धांशु की ओर अग्रसर होता है, जो कि जीवन की पूर्णता है।

— पूज्यपाद

सकगुरुदेव डॉ. नारायण

दत्त श्रीमाली जी

विद्या वुड वार्क

सिंहिप्रदात्री

भगवती वाणी श्वरी सरस्वती

ब्रह्माण्ड का समस्त ज्ञान, विज्ञान, विद्या, कला, बुद्धि, गोथा, धारणा, तक शक्ति की अधिष्ठात्री शक्ति वाणी रूप में भगवती सरस्वती है। शब्द को ब्रह्म कहा गया है, शब्द में ही सभी कुछ समाहित है इसीलिए वागदेवी ज्ञानात्मिका शक्ति भगवती शारदा ब्रह्म स्वरूपणी ही है। सरस्वती का उपासक होना नर से नारायण की क्रिया है।

सम्पूर्ण विश्व का देनिक कार्य व्यापार वाणी के व्यवहार पर ही आधारित है। विश्व की विभिन्न भाषाएं पशु पक्षियों की बाजी, सांकेतिक लिपि, संकेत जिन्ह नूल रूप से भगवती सरस्वती शारदा की अदर्नेश कृपा से चल रहे हैं इसीलिए भरस्करती की साधना विश्व के प्रत्येक भाग में अन्दिकाल से चली आ रही है।

सरस्वती विद्या का रखरूप, विश्व व्यापार सेवालन, वार्ता विद्या, व्रश्यास्क विद्या, न्याय शारदा और दण्ड नीति विद्या, ज्योतिष कर्मकाण्ड वैचारिक शक्ति, स्मरण शास्त्र में निहित है। ज्ञाननय जीवन मनुष्य का जीवन है और अज्ञानमय जीवन पशु

का जीवन है। मनुष्य के जीवन में जारस्वती विद्यमान रहती है, उसे अपनी अधिष्ठात्री बनाकर अपने जीवन के पशुत्व को सम स कर सकता है। क्रोध, मद, लोभ, जीवन में पशुत्व के प्रतीक हैं और ज्ञान लगी सरस्वती जीवन में इन दुरुणों को दूर कर त्रिष्ण विचारों से आभूषित करती है। मनुष्य के जीवन में बाधाएं, विचारों की मलिनता और निर्णय लेने की अशमता वार्ता में अगुच्छ के कारण ही आती है। विपरीत परिस्थितियों का निर्माण भी इन्हीं दोषों के कारण से उत्पन्न होता है, जो व्यक्ति अपनी बुद्धि का स्थिर रख नहीं रूप से विचार शक्ति को नाशित करते हैं, वे ही पूर्ण सफल होते हैं।

सरस्वती सदृशता का प्रादुर्भाव

इन्द्र जल द्वारा निर्मित स्वर पाठ यहि
विहा के रूप में भगवती सरस्वती ब्रह्मा के मुख
में लिखी गई है।

अबोदिन वेद युधा सरस्वती
किंवद्दत्तजस्त्र सती समृद्धि हृषि।
स्वस्त्रक्षमा प्रादुरभूत किलस्त्रतः
मे कृष्णासृष्टः प्रसीदताम् ॥

(श्रीमद्भागवत २-४-२२)

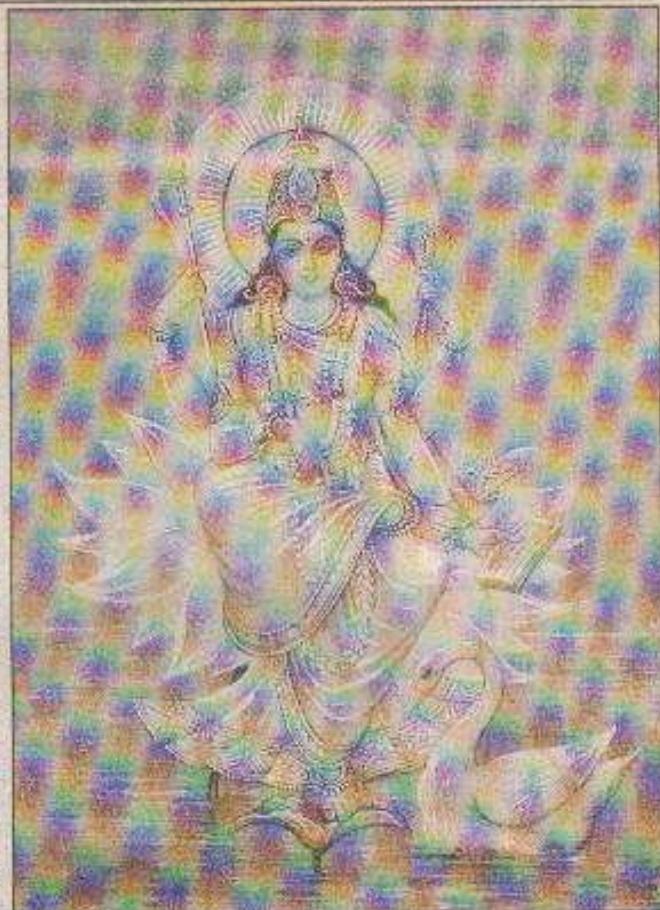
जिन्होंने सृष्टि के समग्र ब्रह्मा के हृत्य में
सरस्वती को सृष्टि नागरित अस्त्र के लिये शाधिष्ठात्री
के रूप में उत्तम किया और वे आपने उंगी के रुदित वेद के
उनके मुख से प्रकट हुई, वे ज्ञान के मूल कारण
सरस्वती मृद्द पर कृपा करे, मेरे हृत्य में प्रकट हो।

कम्बेद, यजुर्वेद, मायवेद, अथर्ववेद ब्रह्मा
के हृत्य में उच्चारित हुए जो भारतीय ज्ञान विज्ञान
का आधार कहे जाते हैं। वे इष्ट भगवती सरस्वती
के रूप में ही पूरे ब्रह्माण्ड में व्याप्त हुए। वेद विज्ञान
मनुष्य नीतिको अधार शक्ति प्रदान करता है। जिसने
ज्ञान जीवन में देवों को अपना लिया वह सरस्वती
का अपने भीतर स्थापित कर लेता है और जीवन में
कभी भी दुख से युक्त नहीं रह सकता। इसीलिए
सरस्वती सरस्वती को भारती, ब्राह्मी, गीर्वेदी,
उग्नेदी, वाणी, भाषा, शारदा, व्रथी, मूर्ति आदि नामों
में जाना जाता है।

सरस्वती का स्थान

प्रकट रूप में भगवती सरस्वती मनुष्य के शरीर में
जिहा और कठ में निवास करती है और जिहा वाणी और
व्याद दोनों वा ही स्वरूप है, अब और रस दोनों ही जिहा के
माध्यम से प्रकट होते हैं लेकिन मूल रूप से भगवती सरस्वती
का स्थान मनुष्य के शरीर में आज्ञा चक्र और सहस्रार में स्थित
है। मस्तिष्क के केन्द्रिय बिन्दु से विचर निकल कर जिहा और
कठ के माध्यम से प्रगत होते हैं। मनुष्य के जीवन का ज्ञान कोश
मस्तिष्क में निहित रहता है, इस ज्ञानकोश में उसस्वयं विचार
स्मरण, ज्ञान, सुरक्षित रखे जा सकते हैं। इसमें विचारों को
जितना प्रवाह होता है उतनी ही अभिवृद्धि होती है।

कुण्डलिनी जग्न्यण प्रक्रिया में भी मुख्य स्थान आज्ञा
चक्र और सहस्रार ही है, जिसके पूर्ण रूप से जागत होने पर



मनुष्य योजो बन जाता है, नर से नरादण बन जाता है। पृथ्वी
में पुरुषोत्तम बन जाता है, यह जिया प्रक्रिया भगवती सरस्वती
से ही प्रकट होती है।

वेदों में सरस्वती नदी को भी चारोंदर्दी का सरस्वत माना
गया है, यह सरस्वती भारतवर्ष में तीस स्थानों पर पुगता है।
ऋषियों द्वारा नदी रूप में प्रकट हुई है। जब ब्रह्मा पुष्कर में यज्ञ
कर रहे थे तो ऋषियों की प्रार्थना पर ब्रह्म पर्वती सरस्वती नदी
रूप में वहाँ प्रकट हुई अन्यत्तम प्रभाव स्वरूप होने के कारण
उनका नाम सुप्रभा था। नैमी शारण्य में शीनकादी ८८ हजार
ऋषियों द्वारा ध्यान और यज्ञ करने पर वहाँ कांचनादी रूप में
प्रकट हुई। गदा भारती में महाराज गण्य द्वारा यज्ञ अनुष्ठान करने
पर वहाँ सरस्वती नदी के रूप में प्रकट हुई। प्रयाग में सरस्वती
नो विश्व प्रसिद्ध है ही। इसी प्रकार उत्तर कुलक्षेत्र हिमालय
आदि में सरस्वती मनोरमा, स्वरेण्य, ओषधती, त्रिग्निदेव आदि
नामों से प्रथित हुई है।

जल के रूप में भगवती सरस्वती का स्वरूप ब्राह्म गुणि एवं शुद्ध विद्या और ज्ञान शक्ति के रूप में उन्नत मन को शुद्ध प्रबं निर्मल कर पूर्ण सम्प्रभता की योग्यता का परिचायक है।

भगवती शारदा की दृश्या

ज्ञान से युक्त व्यक्ति हो आई और दयालु हो सकता है, भगवती सरस्वती तो ज्ञान की अधिष्ठात्री देवी है, इसीलिए वे तो अत्यन्त दयामय और कृपा स्वरूप हैं। अन्य प्रकार की सम्पत्तियां ज्ञान करने से उनमें कभी आ सकती हैं लेकिन सरस्वती ऐसी सम्पत्ति है अर्थात् ज्ञान ऐसी सम्पत्ति है जिसका ज्ञान करने से इसमें निरन्तर वृद्धि होती रहती है। ज्ञान और विचार सरस्वती के मूरुरूप हैं, जितना अधिक इन्हें खुर्च करेंगे अर्थात् व्यवहार में लायेंगे उतना ही मनुष्य का जीवन उत्तिष्ठीत हो और प्रजातानि होता रहता है। इसीलिए कहा जाता है कि ज्ञान समागर में सेकिता ही खुर्च करे वह समागर कभी समाप्त नहीं हो सकता।

जीवन और सरस्वती

सामान्य रूप से यह मान्यता है कि सरस्वती विद्या की देवी है और बालकों को विद्या अध्ययन में श्रेष्ठता प्राप्त करने के लिए सरस्वती का ध्यान करना चाहिए। वास्तव में यह एक गलत अवधारणा है। विद्या अध्ययन तो जीवन का एक प्रारम्भिक ग्रन्थ है, उसमें सफलता जीवन के लिए आधार अवश्य बनाती है और उस कारण बालकों को सरस्वती का ध्यान अवश्य करना चाहिए, लेकिन क्या पढ़ाई मात्र से ही जीवन चल सकता है?

जीवन में निरन्तर ज्ञान और विचार शक्ति का प्रभाव आवश्यक है, व्यक्ति चाहे नीकरी करे अथवा व्यापार, सफल

वही हो सकता है, जो श्रेष्ठ बार्तालाप कर सकता है, अपने काव्य पर पूर्ण विचार कर सकता है। सही समय पर सही निर्णय ले सकता हो, जो सही तर्क कर सकता हो, अपने वाक्यशक्ति के माध्यम से दूसरों को प्रभावित कर सकता हो, वही व्यक्ति जीवन में सफलता प्राप्त कर सकता है।

राजनीतिक जीवन में भी वही व्यक्ति उच्च शिखर पर पहुंच सकता है जो दूसरों के मन की भावनाओं को समझते हुए श्रेष्ठ वक्ता के रूप में अभिभाषण कर सकता है। सरस्वती नो कालज्ञान वार्ता, प्रशासन की अधिष्ठात्री देवी है, उनकी सिद्धि के बिना मनुष्य अपने जीवन में किसी भी प्रकार की उत्तरिति नहीं कर सकता है, मोहिनी शक्ति सरस्वती का ही रूप है और आकर्षण के बल विचार और बाणी के छारा ही मनुष्य के हाय-माय इत्यादि में प्रकट होता है सरस्वती का साधक आभायुक्त, आकर्षण युक्त, शांत चित्त वाला अवश्य बनता है।

सरस्वती की शक्ति न होने पर मनुष्य के जीवन में केवल देह बल रह सकता है, और यदि पूर्व जन्मों का कुछ पुण्य हुआ तो थोड़ी बहुत लक्ष्यों रह सकती है, लेकिन यदि सरस्वती ही जीवन से निस्तृत हो जाए तो वह शक्ति और लक्ष्यों भी चली ही जाती है। यसार में जितने भी महान् व्यक्ति हुए हैं चाहे वह राजा महाराजा हो, सग्राट हो, कृषि, मुनि हो और आदर्शीय रूप में अपने क्षेत्र पर उच्चयम शिखर पर पहुंचने वाले व्यक्ति हो वे सब सरस्वती सरस्वती के कारण ही महान् बन सके। कहते हैं कि लक्ष्य पति अर्थात् धनदान को कोई याद नहीं करता लेकिन जानी व्यक्तियों की गाथा अनन्त पीढ़ियों तक कही जाती है।

जीवन के तीर्थ

न्युक जैवन में निम्नतर कार्यशील अवश्य रहता है। जीवन के जैवन में जीविकृदि उच्चात अवश्य भी बढ़ती जाती है। जीवन में एक समय ऐसा अवश्य आता है जिसे 'पीक अवश्य' कहते हैं जैवन का उच्चतम स्थान कहा जा सकता है। उच्चतम स्थिति पर पहुंच कर दी ही स्थितियों विशेष रूप से समझा होता है। इसमें जीवन में विशेष सफलता का यह उच्चतम अनुभव करने के पश्चात अवश्य आवश्यक हो और दूसरी स्थिति में जैवन में उच्चतम स्थिति से आगे अलग ही नहीं बहुत लगती है।

जैवन में भी यह देखने में आता है कि कई व्यक्तियों की प्रवृत्ति शाही होती है और उपर्युक्त जीवन के पैतालीसवें वर्ष के अन्तर्गत ही एक उच्च स्थिति में पहुंच जाते हैं। उसके बाद वे यह छोड़ जो सामान्य प्रगति होती है वही प्रगति होती है जैव जैवन जैवन अवश्य बहुते पर सेवा निवृत्ति की स्थिति बन जाती है।

इसी प्रकार व्यापार में भी तेजपर्वे वर्ष से अडानालिसवें वर्ष तक व्यक्ति विशेष उच्चति कर उपर्युक्त व्यापार को बहुआदामी बनाते सकता है। ये पच्चीस वर्षों का समय उसके लिए किन्तु अपने कार्य को बढ़ा सकता है। व्यापार में नये-नये प्रयोग का विशेष अधिक लाभ प्राप्त कर सकता है। अडानालीसवें वर्ष के अन्तर्गत व्यापारिक क्षमता तो रहती है लेकिन 'रिस्क' लेनी की प्रवृत्ति कम हो जाती है। इस कारण उस समय तक जो व्यापार जम जाना है, उसी को भजने संबारने और उसे 'मनेन' करने का व्यक्ति प्रबल करता है।

जीवन के हर क्षेत्र में सदस्यता

आत्मद्यक्त

पूर्व में जैसा स्पष्ट किया है कि सरस्वती केवल बालकों के ही अधिष्ठात्री देवी नहीं है अपनी हर व्यक्ति के लिए जीवन की यह देवी परम आवश्यक है जिसके बिना उसका जीवन चल ही नहीं सकता है। बालक नीकरी, व्यापार, गुरुश्य, दोगी, संन्धारी जैव के लिए सरस्वती परम बन्धनीय है।

बालक और सदस्यता

बाल्य काल मूल रूप से उस समय को कहा जाता है जब बालक शिक्षा का अध्ययन करता है। जाजकल के युग में शिक्षा के क्षेत्र में भी इतनी अधिक प्रतिस्पर्धा बढ़ गई है कि छात्र प्रारम्भ से ही अपने आप को एक बोझ के नीचे दबा हुआ अनुभव

करते हैं। इसके साथ ही मां बाप के मन में भी यह विचार रहता है कि जो शिक्षा हम अपने जीवन में प्राप्त नहीं कर सके हमासा बालक शिक्षा का वह स्तर अवश्य ही प्राप्त करें। हर कोई चाहता है कि उसका बालक बड़ा होकर डाक्टर, इन्जीनियर, प्रशासनिक अधिकारी बने और उसे युवा अवस्था में ही श्रेष्ठ सफलता मिल जाए। उसके लिए शिक्षा को आधार मानकर ज्यादा से ज्यादा अध्ययन के लिए उस पर नीर ढालना, दियशन इत्यादि करना, खेलकूद से विरक्त रखना, छुर समय पढ़ते रहने का उपवेश बैठा पुक प्रकार से नियम सा बन गया है।

इस प्रकार के द्वान्द्वावत में बालक छात्र भी भ्रम की स्थिति में आ जाता है। शिक्षा अध्ययन का तात्पर्य है जोपनी भी एक बार पढ़े वह अच्छी तरह से समझ कर पढ़ें, इसके साथ ही यह भी आवश्यक है कि आपको बार-बार रटना नहीं पड़े। जो विषय वरन्तु का एक बार समझ कर अध्ययन कर लिया वह सब के लिए आपके समरण आपके मस्तिष्क में सुरक्षित हो जाए। जब यह अपने मस्तिष्क का वह जान कोष स्वीकार कर उस विषय के बारे में कभी भी बोल सकें, निख सकें, समझ सकें, सरस्वती विद्या की देवी है और विद्या का तात्पर्य है विषय वस्तु का अध्ययन कर गलीभाँति समझना उसे समरण रखना और समय आने पर उसका उपयोग करना। इसके साथ ही विद्या के बाल पुस्तकीय ज्ञान नहीं है आपपास के बातावरण में जो भी घटना ब्रह्म चलत है जो घटनाएं घटित हुई हैं उनका ध्यान रखना और श्रेष्ठ बातों को जीवन में उतारना है। सरस्वती का नेत्रा स्वरूप स्मरण शक्ति का स्वरूप नहीं है अपितु जान भौतर जाकर प्रस्फुटित हो नाएँ विषय वस्तु की विवेचना अनुसंधान और निष्कर्ष का नाम मेंधा शक्ति है।

नीकरी और सदस्यता

सरस्वती को प्रशासन दण्ड नीति, वार्ता की अधिष्ठात्री देवी कहा गया है, नीकरी में वही व्यक्ति तुरन्त उन्नति कर सकता है जिसमें प्रशासन क्षमता श्रेष्ठ हो। प्रशासन क्षमता का तार्थ है कि अपने उच्च स्तर के अधिकारियों के अनुकूल आचरण कर अपने अधिनस्त व्यक्तियों को नियंत्रण में रखना आवश्यक है। जो व्यक्ति नीकरी की ओहा स्मझते हैं वे कभी तरब्की नहीं कर सकते हैं प्रतिशङ्क सचेष्ट रहते हुए अपने कार्यों को किस प्रकार से दूसरों से पहले सम्पन्न करें, जिससे आपका कार्य सब के सामने दिखे। योग्यता हर एक में होती है लेकिन वह योग्यता कार्य और व्यवहार में जब प्रकट होती है तो उस योग्यता के

आरण पद्मोन्नति ग्राम होती है। नौकरी में भी निम्मेदरी का कार्य उसे ही प्राप्त होता है जो कुशाय बुद्धि होता है, प्रश्नासन करना जानता है नियम कावये कानून के अन्दर रहते हुए अपने कार्य को श्रेष्ठ रूप से सम्पादित करता है। वनेनान समय में जब भरकारी नौकरियों में कमी होती जा रही है और प्राइवेट नौकरियां बढ़ती जा रही हैं, वहाँ प्रमोशन का आधार आपकी योग्यता ही है। प्रत्येक कार्य को उपना घमझमे हुए तीक्रता से पूरा करना सरस्वती कृपा से सम्भव है। नौकरी करने वाले व्यक्तियों के लिए वास्त्रेवी उच्चता वांगपत्री सरस्वती आधिष्ठात्री कही गई है।

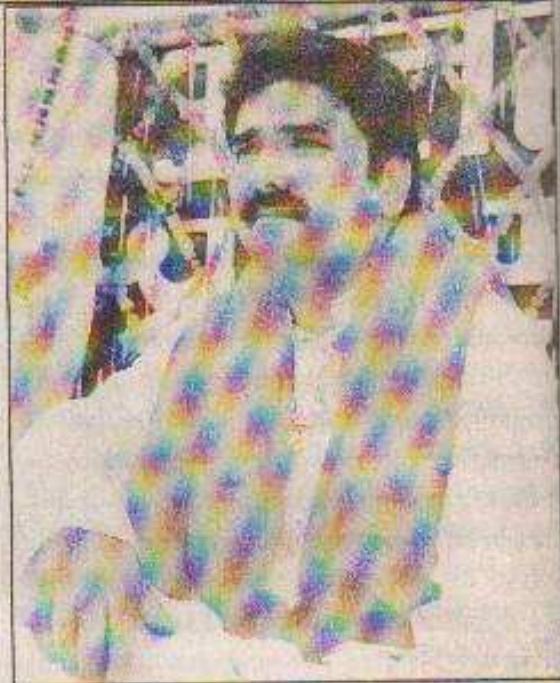
व्यापार और सरस्वती

व्यापार का तात्पर्य यह नहीं कि आप दुकान खोलकर खेट गए, याहूक आये और सामान लेकर जले गए, व्यापार का यह दृष्टिकोण तो अल्पान्त संर्कीर्ण हो गया है। व्यापार के आधार है 'वार्ता' आप किस प्रकार से सामने वाले को प्रभावित करते हैं, जिससे वह आपके द्वारा बिक्री देख्य प्रोडक्ट को ही अपनाये गए विशेष आवश्यक है। निःचय ही व्यापार में व्यापारी किसी और से लहरीदाता है और किसी और को बेचता है और वार्ता की कुशाय बुद्धि आपको व्यापार में शीघ्र लाभ हो सकती है। व्यापार में जो नया निर्णय लेना पड़ता है उन्हें कार्य को बढ़ाने के लिए बारे और दिमाय लगाना पड़ता है जाय ही उचित प्रशासन भी करना पड़ता है। इसका आश्वर वार्ताली सरस्वती ही है। वार्ताली सरस्वती जागत को एवं पर व्यक्ति व्यापार वार्ता में अत्यन्त कुशल हो जाता है। नये अनुबंध करना, नये प्रकार के प्रयोग करना और याहूक को अपना बना लेना जिससे उसके साथ अभिन्न सम्बन्ध स्थापित हो जाए 'वार्ताली सरस्वती' का ही प्रताप है।

वार्ताली सरस्वती के कारण से ही व्यापार में यकलता प्राप्त कर लक्ष्मी की पूर्ण कृपा प्राप्त की जा सकती है। जो व्यापारी वार्ता पर नियंत्रण नहीं रख सकते सही समय पर निर्णय नहीं ले सकते, व्यापार में नये नये परिवर्तन नहीं लाने के उक्त कार्य व्यापार सक जाना है क्योंकि वे आधार इकें वार्ताली सरस्वती को भूल कर इंटर लाभ के लिए प्रयत्नशील रहते हैं। व्यापार में हमेशा व्यक्ति को दूर दूषि युक्त होना आवश्यक है। उन्हें वाले समय के हिसाब से योजना बनाना और उस योजना में भी परिवर्तियों के अनुभार तत्काल परिवर्तन करना व्यापार की सफलता का आधार है।

गृहस्थ जीवन और सरस्वती

गृहस्थ जीवन के आधार परि पत्नी का प्रेम, आपस



में सामूहिक्य, एक दूसरे की भावनाओं को समझने की क्षमता और उसके साथ ही मधुर सम्प्राणग गृहस्थ जीवन के आधार है, प्रेम का प्रगटीकरण चाहे वह हाव भाव की सांकेतिक भाषा से हो अथवा बाणी द्वारा हो गृहस्थ जीवन में आवश्यक है। बाणी की मधुरता मोहिनी शक्ति कही जाती है, परिवार में मधुरता के साथ एक दूसरे के साथ बोलने से जीवन सरस हो जाता है। कदु शब्द बहना तो बहुत सरल है लेकिन कहे हुए शब्दों को बताये लेना कभी भी सम्भव नहीं हो पाता है। सखी गृहस्थ जीवन की आधारभूत 'गृहिणी सरस्वती' (जीरी) है, जिनकी कृपा से गृहस्थ जीवन में तनाव नहीं रहता गृहस्थ जीवन जीवनसाक्षा में एक सूखद आश्वाय बनता है आपस में एक दूसरे के विचारों को जानकार भनुकूल कार्य करना गृहस्थ के लिए अवश्यक है।

स्त्रीयों का कम या अधिक सौन्दर्य गृहस्थ जीवन की प्रभावित नहीं करता है, प्रभावित करता है नमुर सम्प्राणग, पुरे परिवार के सभी सदस्यों के साथ भीठा बोल बोलना श्रेष्ठ स्त्री के लक्षण कहे जाते हैं। सरस्वती की अष्ट विभूतियों के सम्बन्ध में लिखा है—

सद्गमी मेंधा धरा पुष्टि गर्वी तुष्टि प्रभा वृत्ति
एतामिः पाठि तत्त्वमिरहामिर्मा लरस्वति ॥

अयांत जहां सरस्वती निवास करती है, वहाँ उनकी अष्ट विभूतियों लक्ष्मी मेधा, धरा, पुष्टि, गर्वी, तुष्टि, प्रभा और

जीवन की निकाल करती है और श्रेष्ठ गृहस्थ जीवन के लिए अन्तर्भुक्ति लेवे जीवन में विद्यमान रहे ऐसे ही जीवन को अनुभूति, जीवन कुरु और कामयुक्त जीवन कहा गया है।

चलन किछा और सदस्वती

दोष विद्या के पथ पर चलने वाले व्यक्ति निम्न साधक बनते जाते हैं जो अपने जीवन में गृहस्थ इत्यादि के गृहस्थ व्यवहार, जीवन के मोह की नहीं रखते हुए ब्रह्मचर्य से जीवन बदल देते हैं योगी बनना चाहता है उसकी आधारभूता देवी अनन्त है। महान गणों की रचना उपनिषद् पुराण इत्यादि विविध परं कृपा कर भगवती सारस्वती ने उनके शारीरों के बदले माय उन्हें गायत्री सप्त में दर्शन दिए तथा गायत्री मंत्र का कृतिक्राम कराया।

महर्षि वाल्मीकि परं अनुग्रह कर यानायग रचना करने की सूचि प्रदान की।

महर्षि व्यास द्वारा आशाधन वरने पर भगवती अनन्त प्रगट होकर उनसे कहती है कि तुम ने मेरी प्रेरणा से विविध वाल्मीकि रामायण बढ़ा वह मेरी शक्ति के कारण सभी वाल्मीकि सनातन बोन बन गया है उसमें रम चरित्र के रूप में वाल्मीकि के रूप में प्रतिष्ठित है—

वद रामायणं द्वारा काव्यबोजं सनातनम् ।
वत्र रामचरितं स्वात तद्वं तत्र शक्तिमान् ॥
(ब्रह्मदर्शक १-३०-४७)

इसीलिए महर्षि व्यास श्रीमद्भागवत की महान रचना को लेखन बढ़ा कर जगत के सामने प्रस्तुत कर सके जो आज वे विश्व का यद्यपि बड़ा नहाकार्य है।

इसी प्रकार दुर्गा सामग्री में लिखा है—

वा मुक्तिहेतु रविविन्द्र्यमहावता त्य-
सद्यस्त्वर्चरे सुजिवतेजिद्विवत्वस्तरारे ।
मो द्वार्थिभिर्मुक्तिभिरस्तसमस्तदोऽसे—
विद्यासि द्वा भगवती परमा हि देवी ॥
(श्री दुर्गास्त्रमण्डली ४-६)

कृष्ण महर्षि अपस्त राम-डेव, ईश्वर, लोभ, मोह, मरु आदि परं विनाश प्राप्त कर उन्न करण को अन्यन्त शुद्ध एव निर्मल कर बड़ाविद्या के रूप में उहनिश उन्हों की उपासना करते हैं और इनको प्राप्त कर जीवनमुक्ति भुख का प्रत्यक्ष अनुभव करते हैं तथा उन्ह से उन्न में विवेद मुक्ति तथा केवल लो प्राप्त करने में सक्षम हो जाते हैं।

त्रिवर्ण पंचमी और सारस्वती

माव मास की की पंचमी शारदात्मा का अविभावित विवस्त माना जाता है इस दिन सरस्वती पूजन विशेष रूप से गम्भीर किया जाता है। सरस्वती जयंती से ही वसन्त ऋतु प्रारम्भ मानी जाती है, जीवन में नित्य प्रति नवीन वसन्त आये और प्रतिविन भगवती शारदा की आशाधन हो उसके लिए निम्न निष्ठमों का बालक, गृहस्थ, व्यापारी प्रत्येक को पालन करना चाहिए।

१. वेद, पुराण, रामायण, जीता इत्यादि सद ग्रंथ धरे में अवश्य ही होने चाहिए इन ग्रंथों को देवी का स्वरूप मानते हुए पवित्र व्यायाम पर रखना चाहिए।

२. पठन अध्ययन योग्य कोई भी पुस्तक कवल्य इत्यादि को अपवित्र अवस्था में स्पर्श नहीं करना चाहिए और पृथ्वी पर उन्हें अनादर से नहीं केकना चाहिए।

३. गृहस्थ और व्यापारी धरे के और व्यापार के लिए विवाह किताब की पुस्तक सही रूप से रखें, और नित्य प्रति के आय व्यय का लेखा जोखा अवश्य रखें।

४. कोई भी पुस्तक का अध्ययन प्रारम्भ करने से पहले उसे आशा चक्र पर स्पर्श करकर अर्थात् मरुस्तक पर स्पर्श कराकर ही काव्य और लेखन प्रारम्भ करें।

५. सरस्वती की पूजा इवेन पुष्प, श्वेत अंडन, और श्वेत वस्त्र अलंकारों से सम्पन्न करना चाहिए।

६. वाणी शुद्धि के लिए श्रेष्ठ भूत का उच्चारण नियमित रूप से करना चाहिए। वाद-विवाद अनर्गीन प्रत्याप द्वारा वाणी की शक्ति का अपव्यय नहीं करना चाहिए।

७. नित्य प्रति अध्ययन करने की सूचि जापात करनी चाहिए और नये ग्रंथों का अध्ययन अवश्य करना चाहिए।

जीवन की संरचना आपकी उत्पत्ति है, लेकिन उस संरचना में विशुद्ध भाव की जाग्रत करना और उसके साथ ही दुर्बल, धीरण व दरिद्र मानविकता को समाप्त करना, व्यक्ति अर्थात् साधक के स्वर्य के भीतर निश्चित है। जब व्यक्ति साधक बन जाता है, तब वह अपनी जड़ता को समाप्त कर चैतन्यता की ओर अग्रसर होता है। सरस्वती सरसना प्रदान करने वाली देवी है, वह उस शक्ति नत्य से संयोजित है, जिससे जीवन में सीन्यर्य, राग, संगीत की उत्पत्ति हो सके, जीवन में शुश्कता समाप्त हो सके, जीवन को पहिचानने की प्रक्रिया प्रारम्भ हो सके। केवल धन प्रबलता के रूप में जीवन को न देखकर धन को अपने आधीन कर जीवन की नए रूप में लेखने की क्रिया केवल सरस्वती के माध्यम से ही प्राप्त हो सकता है।

बालकों में ज्ञान चेतना स्मरण शक्ति अभिवृद्धि हेतु

लेण्ठा सरस्वती राधाना

प्रातः काल साथक जलन्ते उठ जाए और स्नान आदि
में नियन्त होकर बालकों या पौले वस्त्र धारण करे। फिर घर के
किसी स्वच्छ कमरे में उन्होंना स्थान में अपने परिवार के साथ बैठ
जाए। अपने सामने सरस्वती का चित्र स्थापित कर दें। उसके
बाद निम्न ध्यान मंत्र का उच्चारण करे—

ध्यान

शुभवत्तां हहरयिचार सार परमायां जनदव्यापिनीं
वीणा पुस्तक धारिणीमय दं जाङ्गापन्धकारापहां।
हस्ते रफाटिक मासिकां विवधतीं पदमासने रस्तितां
वहुदे तां परमेश्वरीं भगवतीं दुष्टि प्रदान शारदाम्॥

शुश्रवणयी बहुरस्तरुपा, आधशक्ति ज्ञानरूप में
समस्त जगत व्याप रहने वाली, अपने बालों में वीणा (वायुमंत्र)
वेद (कृत आदि), स्फटिक माला तथा अभयप्रदान करने वाली
समस्त अज्ञान समूह को दूर करके जान और बुद्धि प्रदान करने
वाली भगवती सरस्वती की मैं बन्दना करता हूँ।

इसके बाद एक धारी में सरस्वती मंत्र का △
अकन निम्न प्रकार से करें, इस यंत्र का अकन चांदी
की शलाका या चांदी के तार से करें। यदि ऐसा सम्भव न हो
सके तो ताँबे का भी प्रयोग कर सकते हैं। इसके बाद अष्टग्रंथ से
निम्न मंत्र को बाली में अकित करें। अष्टग्रंथ में आठ महत्वपूर्ण
वस्तुओं का समावेश होता है, जो कि अत्यत दिव्य होती है,
कहते हैं कि भगवान कृष्ण से इन प्रकार की अष्टग्रंथ निरन्तर
प्रवाहित होती रहती थी।

फिर इस बनाए हुए यंत्र पर 'सरस्वती यंत्र' (धारण
करने वाला) रखें। यदि घर के बालकों के लिए भी प्रयोग कर रहे
हों, तो जितने बालकों को यह यंत्र धारण कराना हो, उतने ही

यंत्र बाली में रखें। भीषणों पर अष्टग्रंथ का तिलक करें, पीले
पुष्प घड़वीं, सामने अगरबत्ती और दायक जला दें। धूध का बना
प्रशाद अर्पित करें। इसके बाद सरस्वती मंत्र का मात्र १०८ बार
नप करें, घर के जितने भी बालक या बालिकाएँ हैं, वे भी इस
मंत्र का १०८ बार उच्चारण करें—

मंत्र

॥ उठे ऐ सरस्वत्यै ऐ नमः ॥

इसके बाद सरस्वती चित्र की संक्षिप्त पृजा कर, उस
पर पीले पुष्प चढ़ावें, तत्पूज्यात बालकों को अष्टग्रंथ से तिलक
कर उन्हें पीले पुष्पों की माला पहनाएं। इसके बाद चांदी की
शलाका या तार (न हो तो ताँबे का प्रयोग करें) से अष्टग्रंथ तारा
प्रत्येक साथक, बालक, बालिका अथवा पत्नी की जीभ पर भी
(सरस्वती बीज मंत्र) लिख दें और फिर अपनी स्वयं की जीभ
पर भी इस बीज को अंकित कर दें। हर बार लिखने से पूर्व
शलाका को धो अवश्य लें।

बालक बालिकाओं आदि की जीभ पर सरस्वती बीज
मंत्र अंकित करने का तथा सरस्वती यंत्र समेत रेशमी धारे में
प्रियोकर धारण करने का सिद्धान्त मुहूर्त बम्बत पंचमी है। यदि
इस दिन यह सम्भव न हो सके तो किसी भी समवाह के दिन
अमृत काल में भी सरस्वती मंत्र को जीभ पर लिख कर यंत्र
धारण करा सकते हैं।

इस प्रकार के यंत्र को वसंत पंचमी के सरस्वती सिद्धि
दिवस पर जीभ पर सरस्वती स्थापना एवं सरस्वती मंत्र नप के
उपरांत, धारण करना अपने आप में प्रस दीप्तिमय है। इसे रवव
तो धारण करें द्वी, अपने पुत्र पुत्रियों को भी धारण करायें।

साथना पैकेट - 150/-

जौकरी-आजीविका, पद्मोज्जति हेतु

वाणीश्वरी साधना

जिस प्रकार यह पूर्व में रूपह किया गया है कि जीवन की उचित प्राप्ति के लिए बोलने की कला, गंभीरता, कर्तव्य वाले और महानरात्रि आवश्यक हैं उसी प्रकार साधक को इसके लाभप्राप्ति पर भी ध्यान देना पड़ता है जैसे कहीं वह ज्यादा नहीं चले जाते तो उसे बातुली या बाचाल कहा जायेगा। बाचाल व्यक्ति को बातों का कोई महत्व नहीं होता है। उसी प्रकार गंभीर वीजना नहीं हो कि उचित समय का अवसर निकल जाय या अब जीन भाव से शसित हो जाय। शाधिक गंभीरता हीन भाव को उच्छव कर देती है गंभीरता ही लेकिन प्रभावमय ही। कर्तव्य वाले किंहीं कब क्या करना चाहिए को कहते हैं। इस बोध की अधिकता व्यक्ति को तनबद देती है जिससेव्यकि में विद्यिहाषण जा जाता है या व्यक्ति केवल उपदेश ही देने लगता है, कार्य के लिए बक्षादारी नहीं रह जाती।

सहनशीलता निःचय ही श्रेष्ठ गुण है जिसका आजकल अधिकांश व्यक्तियों में उभाव सा बन गया है जिसके चलते उन्हें सदृष्ट अविश्वास सर्सकि दृढ़ि पैदा होती जात रही है। कुछ लोगों में सहनशीलता की अधिकता इतनी अधिक भी हो जाती है कि वे कुछ बोल ही नहीं पाते, बोलने से पहले या बोलते ही उनके हाथ पांव कांपने लग जाते हैं हृतय की धमनिया तेज हो जाती है। परिणामतः वे अपने विचार व्यक्त नहीं कर पाते जिसके कारण वे कुठित होते चले जाते हैं, ऐसे व्यक्ति प्रायः एकान्तवासी, चलता रिहीन हो जाते हैं जिससे उनकी प्रतिभा जो ईश्वर ने उन्हें प्रदान की वह समाय हो जाती है। कुल मिलाकर व्यक्ति में प्रवाह नहीं बन पाता, निर्मलता निश्छलता वेग नहीं बन पाता है, जो वे अधूरे ही रह जाते हैं। पूर्णता तथा परिपूर्णता विस्ती को जीवन में एक शक्ति में नहीं आती है यह तो सतत प्रक्रिया है प्रवाह एवं वेग की प्रक्रिया है। नित्य प्रति अपने अन्दर एक-एक बृद्ध जान अमृत तपत्वा को ढालते रहना ही तो साधना है।

इस साधना को शुक्रवार या पूर्णिमा का दिन हो और यदि बसन्त पंचमी का दिन हो सबसे उत्तम माना जाता है। इस दिन साधक पीले वस्त्र जो आकर्षक हो धारण करें, अपना सीनदर्य सजायें ताकि आप दिखलने में आकर्षक अमोहक बन सकें। एजा स्थान या खुली जगह में बाजोट पर पीला बन्त्र बिछाकर सामने किसी पात्र में केसर या चंदन से ऊँचित करें उस पर 'बाणीश्वर यंत्र' स्थापित कर, बाणीश्वर का पूजन करें भी का दीपक जलायें नैवेद्य का पौग लगायें यदि उपलब्ध हो तो धीला पुष्प चढ़ायें, भगवती सरस्वती का ध्यान करें—

हंसा रुडा हर हसित हारेन्द्रु कुम्बवद्वात्,
दरणी महदस्मित तरसुखी शैसिथद्वेन्द्रु त्वेत्वा।
विद्या धीणमृतस्य वटाक्षस्त्रजा दीपहस्तरा,
स्वेतारजस्या भवदधिमत्र प्राप्तवे भारती स्वात्॥

मन्त्रक पर अर्थचन्द्र धारण की हुई, चलत तथा मन्त्र मन्द मुस्कुराती हुई, हंस वाहन पर विराजमान भगवान शंकर के अङ्गाहास के सदृश, कूर्यपुष्प के सदृश उवेत बर्ण की हार पड़नी हुई अपने हाथी में, वेद, वीणा, अनुत्करणश तथा सदाक्ष मला धारण की हुई श्वेत कमलों सुशोभित भगवती भारती मेरे मनोविभित कार्यों को पूरा करें।

मंत्र

// उै हौं वद वद वाज्वादिनी स्वहा॥

लिम्न मंत्र का 'कामना सिद्धि माला' से ११ माला जप करें भेद जप उपरात मला को बाणीश्वर पर अर्पित करते हुए अपनी समस्त मनोकामना अपने शब्दों में व्यक्त करें उपरात सरस्वती और गुरु आरती सम्पत्र करें। साधना उपरात माला विसर्जित कर दें तथा बाणीश्वर को पूजा स्थान में एक वर्ष तक स्थापित रखें उनके उपरात विसर्जित कर दें। इसी दिन से साधक का यह प्रयास ही की बड़ अवश्यकतानुसार बोले और मीठा बोले, मधुर वै ओषधि, कटुक वचन है तीर।

साधना पैकेट - 300/-

व्यापार व्यवसाय साफल्य हेतु

वार्ताली साधना

व्यापार हो, या व्यवसाय हो, उधोग या रोगजार हो या सेवा का नोमान हो, मानवीय दृष्टि का हो से है। सब उद्यम ही उद्यम का तात्पर्य है। किंचित् को का उद्यम होना ही उद्यम कहना है इन्होंकि विचार हो वह शीतड़े नियमों कंकर निकलने हो पुण्य कार्य शुरू हो जाता है। उच्ची प्रकार आज की परिस्थितियों में व्यक्ति तो बहुत है पर व्यक्तिगत बहुत कम है, हम व्यापार करते हैं फेकर्टर लगाते हैं तुकान लगाते हैं नीकरी करते हैं सेवा करते हैं, बेकल पैसे के लिए। न हमारे पास पैसा करने की कोई फलानिंग होती है न ही कोई विचार होते हैं, बस केवल अपनी आवश्यकता की पूर्ति के लिए धन की आवश्यकता होती है बस उप धन को प्राप्त के लिए अपनी बनायी रखते हैं। यही दृष्टि ही जर्ती है कि हम पैसे के पीछे भागते हैं और पैसा हमें अपने पीछे भगाता है। अगर हम डिलकर बढ़े हो जाएं और क्षणिक विचार करें तथा विचारना बढ़ने से निरचय ही सब कुछ बदल जायेगा फिर पैसा हमारे पीछे पीछे चलने लगेगा क्योंकि विचरणों की नामा आपको व्यक्ति नहीं व्यक्तित अन्यथेगे आजकल ही सभी व्यवसायों प्रतिष्ठानों में एक पद सनाहकार का होना है और वेश्वा जाए उस प्रतिष्ठान के पूल हृदय में उन सनाहकारों के विचार ही होते हैं जो उन सफलता और समृद्धि प्रदान करते हैं। व्यावहारिक जगत में भी व्यक्ति आपने हित शुद्ध चिनकों से सलाह ग्रहणित करत है लेकिन उनमें भी उन लोगों ने यिलाना वह अधिक प्रमाण करता है जो विचारवान प्रतावन अनुभवी होती है। विचारना और बोलना एक श्रेष्ठतम क्रिया है जिसका प्राप्ति वार्ताली भरन्वती साधना के माध्यम से ही सहज सम्भव होने लगती है।

लाखों व्यक्ति उदाहरण डेकि उनके वीक्षन में यह क्षण कुछ ऐसा हुआ कि उनका नीक्षन ही बदल गया कभी कभी वह क्षण स्वयं दृश्वरीय कृपा से प्राप्त होते हैं तो कभी कभी उन्हें साधना और दोकाओं के माध्यम से लाना पड़ता है। साधना ही ही उन क्षणों को प्राप्त की जिनमें परिवर्तन होता है। क्लेंड आवश्यक नहीं कि साधना बहुत नम्बरों की दौड़ी वृद्धांश बहिनता से युक्त हो तभी जल्दी सकून हो प्राप्त होती

वह तो एक दाग होता है जिसमें हृदय पटन मिला और देतना प्रविष्ट हुई दिन का उनाला अपने आप हो जायगा और वार्ताली भरन्वती की साधन का यह उद्यमत भूषण वस्त्र पंचमी से आधिक बढ़कर नहीं हो जाता है।

पंचमी या मोमयार के दिन अपने व्यापार ग्रन्थ में पाले गए शेष वस्त्रों ने आकर्षक हो धारण कर बाजार पर भी पाना आसान छिड़ाकर उप पर अपने व्यवसाय के बही छाने, रविस्तर लेनदेन, दुस्तिकारण का स्थापित कर मामने महासर्वती का विचर नगरण किसी तांत्रिक पात्र में जीले पुष्ट के आवास पर पाने भवान रखे और उस पर 'वार्ताली सरस्वती यंत्र' स्थापित कर सर्वप्रथम बानीनी सरस्वती का ध्यान करे—

शवास्त्रां सर्वभूतां कशी चापि कपालकं वरकं
त्रिशूलं च दधतीं च चतुष्कारे ।

मुण्डमाता धरात्रयक्षां भजे वार्ता सरस्वतीम् ॥

शब्द आसन पर विशेषज्ञान सर्वों के आभूषण उपर की हुई, शत्रुओं का नाश करने वाली, चारों होरों में कपाल, पानपात्र, त्रिशूल एवं सुण्ड माता धरण की हुई, तीन नेत्रों वाली धरती तील सरस्वती मैं नित्य ध्यान करता है।

मंत्र

उम ही श्री एं व्याजादिनि भजवति अर्हन्मुख जिवासिनि
सरस्वति ममास्त्वे प्रकाशं कुरु कुरु स्वाहा एं नमः ।

निन्म मंत्र का यह मणिमाला में एक माला जप के मंत्र के बाद माला को यंत्र के ऊपर रख दें। आप अपने व्यवसायिक हिमाच जितात्र की पुस्तके स्वरूप है, वहाँ स्थापित कर दें। साधना उपरोक्त माला की स्थापित कर नित्य इस विशेष मंत्र को व्यापार लेखन कार्य से गहने । ११ बार उच्चरित उच्चय कर ले। यह विशेष लागकरी रहता है। जब किसी विशेष कार्य ले बदल जाए तो यंत्र को अपने पास रख ले तथा माला को गले में ढारण कर ले।

साधना पैकेट - 330/-

प्रेम और गृहस्थ में सरसता हेतु

गौरी सरसवती साधना

इन साधनों को कोई भी स्त्री या पुरुष सम्पन्न कर सकते हैं। गृहस्थ सुख के आकांक्षा साधक साधिलाइटों के लिए यह वह उपयोगी साधना विधि है।

जलों के बिना को प्राप्त काल शीघ्र पूजन
जल कर्त्ता से मुक्त हो, और रनान
जल द्वारा जल स्वरण कर ले।
सरसवती स्वान का धुला व
जल से जल आवश्यक है।
सरसव के पत्र पर ऊकिन
सरसवती यंत्र, आठ
जल नारियल, सिंचि
सरसव आवश्यक साधना
सरसव के रूप में विचान होनी
चाहिए।

समस्त साधना सामर्थी प्राप्त

जिसी सामग्री में या स्टील की घासी में
जल से स्वस्तिका का कंकन करे व्यस्तिका के ऊपर महासरसवती
का स्थापित कर उसके चारों ओर अष्ट सरसवती के प्रतीक रूप
देखा जाए लघुनारियलों के स्थापना करे तथा यंत्र एवं लघुनारियलों
का पूजन शब्द चंदन, अष्टत, इवत पुष्प, सुन्दित ऊगरबती
का धूप तथा धीपक से करें। इनमें से वहि कोई वस्तु उपलब्ध न
हो सके, तो मन में कोई संशय लाने की आवश्यकता नहीं है,
उस वस्तु का मानविक रूप से स्मरण कर योग्य ऐ अष्टत चढ़
देकर ध्यान मंत्र करें—

तरणशक्ति मिठ्ठो विभूति शुभकामिनि
कुचमर नाभिताङ्गी लक्ष्मिश्चणा सितावृ
लित्तकर कमलोलतेचिन्ती युस्तक श्री
सकल विभवचिद्ग्रे यातु वाय देयता तः।

शुभ्रवर्ण वाली चन्द्रमा की कलाओं से धारण की हुई,
स्तन भर से सूक्षी हुई कमलालन पर विंशत्रमान अपने हाथों में
कमल, लेखनी अथ माला तथा वेदों ओर धारण की हुई,
भगवनी सरस्वती स्मरन वेभव को त्रिवान
करके मेरी रक्षा करे।

दैपक का स्मरण पूजन
काल में प्रात्संजिता रहना अति
आवश्यक है। इस संक्षिप्त
पूजन को जग्ने के ऊपरान
सरसवती नहासरस्वती में
अपूर्णपूर्ण जौठन में समाझिन
होने की प्रार्थना कर तथा उपनी
एक मनोकाणना का स्मरण कर
विसर्की पूर्णि तत्काल रूप से
आवश्यक हो, सिंचि माला से निन
मत्र को पांच माला मत्र जप स्वन्न करे—

सरसवती मंत्र

॥ उ॒ हौं दैं हौं उ॒ सरस्वत्यै नमः ॥

इव गण के बाद समस्त पूजन सामग्री को उसी प्रकार
रहने दें तथा 'कमस्व परमेश्वरि' कालकर स्थान को छोड़ नित्य
का कार्य व्यापार, नौकरी आदि सम्पन्न करें। सायंकाल यंत्र
नाला व लघुन-रियलों की किसी नदी, सरोवर, मंदिर पवित्र
स्थान पर विष्णुते कर दें। उपरोक्त साधना किसी भी शुक्रल
पञ्चमी के रात्र-सात्र किसी भी गुरुवार की प्रातः भी सम्पन्न की
जा सकती है। सरस्वती साधना जीवन में सीनदय उतारने की
साधना है, अतः यह साधना श्रेष्ठ जीवन सार्थी प्राप्त करने के
लिए की जा सकती है, ज्योकि प्रेम और सीनदय भी सरस्वती
साधना के माध्यम से प्राप्त किया जा सकता है।

साधना पैकट - 300/-

योग, विद्या, अष्ट महासिद्धि प्रदात्री

भगवती शारदा साधना

मा भगवती शारदा का नाम ही स्मरण में आते ही ऐसा लगने लगता है मानो हम पानी के समुद्र में नहीं बल्कि ज्ञान के समुद्र में किन्नोले भार रहे हों कि जितने गहराह में जायें उतने ही अशाह का पत चलता जायेगा, जितना बढ़े वह उतने ही बहना जाता है जितना ढूँढ़े उतना ही मिलता जाता है। कोई सीमा भी नहीं है कोई अंकलन ही नहीं है। उस अवस्था को ही योग कहते हैं। जहाँ न जोड़ने वे बढ़ता है नहीं चटाने से घटता है। अधाह, अविरल, उन्मुक्त, विराम विरन्तन गतिशील बना रहता है तो वह योगी कड़लने लगता है।

योगी के जीवन में यह विषाद छानि, हताशा, अपवाह, यंत्रणा नहीं होता है वह सैवेव प्रसन्न मन, आत्मरित शांति, सौम्य, सुन्दर बना रहता है। भगवतो शारदा ही योग विद्या की सिद्धिदा नामो जाती है। जिसकी उपायना से साधक को आठ प्रकार के गुण विलियां प्राप्त होने लगती हैं जिनका पञ्चर समावेश उनके जीवन में होने लगता है।

अष्ट महासिद्धियां

१. अणिमा — अणिमा की सिद्धि के लिए कहा जाता है, कि जो पुरुष तमाका रूप भन को मन्मात्रा रूप परमेश्वर में स्थिर कर देता है, उसे अणिमा सिद्धि प्राप्त होती है।

२. महिमा — महिमा की सिद्धि के महत्व रूप भन को महत्व रूप परमेश्वर में स्थिर करना प्रह्लाद है तथा लघिमा की विलियि के लिए परमेश्वर के पंचाभूतात्मक स्वरूप का ध्यान किया जाता है।

३. लघिमा — लघिमा की सिद्धि में ईश्वर के पंचमूलक स्वरूप का ध्यान किया जाता है, अर्थात् इस सिद्धि के प्राप्त योगी पंचाभूतों में से कोई भी रूप ध्यान करने की क्षमता अनित कर लेती है।

४. प्राप्ति — इह महासिद्धियों में चतुर्थ प्राप्ति है, जिसका सम्बन्ध इन्द्रियों से होता है। इस सिद्धि को प्राप्त करने के साधनों पर भी संस्कृत के शब्दों में विशद प्रकाश डाल भया है। सातिक और रूप परमात्मा में जब वित्त की वृत्तियां केन्द्रित होती हैं, तो प्राप्ति नामक विलियि प्रकट होती है। इस सिद्धि को प्राप्त योगी किसी भी स्थान की वस्तु को अपने पास भांग सकता है।

५. प्राकाद्य — पंचम महासिद्धि प्रकाद्य है, इस सिद्धि को प्राप्त योगी लौकिक अथवा परालौकिक समस्त प्रशर्थों को इच्छानुरूप अनुचय कर सकता है। अष्ट महासिद्धियों की क्षमता में प्रकाद्य को प्राप्त करने के लिए महत्वपूर्णी मानी सूत्रात्मा के प्रति चिन की वृत्तियां को केन्द्रित किया जाता है।

६. वशिता — सातम महासिद्धि वशिता के प्राप्त होने पर विवर्यों में आरक्षि समाप्त हो जाती है तथा योगी का समस्त जीवों पर अधिकार स्थापित हो जाता है। इसके लिए तुरीय स्वरूप नारायण का ध्यान किया जाता है।

७. प्राकाम्य — अष्ट महासिद्धियों में अनिम है। प्राकाम्य इसे प्राप्त करने के लिए निर्गुण ब्रह्म की धारणा करनी पड़ती है। इससे समस्त कामनाओं का अंत हो जाता है तथा योगी को मोक्ष सुनाए हो जाता है। जब तक कामनाओं के बीज शेष रहते हैं, जीवों का पुनर्जन्म होता रहता है। कामनाओं के समाप्त होते ही पुनर्जन्म का चक्र भी दृट जाता है और नोक्ष मिल जाता है।

इस साधना को वसन्न पंचमी या किसी भी रथिवर के दिन प्रारम्भ कर सकते हैं। साधक स्नान कर रवच्छ उठन वस्त्र धारण करे तथा जप्तों के बाजोट पर लाल वस्त्र विछाएं। उस पर चावल से स्वास्तिक बनाकर उस पर 'अष्ट महासिद्धि यंत्र' का स्थापन करें। यंत्र पर केसर से आठ विनियोग लगायें एवं अशत एवं पृथ्य बढ़ा कर उसका पूजन करें, साथ ही शुद्ध घी का दीपक भी लगायें।

अष्ट सिद्धियों का ध्यान करें—

एवायेद् अष्ट सिद्धौ प्रकाम्य ।
कार्येत् सर्वा सराधक त्वं प्रथम् ॥

इसके उपरान्त अष्ट महासिद्धि माला से निम्न मंत्र का ५
माला मंत्र जप करें—

॥ उर्मै उर्मै उर्मै उर्मै उर्मै ॥

यह मंत्र जप नियमित ११ दिन तक करे ग्यारह दिन के बाद यंत्र और माला को नदी में प्रवाहित कर दें।

साधना फैक्टर - 350/-

मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान पत्रिका आपके परिवार का अभिभूत अंग है। इसके साधनात्मक सत्य को समाज के व्यापक रूप में समाज रूप से स्वीकार किया गया है, क्योंकि इसमें प्रत्येक दर्शक की समस्याओं का हल सरल और सहज रूप में समाहित है।

गौरवशाली हिन्दी मासिक पत्रिका

मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान की वार्षिक सदस्यता

इस पत्रिका की वार्षिक सदस्यता को प्राप्त कर आप पार्थोंगे अद्वितीय
और विशिष्ट उपहार



तेताल यंत्र आपके जीवन के समस्त शत्रुओं को पशास्त करने में सक्षम होगा, वहीं इस यंत्र के माध्यम से आप अपनी समस्त मनोकगमना ओं की भी पूर्ति करने में सक्षम होंगे, निश्चय ही यह यंत्र आपके जीवन के लिए अत्यन्त अद्भुत अवृत्ति का दाना प्रदान करने वाला सिफू होगा, आपको मात्र इसे पूजन स्थान में स्थापित करने के बाद नित्य यंत्र का सिर्फ संक्षिप्त पूजन करना है और तीन माह पश्चात इसे नदी में प्रवाहित कर दें।

यह दुर्लभ उपहार तो आप पत्रिका का वार्षिक एकल्या अपने किलो मिन्न, इष्टतेलार जा रहजल को बनाकर ही प्राप्त कर सकते हैं। यदि आप पत्रिका के दादर्च नहीं हैं, तो आप उससे भी सदर्च बनकर यह उपहार प्राप्त कर सकते हैं। आप पत्रिका में प्रकाशित पीटटकाड़ लंड्र को दप्त अक्षरों में भरकर हमारे पास भेज दें, ऐस कार्य हम उससे करेंगे।

वार्षिक सदस्यता शुल्क - 195/- डाक खर्च अतिरिक्त 30/-

सम्पर्क :

मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान, डॉ. श्रीगली मार्ग, हाईकोर्ट कॉलोनी, जोधपुर - 342001, (राज.)

मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान, डॉ. श्रीमानी मार्ग छाईकोर्ट कॉलोनी, जोधपुर - 342001, (राज.)

फोन : 0291-432209 फैक्स : 0291-432010

जा 'दिसम्बर' 2000 मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान '33'

उणकी बातें उण्होंने

रामकृष्ण नाडित विश्व, जबलपुर से लिखते हैं—

गुरु निरिखलेश्वर की बाणी की

जय हो जय हो जय हो !!!

जो भन्ह के सब धाव आज भी भरते हैं हरतम

इन जैसे सन्तों की बाणी से भारत जिन्हा

गुरु निरिखलेश्वरानन्द की बाणी की जय हो जय हो !!!

इनके अन्तर सरगम ने मोह लिया तुफानों को

दुनिया दोहराती है इनके अनमोल तरङ्गों को

कर गये जागृत ये सानव क्या जड़ पापाओं को

इतिहास करेगा नमन नदा ऐसे वीथानों को

इन अलशब्दों की हस्ती के जग में लहरे परचम

इनकी इस अनगुमानी की जय हो जय हो जय हो !!!

दे गये जिन्दगी के वस्तन अपने पतझरों को

सबके लिन झुला गये जग में रंगीन बहारों को

गा गये करीबा बन जीयन की अमर पुकारों को

वफाना सकता है औन भला इनके इकतारों को

ये सरण छिन्डोला झुल जनम का नाथ करें अमराम

इनकी इरर जान रकानी की जय हो जय हो जय हो !!!

इनकी चावर था आमान विज्ञार धरती का था

इनसे खुल आजे बढ़ भंजिन ने रचा स्वयंवर था

इनकी मुहुरी में बन्दी कलान्तरी कलान्तर था

इस निव पर संसार नहीं यह स्वर्ग निछावर था

इनकी संभग नीका पर चढ़ भव सागर निरसे हम

इनकी संकल्प कलानी की जय हो जय हो जय हो !!!

मनीष राव पाटोगे, लाटपुर से लिखते हैं—

ब्रह्मो नम है तेरी आँख किस बात पे रोया है त्

क्या बहते हुए असू शर्म नहीं आती तजे?

तू ही तो है प्रमाण मेरे होने का इस धरा पर

मैं तुश्मे हूं तू मृदमे हैं।

माना इस धरा पर मृदसे अलग तेरी कोई पहचान

तेरा कोई अर्थ नहीं।

पर कभी गौर से देख किसी गुलाब को उसकी खुशबू

उसका रंगों आव में है। नजरे उठा और देख गगन में धुमते मेघ
में मैं हूं।

देख वृत्त तक सागर में उमड़ता हुआ सेलाव में हूं। जूम
रही है प्रकृति जिसे पीकर वह शराब में हूं।

देख इस प्रधुबन में छाया हुआ शबाब में हूं। देख
लालों दिलों का सपना उनका हसीन रुपाल में हूं।

गर अब भी बकीन नहीं तजे तो बहाकर देख लहू
अपना देख हर कतरे में मैं हूं मैं हूं बस में हूं।

दूदते हो कहां मुझे मैं तो तुम से दूर नहीं हूं।

तुश्मे ही समाया तुम्हारी हर सांस हर धड़कन में मैं
हूं।

ओ मेरे मानस के राजहस सभव ही नहीं मेरे बिना
तुम्हारे प्राणों का स्पदन।

हे गुरुदेव — जी तो रहा हूं मगर बिना तुम्हारे जीने का
कोई अर्थ नहीं।

बिना तुम्हारे अधिगार है जहां साग फिर भेरी इन
आँखों का कोई अर्थ नहीं।

आप ये तो कभी मुरझायें न थे फूल क्या कहूं बिना
आपके कलियां भी मुरझा गईं फिर आपके इस उपवन का कोई
अर्थ नहीं।

सम्मोहन

जीवन का तात्पर्य है जीवन्त होना, जीवन में निरन्तर जोश होना, ऊर्जा का निरन्तर प्रवाह रहना, आंखों में एक सम्मोहन आकर्षण रहना। चिराग जलता है तो रोशनी देता है, लेकिन बुझता तभी है जब उसमें ऊर्जा प्रदान करने वाला तेल समाप्त हो जाए। जीवन ऊर्जा को सदैव जाग्रत रखा जा सकता है, आंखों में तेज रह सकता है, शरीर में आकर्षण रह सकता है सौन्दर्य स्थायी हो सकता है, केवल आत्म शक्ति जाग्रत रखकर -

यौवन तो एक ऐसी उमड़ती घटा है, जो जीवन में पता नहीं कहा से आकर बरसती है और जीवन को भिगो कर चली जाती है। इसकी कसक पृथिव उनसे, जिन पर यह घटा बरस कर जा चुकी है। उस स्थीर में पृथिव, जिसके छालों में कोई एक लट सफेद सी सलक नहीं हो या आखियों के नेचे एक झाँई आर आई है, और पहले की तरह लोग उसे टकटकी बोध कर न देखते हों, बस दूँ हो पास से गुजर जाने हों, फिर क्या-क्या उपाय नहीं करने पड़ते उसको, किनसे प्रकार की क्रीम, लोशन, फेस लोशन, बांडी लोशन, मिस्टरी वर्गी रह बैठक क्या कुछ नहीं करना पड़ता। अपने स्वर में भैंसे कैसे बदलाव लाना पड़ता है। दुष्कर्म्मा का वड खनक भरा गयोला स्वर लुम हो जाता है, रह जाता है तो याचना सी करली एक पतली आवाज।

पुरुषों पर! पुरुषों पर भी कम नहीं बोता है। युवावस्था में हो जो घटा आकर जाती है, उसकी मस्ती में दिन और रात का कोई भैंस ही नहीं रहता, न होती है स्वपनों की कमी, रूलभटा है, कि सारा

कुछ मेरों भी गुट्ठी में तो बद है। मैं ऐसे कर लूँगा, वह पा लूँगा, और सप्तमे हीं बच्चों, ये कठ साकार भी तो होता है उन्होंनो मैं। वहीं दिन जब समय के धौंधे खाते-खाते छल जाने हैं, तो एक जोशीना, जीता जाना इन्सान आहिस्ता-आहिस्ता एक पुर्जे में बदल कर किसी आफिस या किसी फैक्टरी की मशीन में फिट हो जाता है, और अतिरिक्त रूप में साधने आकर खड़ी हो जाती है घर को सम्पर्क, उसे फिर बीन पूछता है? उस पुर्जे को कोई स्नेह की, प्रेम की तरलता नहीं देता, उससे तो भले ही वे लोहे के पुर्जे, जिनमें रोज याद करके श्रीस तो लगा दी जाती है। आहिस्ता-आहिस्ता दाढ़ी पक जाती है, आखें बुझ जाती हैं और वह उन्होंसे भरना चाहता जाता है, उसका जोश चला जाता है, और रह जाती है, उगड़ी सोच। वह बोलना सीखने लगता है - हे प्रभु! ईश्वर सब देखते हैं, वहीं ठीक करेंगे। यह कथा एक या दो वर्षों की नहीं वरन् पूरी पूरी पीढ़ी की ही जर्ह है।

हम इसे एक व्यक्तिगत समस्या भी मान सकते हैं और समझि रूप में शारीर समस्या भी। जहाँ पूरी की पूरी पीढ़ी इस तरह से नेराश्य के बदलाव में धीरे-धीरे जा रही हो, उसकी आंखों के सपने मलिल पड़ रहे हों, वहाँ सम्पूर्ण रूप से देश पर प्रभाव पड़ता ही है, और धीरे-धीरे एक राष्ट्र निष्क्रिय, निरुत्साह और नफूसक सा ढो जाता है। मन का नेराश्य और दैन्य व्यक्ति को असमय बूढ़ा कर ही देता है, वह दृढ़ता रखता है, कि जीवन में ये स्वप्न मिले, नई आशाएँ मिले और वह अपने सपनों की मूर्त रूप दे सके, लेकिन उसके शरीर के और मानस के दृटे तन्तु उसे ऐसा घटित नहीं करने लगते।

जीवन की उस शटाटोप स्थिति में कोई भी जिज्ञासा, कोई भी समाज शास्त्र या कोई भी विधि शास्त्र आगे बढ़कर व्यक्ति की मदद नहीं कर सकता। धीरोंके स्वनृद्धि भी इनके नियकरण का उपाय नहीं, यदि ऐसा ही होता, तो परिचय के देवों की यह स्थिति न होती। जिस रूप में वहाँ की युवावस्था इसारे लिये बुद्धावस्था का पर्याय बनती जा रही है, उसे तो व्यापोह की ही भेजा दी जा सकती है। युवावस्था का अर्थ केवल तेज स्वगत, तेज हाशिंग, और कुछ रटे रटाये वाक्य करने उचका कर बोल देना ही नहीं।

अपितु योद्धन तो कुछ और आदा ही होती है, कि व्यक्ति बले और लगे, कि कोई जिज्ञासी सी चमक रही है, वह इसे और लगे, कि कोई चिनगारी पूट रही है। युवावस्था का जो उर्ध्व दृग्मन समझा है, वह तो भ्रातृ सी निकालने वाली बात है, युवावस्था के सभी रूप से ल्यल न हो पाने की, और यह सारी तथाक्रियाएँ तो अधिक्यति है अपनी कुण्ठाओं की।

जीवन की ऐसी छन्द भरी स्थिति का केवल एक ही उपाय है, कि व्यक्ति के मन को स्वप्न किया जा सके। कुछ ऐसा किया जा सके, कि मन जो असमय बूढ़ा पड़ जाया है, उसमें कुछ बदलाव किया जा सके। शरीर तो केवल प्रकट करता है हमारे अन्दर की स्थितियों को, चेहरे तो बस बता देता है मन के विषाद को। इसने तो अपने को और अपने अस्तित्व को चेहरे और देह तक ही समझ लिया।

तृसरी भूल है यह ही, कि हमने अपनी भारतीय आस्तों को लेकर भी जब उपाय खोजे, तो उनका भी कुछ ही अंश निया या दी जाए, कि कुछ बहुर व्यापारियोंने उन शास्त्रोंमें से जो कुछ बिकाऊ



निकाला, वह छाट कर अच्छी पैकिंग व नेचरल के भाष्य परिचय के बाजारों में रख दिया, किर बात चाहे गोंग की हो या कुण्डानी जगरण की, सम्मोहन की हो या ध्यान की, सब कुछ आकर्षक उन्नते के चक्कर में भाँडा सा बचा दिया और मानसूम सा तक दिया, कि ये परिचयमी लोग हस्ती तरह तो समझेंगे।

सम्मोहन के साथ ही ऐसा ही रहा। सम्मोहन का अत्यन्त व्यापक क्षेत्र स्पष्ट नहीं हो सका, क्योंकि उसका आकर्षक पथ, कि हम किसी को भी अपने वश में कर सकते हैं, बस यही प्रत्येकिता किया जाया और वह लोकप्रिय हुआ। सम्मोहन उद्देश-उपाय में एक सम्पूर्ण विधा है। सम्मोहन के द्वारा किसी पक को या दो को वश में करना तो उसका बहुत छोटा उपयोग है। सम्मोहन के उपयोग से तो हजारों हजारों की भाँड़ को अपने वशवती किया जा सकता है। यह काचाकल्प की भी सम्पूर्ण विधा है, सम्मोहन तन्तुओं के पुनर्गठन की व्यवस्था है, एक सर्वथा नवीन व्यवस्था है और एक सर्वथा नवीन रथना कर लेने का आधार भी है।

सम्मोहन के क्षेत्र में प्रविह होते ही उम चाहें या न चाहें अल्प अदेश मारतीय विद्या की आधारभूत 'प्राण विद्या' में ही जाता है। इस जगत में तो कुछ भी है, वह प्राण ही तो है। इसी प्राण विद्या का आधार लेकर और योग्य गुरु के निर्देशन में इसका प्रबोध कर, योगी दीवन की प्रापि भी संभव है।

सम्मोहन विज्ञान का यह रहस्य कोई जटिल रहस्य नहीं है। यह व्यक्ति सम्मोहन ज्ञान के क्षेत्र में आगे बढ़कर शरीर का नियन्त्रित होने के क्षणों में इस बहाएँड में बिरुदे ऊर्जाओं का नियन्त्रित होना है। यह दूसरे शब्दों में कहें, कि अपने अंदर के बहाएँड का दुन योग्य करता है, तो वे बिस्ते ऊर्जा जहाँ एक और संघटित होकर युग्मकर्त्य बढ़ाते हैं, वही शरीर में विद्युतिन हो गये उत्तकों को नियन्त्रित कर युवावस्था भी प्रदान कर जाते हैं। युवावस्था और कृष्णवस्था जहाँ उत्तकों के संघटन और विघटन की दशाएं विज्ञान के मत में भी होती हैं।

पृथ्वीपाद गुरुदेव ने एक बार इसी तथ्य को स्पष्ट रूप से बताया था, कि 'मनुष्य की आधारभूत शक्ति, उसकी प्राण शक्ति होती है, जो आत्म शक्ति को जाग्रत करती है, और इन दोनों शक्तियों के जाग्रत होने पर जो ऊर्जा उत्पन्न होती है, वही व्यक्ति की सम्मोहन शक्ति को जाग्रत करती है, यदि एक शक्ति का उपयोग दूसरी शक्ति को जाग्रत करने में करते हैं, तो ऊर्जा का सम्पुर्ण दोनों हैं अन्यथा एक ऊर्जा दूसरी ऊर्जा से टकरा कर नहीं भी हो सकती है।' फ्रमबद्ध रूप से गुरु के निर्देशन में की गई साधना व्यक्ति के आनंदर सम्मोहन की स्थाई दशा प्रदान करती है।

सम्मोहन के बीच ऊर्जाओं का सम्बन्ध विघटन या उत्तकों का पुर्णरुद्धरण ही नहीं है। सम्मोहन जब अपनी आधा के रूप में भी व्यक्ति के चेहरे पर, उसकी वाणी में उनर जाता है, तो उसे ऐसा आकाद और ऐसा अल्पविश्वास दे जाता है, कि व्यक्ति के अन्यर मनोविज्ञानिक स्वप्न एवं नर्वीन आशाएं, सुनन की गई कामनाएं सब कुछ उभर आती हैं। युवावस्था भी शास्त्रीय अवस्था से अधिक मानसिक उच्चस्था ही तो है।

सम्मोहन साधना सम्पन्न कर चुके साधक की अदाओं से या सम्मोहन दीक्षा प्राप्त कर चुके सौभाग्यशाली के नेत्रों से, उसके सम्पूर्ण व्यक्तित्व में ही कोई विरक्ति सी जो आ जाती है।

वह चलता है, तो लगता है, कि कहाँ सिंड अल्हह होकर वन में दूम रहा हो, और उन्हीं अद्यार्थों पर चिठ्ठ बिठ्ठ जाती हैं युवतियाँ।

सम्मोहन साधना का अर्थ और सम्मोहन ले मिल यीवत का आत्मपर्य यही नहीं, कि आपके चेहरे पर प्रकाश बढ़ जाय, सम्मोहन तो दीवन तच बना, जब आपको एक-एक अदा अलमस्ती बाली हो गयी, और यही अलमस्ती तो पूरे जीवन का सार है।

इस विश्व की सौन्दर्य बोध की दृष्टि भारत ने ही ही है और वही इसे पुनर्वास्तुवायित भी करेगा। पत्रिका में प्रकाशित समस्त सीन्दर्य साधनाएं शनैः शनैः साधक को उस मावभूमि पर ले जाने की चेष्टाएँ हैं जहाँ वह सीन्दर्य के व्यापक रूप का बोध आत्मसात कर सके।

एक छोटा बच्चा जब पढ़ने जाता है तो उसे छोटा 'अ' से अनार पढ़ाया जाता है यथापि छोटे अ से अभ्यर्थना जैसा ग्रन्ड भी है विन्तु वह बच्चा उस शब्द का भाव ग्रहण नहीं कर सकता।

सीन्दर्य की वैदिक रूप में वर्णित करने का भी यही कारण है। यदि कोई साधक सीन्दर्य साधना से निरन्तर जुड़ा रहे तो एक बिन मह सम्पूर्ण प्रकृति उसके सम्रक्ष अपना सीन्दर्य स्वयं प्रकाट करने लग जाती है।

स्त्री व प्रकृति को एक ही माना गया है भारतीय संस्कृति में और यह कैसे सम्पत्त हो सकता है कि कोई अमृत का स्वाद चर्खा लेने के बाद भी भूसी में स्वाद प्राप्त करने की चेष्टा करे?

अप्सरा के रूप में सीन्दर्य का वर्णन करना वास्तव में इस प्रकृति के सीन्दर्य का वर्णन करना ही है और इसी प्रकार से Personification के माध्यम से ही तो कुछ ऐसा अभिव्यक्त किया जा सकता है जो सहज रूप में ग्राह्य बन सके।

प्रकृति के अन्तर्स्म में निहित उस अलीकिक सौन्दर्य को देख लेने के बाद किसी और सीन्दर्य को भोगने की कामना तो दूर, देखने तक की कामना मन में शेष नहीं रह जाती है।

'रसी वे सः' अर्थात् वह रस रूप में है ऐसा कहा गया है उस ईश्वर के विषय में और जो सरस है उसे कोई नीरस बन कर कैसे प्राप्त कर सकता है?

इसी दृष्टिकोण से गुरुदेव के भगवत्पाद शंकराचार्य के सम्बन्ध में उच्चरित उपरोक्त वाक्यों के अर्थ की सार्थकता आत्मसात की जा सकती है।

काम या सीन्दर्य, वासना या प्रवाह, उद्भव या विनाश सब कुछ अन्तरोगत्या एक ही भाव में निहित है और वह भाव है व्यक्ति की जीवन शक्ति {Vitality} का। एक सीन्दर्य साधना से प्राप्त करते हुए साधक को स्वतः ही सब कुछ वह समझ में आने लग जाता है। जो गंधों के अध्ययन से आत्मसात नहीं किया जा सकता है।

त्रिलोचना आकर्षण प्रयोग

क्या आप में आत्मविश्वास की कमी है?

क्या आपका इच्छित कार्य पूरा नहीं होता है?

क्या आपका पति किसी और के प्रति अनुरक्त है?

क्या आपके व्यक्तित्व से सामने वाला प्रभावित नहीं हो पाता?

इन्हीं प्रश्नों का समाधान प्रस्तुत है . . .

जब चारों ओर ओस की छूटें पानी पर मोतों की तरह दिलाई ढेर होती थीं, जब चारों ओर धूध डाई हुई थीं और ठंडी शीतल पद्धन मन को आहारित कर रही थीं, तभी उस सुनकरे वातावरण के बीच एक प्रकाश सा चमकना हुआ दिखाई पड़ा, पास आने पर उनुभव हुआ, कि यह तो एक बिला पर कोई साथ अपने होठों से बुद्धुदा रहा है, और एक प्रकार की विचित्र आपा सी उचके चारों ओर दिखती हुई है, दिखने में वह बड़ा तेजस्वी एवं पर्याक्रमी दिखाई देता था, उन्हें देखकर तो कोई भी अपने सुध-बुध खो बैठे, एक अद्भुत सौन्दर्य, जो अन्धों को मोहित कर रहा था, वेद्य एवं उच्चकोटि के योगी "स्वामी श्रेयानन्द जी", जिन्होंने अपने जीवन काल में अनेक बुलंद तांत्रिक साधनए मिला कर रखी थी और उन्हीं साधनओं के बल पर ही उनका सौन्दर्य इतना अद्भुत और अद्वितीय बन सका।

उन्हीं द्वारा प्राप्त उस विव्य साधन को यहां विवेचित किया

जा रहा है, जो कि अपने आप में श्रेष्ठ एवं अद्वितीय साधन है, और जिसे भिन्न कर साधक एक प्रकार के आकर्षण को अपने पुरे शरीर में समाहित कर नहा है।

उन्होंने बताया कि त्रिलोचना एक ऐसी देवी है, जिसकी देहकानि उत्तम होते सूर्य के समान है, और देह का वर्ण सिन्धुर के समान असूण है, सौन्दर्य का साकार पुञ्ज है यह। इस देवी की विकृण दृष्टि किसी साधक पर ही जाती है, तो वह उसे सम्पूर्ण सौन्दर्यशाली बना देती है, जिसे देखकर कोई भी स्त्रमित खड़ा रह जाए, फिर कोन नहीं चाहेगा ऐसी श्रेष्ठ साधना को सिद्ध करना, कीन नहीं चाहेगा, कि उसके बेहरे पर ओज न हो, तेज न हो . . . कुछ ऐसा ही, जिसे देखकर कोई भी अपनी सुध-बुध खो बैठे, और बाध्य हो जाए टकटकी लगाकर देख लेने को, उसे छु लेने को, उसे पा लेने को, उसमें समाहित हो जाने को . . . ऐसे सौन्दर्य को, ऐसे प्रभावयुक्त व्यक्तित्व को, ऐसे आकर्षण को प्राप्त करने के लिए तो

जैसी इन्सुक रहते हैं, और साधारण मानव ही नहीं अपितु अप्सराएं वह मन्दर्ष भी ऐसा आकर्षण युक्त केह की प्राप्ति के लिए सर्वथा जाग्रित रहते हैं।

... और त्रिलोचन ऐसी ही बेबो है, जो अपने भक्त एवं अपने पर प्रसन्न हो उसे ऐसी बेड़, ऐसा व्यालिंग प्रदान कर देती है, वह दूसरों को बरबर अपनी ओर आकर्षित कर लेता है।

त्रिलोचन आकर्षण एक तातोक प्रयोग है, जिसको त्रिपूरा नव तथा भूत हामर में विघ्नत रूप से विवेचना की गई है, जो कि अन्त ती महात्मारूप एवं दुर्लभ प्रयोग है, और जिसको सम्पन्न करने से व्यक्ति का काटकलन नक्क हो जाता है।

इस श्रेष्ठ प्रयोग को सम्पन्न करने पर निम्न लाभ साधक को प्राप्त होते ही हैं—

१. वह किसी स्त्री का पति दूसरी स्त्री के चक्रमें हो, तो इसे सम्पन्न कर उसे अपनी ओर आकर्षित किया जा सकता है।

२. कैसा भी सूर्ण शरीर हो, उसे पूर्णत्व से स्वरूप किया जा सकता है।

३. कमजोर व वृद्ध व्यक्ति भी इसे सम्पन्न कर पुनः वीक्षनकान बन सकता है।

४. इस प्रयोग को सम्पन्न कर किसी को भी अपने बड़ा में किया जा सकता है।

५. इस प्रयोग द्वारा साधक सुन्दर, बलशाली, पराक्रमी और तेजस्वी व्यालिंग प्राप्त कर लेता है।

६. इस प्रयोग को करने से उसके मन में किसी भी प्रकार की कोई हीन भावना नहीं रह जाती है।

७. वह आत्मविश्वास को बढ़ावा देने वाला महत्वपूर्ण प्रयोग है।

८. जिस स्त्री को प्राप्त करने की चाह साधक के मन में हो, यह प्रयोग सम्पन्न कर लेने पर वह स्वतः ही आकर्षित होकर उसके समक्ष उपस्थित हो जाती है।

९. इसे सम्पन्न करने पर वह साधक जिस किसी भी व्यक्ति से चाहे अपनी बात आसानी से मनवा सकता है, और वह जो भी कहता है, नोग उसी को सँझी मान देते हैं।

१०. इसे सम्पन्न करना बाह्य कार्य सिद्ध किया जा सकता है।

११. साधक जड़ इस प्रयोग को सिद्ध कर लेता है, तो उसके शरीर के छाँस और एक प्रकार की आधा सी दिवाहि देने लगती है।

१२. यह एक अद्भुत एवं गोपनीय प्रयोग है, जिसे सम्पन्न करने पर इसके परिणाम स्वतः ही साधक को अनुच्छ होने लगते हैं,

किसी को भी बड़ा में करने का अचूक प्रयोग है यह।

इस दिव्य साधना के प्रभाव से जब रम्भा और उवेशी को भी अकृष्ट किया जा सकता है, तो फिर मनुष्ट के आकर्षण में क्या आउच्छय।

यह ऐसा ही श्रेष्ठ एवं अश्चर्षचिन कर देने वाला प्रयोग है, जिसे प्रत्येक साधक वी सम्पन्न करना हो बाहिर, और पुरुषों को उपेक्षा यदि भी इस प्रयोग के नामन लरल, तो वह पूर्ण वीक्षनकान, आकर्षण एवं सम्मोहित कर देने वाला सौन्दर्य प्राप्त कर लेती है, फिर उसके बारे शरीर में वीक्षन का ऐसा स्थान लड़राने लगता है, कि उसे देखकर कोई भी पुरुष अपने आप में नहीं रह पाता, फिर वह एक बार भी यदि किसी को पलक उठा कर देख ले, तो वह उसके प्रभावित व आकर्षित हुए बगीर नहीं रह पाता।

इस प्रकार इस दुर्लभ साधना को कोई भी स्त्री या पुरुष सम्पन्न कर सकता है। यह अपने आप में ही एक अद्वितीय एवं श्रेष्ठ साधना है। यह अपने आप में एक चमत्कारिक प्रयोग है, जिसे साधक को किसी भी शुक्रवार या रविवार के दिन सम्पन्न करना चाहिए।

साधना विधि

साधकों को चाहिए, कि ब्रह्म मुहूर्त में उठकर या फिर सध्य रात्रि को इस साधना को सम्पन्न करें, और स्नान आदि से निवृत डोकर, सफेव रंग की धाती पहिन कर तथा सूर्णी अथवा ऊनी सपेव आसन पर उतारायिमुख्य होकर सुखासन में बैठ जाएं। फिर अपने सामने पूजारूप में शिलोचना आकर्षण बंत्र और 'सम्मोहन गुटिका' को एक नक्की के ब्रांजी पर ल्यापित कर दें। इसके पश्चात साधक गुरु गूजन, यंत्र पूजन तथा सम्मोहन गुटिका का पूजन धूप, दीप, कुलुम आदि से करें तथा पुष्प चढ़ाकर नैवेद्य आदि का प्रोग लगायें।

इसके पश्चात साधक तीन बार 'ॐ' का उच्चारण कर गुस्थायन सम्पन्न करें तथा अपनी इच्छ नुसार गुरु बंत्र जप सम्पन्न करें। इसके बाद गुरु बंत्र से मन ही नव साधना में पूर्णता प्राप्त करने के लिए प्रार्थना कर उनका आशीर्वाद ग्रहण करें, और तब शिलोचना माला' ले ११ माला निम्न मंत्र का जप सम्पन्न करें—

मंत्र

// ॐ हूँ ऐं आकर्षण वशीकरणात् फट् //

मंत्र जप सम्पन्न करने के पश्चात गुरु आरती सम्पन्न कर दें। परिवार में भोग वितरित करें, तथा कम से कम बात करें।

इस साधना को सम्पन्न करने के पश्चात उस बत्र, गुटिका तथा माला को किसी नवी अथवा तालाब में विसर्जित कर दें। यह विसर्जन की किंडा साधना सम्पन्न करने के दूसरे दिन करें।

साधना पैकेट - 350/-

सांदीपन प्रणीत

सम्मोहन

वशीकरण प्रयोग

जिसे श्रीकृष्ण एवं बुद्ध ने सम्पन्न किया

सम्मोहन का यह ऐसा अनृत प्रयोग है, जिसमें व्यक्ति अनन्द-अलग-भवि-पुस्त को आकर्षित नहीं करता, बरन् स्वयं को ही एक रेखा विशिष्ट चक्राचौथ युल सम्मोहक शक्ति ये आपनावित कर लेता है, कि यामन बाला उसे देखते ही उठकर रह जाय। इस हेतु यह आवश्यक नहीं, कि व्यक्ति गाहीरिक रूप से भी बहुत लम्बा चाढ़ा, आकृष्ण छोड़ तो उसने आप का कुछ भये विशिष्ट बीज मत्रों से भजा लेना है, जिसने कि आपके प्रभाव से लोग आपके पास चिंच लेकर रहने को इच्छा करे।

उस स्थान को लूपन के बाद नो सुन्दर चित्रण। उस व्यक्ति के पासी और चक्रवर ही लगाने लग जाती है, पर्याप्त नहीं, यह आधना घर के लहड़ाई-झगड़े समाप्त करने, आक्रिय के कलह का निपट रा करने में भी सफल रूप से उपयोगी सिद्ध होनी देखी गई है।

यह वास्तव में सम्मोहन और वशीकरण दोनों ही प्रक्रियाओं का मिल गुला रूप है। इस साधना में जिन सामग्रियों की निरान्त

आवश्यकता पड़ती है, वे ही सम्मोहन वशीकरण यंत्र नया सम्मोहन माला जो प्राण प्रनिष्ठित हो। विली भी शुक्रवार की रात्रि में दस बजे के पश्चात साधक उत्तर विशा की ओर मुह करके मुन्हर वस्त्रों से मूसिजित होकर, धील आसन बिछाकर बढ़ जाये। स्वयं योगी यातो पड़ने व्य पीला आमन व सामन योगी ही वस्त्र चिठ्ठा हो। यामन योगी की योगी में सम्मोहन यंत्र को स्थापित कर उनके कुरुम, अक्षत व पुष्प से पूजन कर, उसके बाहर सम्मोहन माला व निम्न मंत्र की ज्ञारह माला तप करे।

मंत्र

॥ ॐ सुदर्शनाय विद्महे महाज्योत्स्याय
धीमहि तप्तश्वकः प्रचोदयात् ॥

यह प्रयोग इनना तीव्र है, कि तीसरे व चौथे दिन ही व्यक्ति आपने चौहरे में एवं लोगों के व्यवहार में परिवर्तन अनुभव कर सकता है, फिर भी यदि उस प्रयोग के कुछ समय तक बसाह जे प्रति शुक्रवार को दोहराया जाता रहे, तो नामशक्ति रहता है।

साप्तना सामर्यी एकट - 300/-

शिष्य धर्म

गुरु से बढ़कर न शास्त्र हैं, न तपस्या, न मंत्र और न ही रत्नादि पदलक। गुरु से बढ़कर ज्ञेय हैं, न शिष्य ही गुरु से बढ़कर हैं और न ही मोक्ष या मंत्र जप। एक मात्र सदगुर ही सर्वप्रेष्ठ है।

गुरु की पूजा करने से दृष्टि की पूजा हो जाती है, गुरु का तर्पण करने से और गुरु भक्ति करने से ही धर्म का तर्पण व भक्ति हो जाती है। गुरु बहुवचन करने से ही रात्रेवत्-वेत्तियों की उत्तुति सम्पन्न हो जाती है। ऐसा ही शिष्य को समझना चाहिए।

गुरु शिष्य को अपने रामकथा बनाने का सौदेव प्रयास करते हैं, और हसी कारण से उन्हें उत्तरां लक्ष्यप्रश्नम् शिष्य के अग्रुद्धरप रूप धारण करना पड़ता है, परन्तु यह शिष्य की अझालता होती है, जो तब गुरु को सामाजिक मनुष्य के रूप में देखता है, उसके लिए ऐसा चिन्तन दुर्भाग्यपूर्ण होता है।

गुरु जो भी आङ्गा देते हैं, उसके पीछे कोई रहस्य अवश्य होता है, अतः शिष्य को विना किसी रात्रिया के गुरु आङ्गा का अविलम्ब पूर्ण तत्परता से पालन करना चाहिए, क्योंकि शिष्य दृढ़ जीवन में क्यों आया है, उसका इस गुण में क्यों जल्म हुआ है? तब इस पृथक्षी पर लक्षा कर सकता है, हठ लावका द्वान केरल गुरु को ही हो याकता है।

शिष्य शिष्य के मन में यह अहंकारी भाव है, कि मैं एक ब्रेष्ट जाति में उत्पन्न हुआ हूँ, मैं बहुत धनाहरा हूँ, मैं बहुत ऐश्वर्यवान हूँ, मेरे परिवार बहुत सुप्रतिष्ठित है, मेरा यथा बहुत फैला हुआ है, या मैं बहुत तिट्ठान हूँ आदि, तो उसे गुरु के रामुख उपारेयत वहीं होना चाहिए। इन भावों को तिरोहित कर ही गुरु कृपा ग्रास की जा सकती है।

गुरु की कृपा से सम्पूर्ण द्वान को प्राप्ति सम्भव है, क्योंकि गुरु से वह कोई अन्य तत्व नहीं है, अतः मोक्ष मार्ग पर चलने वाले शिष्य को सौदेव गुरु का ही चिन्तन, मतल करते रहना चाहिए।

गुरु कृपा से ही बहा सृजन में, विष्णु पालन में तथा ऊद्धरणार करने में समर्थ हो पाते हैं, अतः शिष्य को गुरु सेवा परम सोभाग्य समझना चाहिए। रामरत्न भारतीय ऋषि परम्परा द्वारा बात का जीवन्त प्रमाण है, कि गुरु सेवा द्वारा ही सर्वेव प्राप्ति सम्भव है।

शिष्य को वाहिए कि वह वल, दान, तीर्थ, तप आदि में अधिक न उलझ कर गुरु को ही अपने जीवन में रातीच दथान दे। जीवन में गुरु के होने से ही ये याहा, जप, तप आदि कियाएं भी कल दे पाने में समर्थ होती हैं।

शिष्य अपने जीवन में पूर्णता चाहता है, तो उसके लिए गुरु साधाना आवश्यक है, क्योंकि गुरु ही परम तत्व है।

गुरुवारी

* अगर भगवान को साक्षात् देखना है, उस प्रभु के सामने नृत्य करना है, उस प्रभु को अपनी आँखों में बसा लेने को

किया करना है, तो वह उन्हीं हृदय धारण कर ही देखा जा सकता है। उन्हीं का अर्थ है, जिसका हृदय पक्ष जाग्रत हो, क्योंकि हृदय पक्ष को जाग्रत करने की किया ही प्रेम है।

* पुरुष हमेशा आद्य हृदय पक्ष से और आद्य बुद्धि पक्ष से सौचता है। इन दोनों से चरता है, कि वह उत्तित है या अदृचित, करना चाहिए कि तर्हीं करना चाहिए, ऐसा करना ठीक रहेगा कि नहीं रहेगा, ऐसा करदे से लोग क्या कहेंगे? क्या तर्हीं कठोर है? यह सब बुद्धि सौचती रहती है, और अगर मनुष्य ऐसा सौचता है, तो वह प्रेम नहीं कर सकता।

* शिष्य भी उन्हीं बनकर गुरु को प्राप्त कर सकता है, हृदय पक्ष को जाग्रत करके अपने आप में चेतना प्राप्त कर सकता है, उस भावना को प्राप्त करके कि मेरा केवल एक ही चिंतन, एक ही तथ्य, एक ही धारणा है कि अपने जीवन में गुरु को आत्मसात कर सकूँ, जीवन में ही जहीं, अपने प्राण में आत्मसात कर सकूँ, प्राणों में ही नहीं मेरे रोम-रोम में, रेणी-रेणी में, रग-रग में गुरु रुथायित हो सकें।

* पूरे शरीर में, रोम-रोम में गुरु को बसा लेने की लो झूक जाने की लो किया है, वह प्रेम के माध्यम से ही समझत है।

किया है, गुरु में

* देखना चाहो तो चारों ओर
तुम्हारे मैं ही तो खिखरा हूं। कण कण मैं मैं ही तो
स्पन्दित हो रहा हूं, कण कण मैं मैं ही तो सुरभित हो रहा
हूं। अपने बगल मैं खिले उस पुष्प को देखो! उसमें मैं ही नहीं
हूं क्या?

* यह बात और है, कि तुम उस लय को देख पाओं
या न देख पाओं, उसके कहे गीतों को सुन पाओ या न सुन
पाओ, किन्तु इसमें न्यूनता उस पुष्प की नहीं है, पुष्प ने तो
अपना कार्य कर दिया, कर के विलीन हो गया। यह तो क्षण
पकड़ने की बात होती है।

* अध्यात्म का अर्थ स्वयं के उसी सौन्दर्य से परिचित हो
जाना है। जो सौन्दर्य अपने देवत एक ओश में दुम्हारे
समक्ष कहीं पुष्प बनकर खिला है, तो कहीं आकाश में
फल प्रलिप्त बदलते रहे में छिपा है। एक आकाश लौं
दुम्हारे भी भीतर है वल्स! जाना नहीं इसे दुम्हने? वहीं
तो भावों के घने मेंदों की तरह तैर रही हैं अनके
साधना तिलियाँ!

* साथ ही मेरा स्वह तो यह भी है कि मेरे
शिष्य उस पवित्र भूमि का स्पर्श कर, अपने जीवन
को धन्य कर, उसकी चेतना से ओतप्रोत हो
कर, वहां की स्निग्धता मैं तरल होकर, वहां
की पावनता से पवित्र होकर वहां की ज्योत्स्ना
से शुभ्र होकर पुनः इस समाज में लौटे और समाज
को स्पष्ट और प्रामाणिक विवरण दे सके। बता
सके कि बिना भौतिकता को छोड़े हुए भी
कैसे जीवन के उस सर्वोच्च लक्ष्य को
प्राप्त किया जा सकता है।

प्रयाग महाकुम्भ-माघमास

कुम्भ विदेशी अवधि का आस्थाक

जीवन में अनृतमय क्षणों का आस्थाक

भारत वर्ष में हृषिक्षार प्रयाग पंचवटी (नायिक) और उर्जीन दुन चार स्थानों पर प्रति बारहवें वर्ष कुम्भ पर्व आयोजित होता है जिसमें भारतवर्ष और विदेशी से भी लाखों करोड़ों व्यक्ति पूरे मास दुन स्थानों पर आकर ध्यान, तपस्या, स्नान साधना सम्पूर्ण करते हैं। क्या यह केवल एक धार्मिक रूप ही है अथवा इसके पीछे कोई ऐतिहासिक आधार भी है, कुम्भ केवल चारों स्थानों पर ही क्यों सम्पूर्ण होता है। साधक को जिज्ञासा उवाचिक है और जो मन्त्र तंत्र तीर्थ देवता छत्यादि को दोंग ढकोलाला समझते हैं उन्हें हमारे साधक साटिक उत्तर दे सकते हैं —

पिछले वर्ष मुझे विदेश जाने का अवसर मिला और वहाँ कई विदेशी व्यक्तियों से बातचीत हुई और उन्होंने कहा कि आपके देश में धार्मिकता बहुत है, लेकिन कई बार ऐसा प्रतीत होता है कि धार्मिकता के ऊपर अधिविश्वास इती होता जा रहा है क्यों वहाँ के प्रत्येक पर्व इत्यादि का कोई ऐतिहासिक आधार है अथवा नहीं? हमारे यहाँ तो ईस्टर, गुडफ्रायडे, क्रिसमस का सीधा सम्बन्ध क्राइस्ट ऋथात ईसामसोह से है। लेकिन आप के यहाँ हर दो तीन महिने में कोई न कोई पर्व पड़ते रहते हैं।

इसके अलावा उन विदेशीयों ने एक प्रश्न विशेष रूप से पूछा कि हर तीन साल आदि भारत में नहा कुम्भ पर्व आता है। और

पिछले कुम्भ के सम्बन्ध में इसने पढ़ा कि उस समय कुम्भ में करीब दो हाई जरोड़ लोग एक महीने ने आए थे। उन्ने अधिक लोगों की व्यवस्था कैसे सम्भव हो गती है। इसके अलावा न तो कोई नियमण पत्र मैंना जानता हूँ, अपने जाष लोग कैसे आ जाते हैं। उन्होंने कहा कि मेरे एक मित्र को पिछले कुम्भ में जाने का अवसर मिला तो इसना विशाल जन समूह देखकर डंग रह गया। धार्मिक आस्था से भरे इसने अधिक लोगों को उसने व्यवस्थित सप्त सौ वर्ष जीवन में कभी देखा नहीं था। 'विश्वना' आन्द्रिया देश की राजधानी है और आन्द्रियों की कुल जनसंख्या ३० लाख है। उसने कहा कि मैं यह सौ वर्ष सोच कर ही परेशान होता हूँ कि मेरे देश की जनसंख्या से चार गुना लोग एक

नान लक्ष्मण के जाए तो हमारी सरकार पुलिस कैसे व्यवस्था करेगी।

युगोप में दस बीस हजार लोगों का जुलूस द्या पर्व होता है जो उम्मीद नियारियों महीनों पहले प्राप्तम्भ हो जाती है। और आपके छह तो २०-३० मिलीयन अर्थात् दो तीन करोड़ लोग एकत्र होते हैं और व्यवस्था अपने आप हो जाती है। गांधी शहर शहर में कीन लोक में स्थान है, कि इस तारीख से इस तारीख के बीच में कुछ पर्व हो जाय कुभी में स्थान करने के लिए प्रयाग, हरिद्वार, नासिक, उज्जैन जूद।

मैंने कहा कि आप की संस्कृति केवल दो हजार वर्ष पुरानी है और सभ्यता का पूर्ण विकास आपके दशों में पिछले हजार बारह वर्षों में हुआ है। और इन हजार बारह सौ वर्षों में उपनीं नुविधा के अनुसार नियम बना लिए हैं। हमारी सभ्यता को वैदिक सभ्यता ही नहीं वैदिक सरकृति कहा जाता है, जो सभ्यतय श्रीपिण्डी हजार साल पुरानी है। उस समय वेदों की रचना के साथ ही पूर्ण गणना और नियम बनाए गए। और उन नियमों का पालन विधि से किया जाता है। हमारे श्रीपिण्डी द्वारा कोई भी नियम अस्पष्ट, अपनी इच्छा से नहीं बनाया गया। इन नियम के पीछे वैज्ञानिक दृष्टि से एक परम्परा है। और उसे सिद्ध करने की आवश्यकता नहीं है किंतु भी आपके ग्रन्थविश्वास को भिटाने के लिए मैं स्पष्ट कर देता हूँ कि इन चार स्थानों पर कुछ पर्व अब और क्यों सम्पन्न होता है?

कुंभ पर्व धोराधिकरण वक्तव्य

पुराणों में विवरण आया है कि मदराचल पर्वत को कील बनाकर बासुकी नाम को रस्सी बनाकर समुद्र मंथन किया गया तो चतुर्दश रात्न समुद्र से प्रवर्द्ध हुए और उनमें एक रन्न अमृत से भरा हुआ घट भी था। इस अमृत कलश को अपने अधिकार में लेने के लिए देव और दानव दोनों 'अहम पूर्वम् अहम पूर्वम्', पहले मेरा अधिकार है पहले मेरा अधिकार है कहते दृष्ट पड़े। अगवान विष्णु के संकेत पर देव गुरु बृहस्पति के नेतृत्व में इन्द्र पुत्र जयन्त ने इस अमृत कुम्भ को उठा लिया यह अमृत कुम्भ कृष्ण नाम, इस छेत्र सूर्य को हसकी रक्षा के लिए नियुक्त किया इसके साथ ही यह अमृत कलश भूख ना जाए इस छेत्र चन्द्रमा को नियुक्त किया। देवगण इस अमृत कुम्भको छुपाने के लिए तीनों लोकों में युगे परन्तु वानरों ने सर्वत्र उनका पीछा किया पृथ्वी लोक पर विव्य बारह दिन तक धमण करते हुए उक्त अमृत कुम्भ को चार बार भूमि पर रखने का अवसर आया और इसे चार बार रखते उठाते कुछ अमृत कण झलक कर इन स्थानों पर विस्तर गए। जहां जहां अमृत कुम्भ रखा गया था वे स्थान हरिद्वार, प्रयाग, नासिक और उज्जैन थे। विव्य बारह विवर मानव वर्षों के बारह संवत्सर के बराबर होते हैं अतः सूर्य चन्द्र और बृहस्पति के योग से बारह वर्षों में उक्त चार कुम्भ पर्वों का योग बनता है।

मग्न संहिता के अनुसार चार कुम्भ वेव लोकों में, चार पाताल लोक में और चार पृथ्वी लोक पर स्थित हैं।

कुंभ धोरण वक्ता वैज्ञानिक विद्वेषण

यह संसार में वेव वर्धक, और जीवन संहारक दो तत्वों से परिपूरित है। जान की वैज्ञानिक भाषा में आकर्षण ग्राहन पिण्डों को जीवन वर्धक तथा कावनहार्ड आकर्षण ग्राहन पिण्डों की जीवन संहारक कहा जा सकता है। इन दोनों तत्वों का अन्वरत संघर्ष ही वैज्ञानिक रूप से देव असूर संयाम है। हमारी पृथ्वी यह जगतों विद्यार्थी जीवन से कीमी जीवन वर्धक वातावरण से अव्यावित होती है और कभी जीवन संहारक वातावरण से उपन्तुत होती है। किस समय पृथ्वी के किस सेत्र पर यह नक्षत्र का क्या प्रभाव पड़ता है। इसे ज्योतिष शास्त्र के अनुसार कुछियों ने 'बृहस्पतिम्' जाना था। उसके अनुसार ही अमृक समय पर पृथ्वी के अमृक प्रदेश में अमृक काय करने की परम्परा चली आ रही है।

बृहस्पति पिण्ड जीवन वर्धक तत्वों का सर्वप्रधान केन्द्र है। और इनपिण्ड जीवन संहारक तत्वों का खजाना है इसीलिए बृहस्पति को 'जीव' और गुरु कहा जाता है। इनी यह अपनी संहारक प्रकृति के अनुसार मारक यह के नाम से विख्यात है। सूर्य के भी अन्यून द्वादश अंशों को ठोड़कर शोष भाग जीवन वर्धक है। शुक्र यह सौम्य होते हुए भी पर पौषक रवभाव करते हैं अतः जीवन संहारक तत्वों की प्रबलता के कारण यह संहारकता में विद्युत करने में सकारात्मक हो जाता है। इसीलिए इसे आरुगी शक्ति विलासी शक्ति का पूरोहित कहा जाया है। मंगल यह का प्रभाव रक्त नक्षत्रों अपितृ वैदिक विश्लेषण में भी इसका प्रभाव पड़ता है। बृद्ध यह अपना कोई स्थिर प्रभाव नहीं रखता लेकिन अन्य पिण्डों के नात्विक संघर्ष में जो यह मारी होते हैं, बृद्ध उसी के अनुसार बन जाता है। इसीलिए इसे ज्योतिष में 'कर्त्त्वाव' माना जाता है। छाया यह, साथु केतु संहित जीवन संहारक तत्वों के परिपोषक है।

आकाश के बारह विभागों का नाम 'राशि' है नक्षत्रों की आकृति के अनुसार द्वादश राशियों के मेष, वृषभ आदि विभिन्न नाम हैं। आकाश का कीन सा राशि प्रदेश किस यह पिण्ड से संवेद प्रवाहित रहता है, उसी वैज्ञानिक तथ्य के अनुसार इन बारह राशियों के स्वामी यह पिण्ड माने जाते हैं। इसी के अनुसार सूर्य एक मात्र सिंह राशि का स्वामी और चन्द्रमा के बल कक्ष राशि का स्वामी है चिन्तु अन्य ग्रह मंगल मेष और वृश्चिक का, शुक्र वृष और तुला का, बृद्ध मिथुन और कन्या राशि का स्वामी, बृहस्पति धनु और मीन राशि का, तथा शनि मकर और कुम्भ राशि का स्वामी है।

यह गति के अनुसार बृहस्पति जब मारक यह शनि की राशि में प्रविष्ट होकर जीवन संहारक तत्वों का अवरोध कर देता है

उस समय जीवन वर्धक तत्व उत्तमान होकर पालित होते हैं। पृथ्वी के जिस स्थान पर यह प्रवाह विशेष रूप से जिस समय पड़ता है। उस क्षेत्र को बृहस्पति अमृत कणों से परिपूर्ण कर विशेष वातावरण बनाते हैं। यह समय ही कुंभ पर्व कहलाता है।

हरिद्वार में कुंभ

जब जीवन सहार प्रधान राह शनि की मूर्खराशि कुंभ में बृहस्पति आ जाते हैं तो वातावरण वृहस्पति कुंभ राशि में आते हैं और इसके साथ ही सूर्य तथा चन्द्रना मंगल की राशि में भी आते हैं तब हरिद्वार पंचमुखी क्षेत्र में अमृतमय वातावरण बनता है। यह समय हरिद्वार में कुंभ पर्व कहलाता है।

प्रयाग में कुंभ

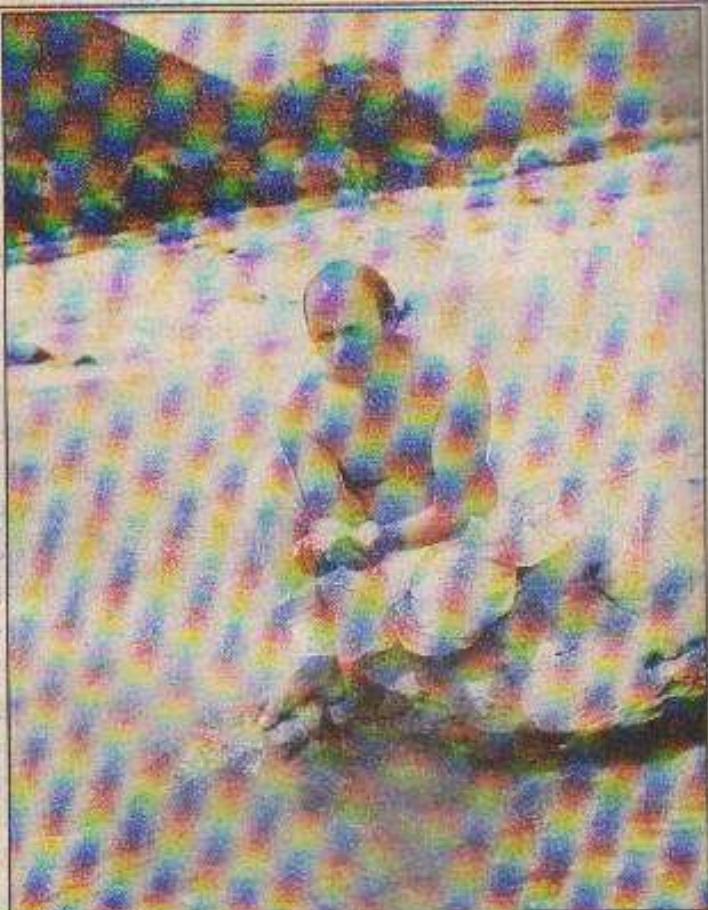
दैत्य गुरु शुक्र की राशि वृषभ है इस राशि में जब वृहस्पति उपस्थित हो जाते हैं तो और शनि की राशि प्रकर ने सूर्य आ जाते हैं तो विशेष स्थिति बनती है। प्रथम तो बृहस्पति आसुरी शक्ति को समाप्त कर देते हैं। इसके साथ ही जब सूर्य अपने पूर्व शनि की राशि में आ जाते हैं तो अधीत पिना जब अपने तुव के घर में आ जाता है पिना परम तेजस्वी होता है तो पुत्र शनि सीधा ही जाता है। उस समय सङ्करक तत्व शुक्र और गणि द्वारा द्वी सूर्य और बृहस्पति के प्रभाव से त्रिवेणी के संगम प्रयागराज में अमृत काण बरसते हैं। उस समय प्रयाग का कुंभ पर्व सम्पन्न होता है।

नाशिक में कुंभ पर्व

सूर्य के तेजस्विता का और उसके मारक भाव (बाहर अंश नक्ष) का प्रभाव सीधा पृथ्वी पर पड़ता है। भावप्रद म स में अत्यन्त नीबू गर्म पड़ती है, उस समय सूर्य की राशि सिंह ने बृहस्पति का प्रवेश होता है। और जब वेव रुक बृहस्पति सूर्य के घर आ जाए तो दोग शुभ हो जाता है यह योग ठीक उसी प्रकार है जब विष्ट के घर गुरु आ जाए। ऐसे शेषु काल में गोदावरी के उदगम स्थल नाभिक में अमृत कणों की वर्षा होती है और नाभिक में कुंभ पर्व सम्पन्न होता है।

उठोड़ौल में कुंभ पर्व

जब सिंह राशि स्थित बृहस्पति ही तथा मंगल की राशि येद में सूर्य द्वे तदे शुक्र की राशि तुला में चन्द्रमा पहुंचते हैं, इसका तात्पर्य है पुनः गुरु बृहस्पति अपने शिष्यों के घर गये और सूर्य मंगल



पर जाकर रक्त और वीढ़िक संचार की वृद्धि करता है तथा चन्द्रना और शुक्र का संयोग होता है निसर्य शोतुलता आती है तब महाकाल के पवित्र क्षेत्र में अमृत की निझारिणी 'लिपा' के रूप में अमृत कण प्रवाहम होते हैं ऐसे अमृत काल में उत्तरेन में कुंभ पर्व सम्पन्न होता है।

इस प्रकार उपरोक्त विवेचन से यह स्पष्ट होता है कि यहाँ की गति के अनुभाव जब ऐसे संयोग होने वे तो कुंभ पर्व सम्पन्न किया जाता है, न तो ज्योतिशीर्षों ने और न ही जब उचित लगा तब कुंभ पर्व सम्पन्न किया। श्रद्धों की युति के अनुसार ही कुंभ पर्व सम्पन्न होता है इन चारों कुम पर्व में भी हरिद्वार और प्रयाग के कुंभ द्वे विशेष मान्यता है क्योंकि यह भूमि देव भूमि कही जाए है। प्रयाग के सम्बन्ध में कहा गया है—

गृहाणां च वथा सूर्यों, भक्षत्राणां वथा शशि ।

तीर्थनामुच्चमं तीर्थं प्रयागारव्यमनुच्चमम् ॥

वैसे यहों में सूर्य तथा तारों नक्षत्रों में चन्द्रना सर्वश्रेष्ठ है उसी प्रकार तीर्थों में द्विष्टाम सर्वोच्चम् है

प्रवाजे तु नरो वस्तु, माय स्वानं करोति च ।
न तद्य पुस्संस्वास्ति,
शृणु विश्वर्थस्तम् ॥

जो प्रयाग में माय स्नान करते हैं उनके नहन फल का विवरण और स्नान के लिए भी कहते हैं।

पद्म पुराण में कहा गया है कि सरस्वती पूर्ण, और जगा का जहां संगम है वहां स्नान करने से ब्रह्मपद प्राप्त होता है। जहां के अध्य बृंद की छाया के तले बेठने से मायव में दिव्य सत्य गुणों का विकास होता है।

कल्पवासा

सामन्त रूप से कल्पवास का समव एक माह का होता है। और प्रयाग कुम्भ का कल्पवास माय मास अर्थात् नाय कृष्ण पक्ष उत्तिष्ठा बुधवार से मधि पूर्णिमा गुरुवार विनांक १० जनवरी २००६ से ८ फरवरी २००६ तक नियत है। लेकिन इस वर्ष कुछ विशेष योग बन रहे हैं इस वर्ष ९ जनवरी को पौष पूर्णिमा से कुम्भ कल्प प्रारम्भ हो रहा है। इसके पूर्व २५ विसम्बर २००५ को पौष कृष्ण पक्ष अमृतस्याके दिन सूर्य ग्रहण है यह ग्रहण वर्षपि भारत में दृष्टिगोचर नहीं होगा लेकिन इसका प्रभाव विशेष रूप से अवश्य देंग।

सूर्य साधना विधान

इस साधना को ३५ विसम्बर की ढी प्रारम्भ करना है पूरे एक महीने साधना करना है। इस साधना हेतु 'आकिन्त्य सकूलति वत्र', 'तेजस गुटिका' एवं 'सेफेद हक्कीक माला' आवश्यक हैं साधना काल सूर्योदय के समय ही रहेगा।

तांत्रिक सूर्य मंत्र

// उँ हौं हौं हौं सः सूर्यव्य नमः ॥

इस साधना के बारे में पूरी जानक री जुलाई अंक २००५ में भेज नम्बर ३८ पर ही गई है।

अंक जुलाई २००५ सूर्य ग्रहण साधना का जो विशेष पैकेट बनाया गया था उसका विवरण पूर्ण आपके पास अवश्य होगा, इस सामग्री का उपयोग कुम्भ कल्प वास के द्वारा नियमित नहीं किया जाता है लेकिन इस वर्ष कुम्भ के अवसर पर पूरे मास अर्थात् इस जनवरी

सिद्धाश्रम साधक परिवार

और कुम्भ कल्प

सिद्धाश्रम साधक परिवार साधकों का परिवार है यो तो दूर वर्ष प्रद्याग में माय मास में विशेष ५ योजन किया जाता है है लेकिन इस वर्ष कुम्भ के अवसर पर पूरे मास अर्थात् इस जनवरी

प्रमुख स्नान एवं पर्व	
पौष पूर्णिमा	१ जनवरी २००६ मंगलवार
मकर संक्रान्ति	१४ जनवरी २००६ रविवार
मीनी अमावस्या	२४ जनवरी २००६ बुधवार
ब्रह्मन्त पंचमी	२९ जनवरी २००६ सोमवार
माघी पूर्णिमा	८ फरवरी २००६ गुरुवार

२००५ से ८ फरवरी २००६ तक विशेष व्यवस्था की गई है वहां सिद्धाश्रम साधक परिवार का आर्यलय, साधना स्थान नियत होगा। पूरे भारत वर्ष से आये हुए साधकों का विशेष स्वागत है।

इस माह कुंभ में मीनी आमवास्या से पूर्व २२-२३ जनवरी को गुरुदेव की उपस्थिति में विशेष साधना शिविर सम्पन्न होगा।

जीवन अनियमिताओं में भरा हुआ है और जीवन में अनिश्चिताएँ भी हैं हर शिष्य यही चाहता है कि वह महा कुम्भ के अवसर पर प्रयाग में पहुंच कर विशेष साधना सम्पन्न करें तूरा एक महीना कल्पवास साधना, तपस्या में व्यतीत करें, जहां कल कल ब्रह्मी गंगा यमुना ब्रह्मी की धाराओं का संगम हो। पूरे वेश विवेश में आए हुए गुरु भाई बहन हो। यह मन की इच्छा अवश्य ही रहती है लेकिन इसके साथ यह भी सत्य है कि सांसारिक किया कलाप में नीं करी व्यवसाय हन्यादि से इतना अवकाश नहीं मिल जाता कि यह कार्य सम्पन्न कर सकें।

ऐसे अनेकों शिष्यों की भावना को देखने हुए गुरुदेव के निर्देशन में विशेष 'पूर्णोत्तिः अमृत कुण्ड सिद्धि साधना पैकेट' साधना सामग्री तैयार की गई है जिसकी छः सामग्री अमृत फल, सिद्धि फल, गुरु यंत्र, श्री गुटिका, मृत्युंजय मुत्रिका, निर्खिल धैतना माला विशेष रूप में अस्तित्व की गई है।

अमान रहे यह साधन सामग्री केवल ये ही साधक मंगल जो कुम्भ कल्प वास के द्वारा प्रयाग नहीं जा सकते हैं, जो कुम्भ कल्प वास के समझ प्रद्याग जा सकते हैं उनके लिए प्रयाग में जाकर गुरु यंत्र और निर्धिल धैतना माल के सभ गुरु पूजन ही पर्याप्त है। अन्य साधक यह कुम्भ कल्प वास पूर्णोत्तिः साधना अवश्य सम्पन्न करे लेकिन केवल एक आवश्यक निष्ठा है यह साधना धर में ब्रैटकर सम्पन्न नहीं की जा सकती है यह साधना किसी शिवालय में अथवा तालाब तरी अथवा सागर के किनारे ही सम्पन्न की जा सकती है। आपके धर के निकट जो भी जल स्थान है अथवा देवलय है वहां जाकर इस सामग्री के साथ यह साधना सम्पन्न कर सकते हैं।

साधना के सम्बन्ध में विशेष विवरण विवरण इत्यादि साधना सामग्री के साथ ही भेज दिए जाएँ।

साधना सामग्री पैकेट - ३६०/-

कारण धीरे होत है काहे को होत अधीर

मानव मन हमेशा संकल्पों विकल्पों से घिरा रहता है, इसीलिए जब भी हन कोई कार्य प्रारम्भ करते हैं तो हमारे हृदय में उसके परिणाम को लेकर अन्यथिक हलचल होती है। जब भी हम किसी साधना में प्रवृत्त होते हैं तो हमें प्रारम्भ में काफी उत्साह एवं श्रद्धा होती है। परन्तु जब साधना धीरे-धीरे अपने मध्य चरण में प्रवेश करती है तभी हमारा मन अधीर हो जाता है तथा हम बनाये इस बात पर विचार करने के कि हमे सफलता क्यों नहीं मिल रही कोन सी न्यूनता हममें शेष है, हन यह समझ बेछले हैं कि अब इस साधना में हमें सिद्धि नहीं प्राप्त होगी।

इसका प्रमुख कारण मन की चंचलता होती है और जब मन चंचल होता है तथा उसके सामने कोई निश्चित लक्ष्य नहीं होता है तो वह इधर-उधर भटकने लगता है। और साधना के मर्ग पर दूढ़ नहीं हो पाता है। वास्तव में साधना के क्षेत्र में निर्बल मन सदैव आसमर्थ है। संसार के आकर्षण उसे अपनी ओर खीचे जिना नहीं रहते हैं प्रत्येक मनुष्य की आत्मा उसे अच्छे कार्यों की ओर लगाने का प्रबलन किया करती है, लेकिन आलस्य तथा स्वार्थ के कारण मनुष्य कभी-कभी आत्मा की नुकार को भी अनसुनी कर देता है और कर्तव्य को भूल जाता है। मन ये भव्यतात्वस्ति की सभी शक्तियां निकम्भी बन जाती है। मन के शक्तिशाली, संस्कारी, संवेदनशील बनाना चाहिए मन को जितना ऊचा ले जाएँ उतना ही जीवन ऊचा बनेगा।

मन चाहे तो मनुष्य को भगवान् भी बना सकता है और चाहे तो पशु भी बना सकता है मनुष्य को कही भी ने जाने की शक्ति मन के पास है। मन और बुद्धि शरीर के बाहर है। अतः मन को शक्तिशाली बनाना चाहिए।

अपने मन को समस्त संकल्प विकल्प से ऊपर-उठा कर एक मात्र गुरु चरणों में दूढ़ करे क्योंकि साधना की सफलता से सर्वगुरु का महात्व सर्वोपरि बताया जाया है। अतः प्रकृति का चक्रो-उपर्युक्ताओं, इडा पिंगला, सुषुम्ना आदि नाडियों का, उनके परिष्कार का ज्ञान की गुरु कृपा से ही मिलता है। गुरु मनुष्य रूप में वस्तुतः यश्चिदादानन्द धनरूपी वरमात्मा का दर्शन कराने वाली इशोष्वे रूपी सना है। उसी के माध्यम से हमें अनन्त का विस्तार विद्याई पड़ता है। गुरु के बिना अनुभवों में समझता नहीं आ पाती। साधना एक प्रकार से शरीर रूपी मनोन में वायरिंग के समान है। उसका स्विच आज करने का काम शुरू हो करना है।

परन्तु अधिकांशतः होता यह है कि जब हम एक साधना में सिद्धि नहीं प्राप्त कर पाते हैं तो उसे छोड़ कर यह सोचते हैं कि दूसरे साधना में हमें शीघ्रता से सफलता मिल जाएगी, ऐसा सोच कर हम डाल डाल दीड़ते रहते हैं। और यह संशयात्मक प्रकृति तथा श्रद्धा की कमी है, तथा ऐसी स्थिति इन्हानिए आती है क्योंकि हम वास्तव में अपने गुरु को समझ ही नहीं पाते उसके स्वरूप को पहचान ही नहीं पाते और भ्रन जात में फँसे रहते हैं।

जब हमारे सम्बन्ध ऐसी स्थिति उत्पन्न हो तो हमें तत्क्षण समस्त साधनाओं को छोड़कर एक मात्र गुरु चरणों में समर्पित हो जाना चाहिए। क्योंकि सभी साधनाओं रूपी वृक्ष के मूल तो गुरु ही हैं।

और फिर हमें किसी प्रकार का संशय या भ्रम है? क्योंकि हमारे गुरु द्वां नारायण दत्त श्रीमाली जी तो साक्षात्

जहा स्वरूप हो है। यथापि उन्होंने मानव रूप धारण किया था तबन्नु हम उन्हें साधारण मानव नहीं कह सकते हैं क्योंकि वह मानव वह इस संसार में मानवीय आदर्श स्थापित करने के लिए जल्द किये दे। वो तो हम इस दुरु भरे संसार में आनन्दमयी जीवन बने के लिए अवनरित दुप थे। पर वास्तविक स्वरूप तो उनका सद्वितीय तथा आनन्द है। यत का अर्थ है ऐसा जीवन्तित वदाय जो कभी विकृत न हो, 'एकरूपण
इवस्मितो वीर्यः स परमार्थः' हमारे गुरु
ने प्रत्येक अवस्था में, प्रत्येक काल में
दिकार हीन एवं निष्ठा है, वह सत्य
ज्ञानगमनन्तम है।

वह नित्य प्रदृढ़
नथा पूर्ण होने से
आनन्दवधीक है।

हम अपने

गुरु श्री नारायण
दत्त श्रीमाली जी
को अन्य भौतिक
वस्तुओं के शब्द
चित्र अवबो रूप
चित्र द्वारा ज्यक्त
नहीं कर सकते हैं।

उनकी किसी

सांसारिक पदार्थ से
उपमा भी नहीं दी जा
सकती है। उपमा भी

समान धर्म वन्नु से ही ही

सकती है तथा उपमा का

प्रयोगन सत्य के एक पक्ष का संकेत
करना गात्र है, किन्तु हमरे गुरु किसी पदार्थ

का नमान धर्म नहीं है। वह तो अवद्विमनस्तोचर
है थिंग्से द्वारा स्वरूप गुरु के साक्षिध्य में रहकर भी हम नाधना
के लिए संशय और भ्रम जाल से बिरे हो तो हमारे जैसा
भाव्यहीन व्यक्ति कोई हो ही नहीं सकता।

अतः यह अवधर है कि आप अपने गुरु को पहुचानिये
एवं ऐसे स्वर्णिन क्षण को खोने न दीजिए।

यही बात नमझाते हुए श्री रामकृष्ण परमहंस द्विष्टों
को उपदेश दे रहे थे। परन्तु उन्हें समझ नहीं आया तब गुरु ने

एक शिष्य से कहा कि कल्पना करो, तुम नक्खी हो सामने एक
कटोरा में अमृत रखा है, तुम्हे पता है कि यह अमृत है, चला
उसमें कूदेगा या किनारे बैठकर स्पर्श करने का प्रयास करेगा?
उत्तर मिला किनारे बैठकर चाहने वा, बीच में कूदने पर जीवन
ही समाज ही जाएगा।

सोशियों ने शिष्य के बात को सराहा परन्तु गुरु
मुस्कराये और बोले और मूर्ख जिसके स्पर्श में तू अमरता की
बात करता है उसके बीच में कूद कर भला
मृत्यु कैसे?

अतः इससे स्पष्ट होता
है कि जब साधात ब्रह्म ही
गुरु स्वरूप हमारे नामने
हे तो फिर हम क्यों
किसी छोटी-छोटी
सिद्धियों के पीछे
ध्वनि हुए भटकते
रहें। हमें तो उस
गुरु के चरणों में
अपने को
पूर्ण रूप से ए
न्योडावर कर देना
चाहिए। नथा जब
शरीर और मन बेच
दिया हो खुरीदने वाले
की आज्ञा पर चलने के
अनिरित और कोई रास्ता
नहीं।

यह समर्पण एवं गुरु की
इच्छा में अपनी हर इच्छा का
विसर्जन नैसे जैसे प्रगाढ़ होता चल जाना
है, साधना उच्चतर आयामों पर पहुचने लगती है।
अतः यह समस्त प्रक्रिया धीरे धीरे एवं पूर्णनामोजन
से ही संस्थव है। प्रत्येक गुरु सर्वप्रथम अपने शिष्यों के समस्त
बुराइयों एवं पापों को समान करके उसे योग्य पात्र बनाते हैं।
ताकि उनकी दी हुई सिद्धियों कहीं अर्थ न हो जाए इसके लिए
हमें एक मात्र दृढ़ निष्ठय करके गुरु चरणों में लीन होने की
आवश्यकता है न कि दधर उधर भटकने कि क्योंकि—

काहे को होत अधीर

परमारथ के कारण साधु धरियो शरीर

बत उस समय की है, जब पूर्णपाद सद्गुरुदेव अपने संन्यास जीवन से रोकत्पञ्चम ठेकर बापस आपने गृहस्थ ससार में लौटे थे। जब वे संन्यास जीवन के लिए ईश्वरीय प्रेरणा से घर से निकले थे, तो उनके पास तन ढकने के लिए एक धोती, एक कुती और एक गमछा था। साथ में एक छोटे से झोले में एक धोती और कुर्ता भरिरिल रूप से था। इसके अलावा उनके पास और कुछ भी नहीं था। न ही कोई विशा स्वप्न और न ही कोई मनिल स्पष्ट थी, केवल उनके होसले बुलन्द थे और ईश्वर में आस्था थी। यही उनकी कुल पूजी थी, जिसके साथैर संधर्षमय एवं इतने लम्बे जीवन की दात्रा पूरी करनी थी।

जब वे कुछ समय सन्दर्भ जीवन में बिनाकर बापस अपने गांव लौटे, तो जांव बाले, परिवार के लोग एवं क्षेत्र के सभी गणमान्य व्यक्ति उपस्थित हुए। सभी ने उनका सधर्व स्वागत सत्कार किया, लेकिन सभी के नामांकित व्यक्ति में यद्युग्र लाला या किंवद्देव व्या भिला? हमें भी कुछ दिखायें। जब यह प्रश्न सद्गुरुदेव जो नक पहुंचा, तो वे बड़े ही प्रसन्न हुए और उन्होंने कहा कि हमारी भी यही इच्छा है कि जो कुछ भी हमारे पास है वहमें सभी को दिखाऊँ।

गुरुदेव जी सभी के मध्य में खड़े हुए और अपना एक हाथ फेलाकर और बताया कि जब मैं दहां से गया था तो मेरे पास यह था और हाथ को बधी मुट्ठी को खोला तो उसमें कुछ कंकण निकले। उन्होंने बताया कि यही ऐसे पास थे, जिन्हें मैं नेकर अपने साथ गया था और जो कुछ मैं लेकर लौटा हूँ वह नेरों हाथ की दूसरी मुट्ठी में है। सभी लोग दूसरी मुट्ठी को देखने के लिए आतुर हो उठे, लेकिन गुरुदेव जी ने जब दूसरी मुट्ठी खोली तो सभी हँसते हैं गये। क्योंकि वह मुट्ठी बिलकुल छी खाली थी। सभी को आशा था कि

इसमें कुछ अगूआ होगा, लेकिन ऐसा हुआ नहीं। गुरुदेव जी ने बताया कि जो कुछ मेरे पास थी वह भी मैं गंवा कर आ रहा हूँ। मैं बिलकुल ही खाली होकर आ रहा हूँ। बिलकुल खाली हूँ, इसलिए जब जीवन में कुछ जर सकता है। मैं अपने संन्यास जीवन में कोई

जादू टोने टोटके सीखने नहीं गया था, हाथ साफाई की ये कियाएं यहां रखकर भी सीख

सकता। लेकिन मैं अपने जीवन में यूं आषां दोष सहित यम, निर्यम, आङ्गार, प्रत्याहार, धारण, ध्यान, समाधि के पूर्णत्व स्तर पर पहुँचने के लिये ही यह संन्यास मार्ग चुना। अब मुझे इन कंकणों पत्तरों के भार की ढोना नहीं पड़ेगा, अगर ढोना नहीं पड़ेगा तो मैं स्वतंत्र होकर बहुत कुछ कर सकता हूँ। क्योंकि सान को ढोने की ज़रूरत नहीं पड़ेगी, वह स्वयं ही उत्तम होता रहता है। स्वतंत्र ही उसमें सुगन्ध आने लगती है। उसमें आनन्द के अमृत की वर्षा होने लगती है।

और वह तब तक नहीं प्राप्त हो सकता, जब

तक हम इन कंकणों एवं पत्तरों को ढोते रहें। अपने इस हाड़-मास को ढोने से कुछ नहीं होने वाला है, जब तक इसमें चेतना नहीं होगी। चेतना को पाने के लिए एक द्रवम से खाली होना पड़ता है, सब कुछ गवाना पड़ता है, सब कुछ बांब पर लगाना पड़ता है। तब जाकर चेतना प्रस्फुटित होती है और तब उस प्रस्फुटित चेतना को दिखाने की आवश्यकता नहीं पड़ती है, बल्कि दुनिया उसे स्वयं देखती है, बार-बार देखती है, धूर-धूर कर देखती है। क्योंकि उसे इस हाड़ मास में कुछ और ही दिखाई देता है, जिसे चैतन्यना कहते हैं, चेतना कहते हैं, ज्ञान कहते हैं। और उसे उस मुट्ठी में देखने की ज़रूरत नहीं है, क्योंकि वह मुट्ठी में सनाने वाली चीज नहीं है, वह इस समस्त संसार में समाप्त है, जो सब कुछ सबको दिखाई दे रहा है।

डाक व्यव
पत्र प्राप्त करने
वाले द्वारा
दिया जायेगा

व्यापारी जवाबी पोस्टकार्ड

परमिट नं. J.D. 8
जोधपुर प्रधान डाकघर
342001 (राज०)



सेवा में,

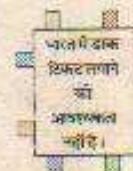
व्यवस्थापक : मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान

डॉ० श्रीमाली मार्ग, हाईकोर्ट कॉलोनी,
जोधपुर - 342001 (राजस्थान)

डाक व्यव
पत्र प्राप्त करने
वाले द्वारा
दिया जायेगा

व्यापारी जवाबी पोस्टकार्ड

परमिट नं. J.D. 8
जोधपुर प्रधान डाकघर
342001 (राज०)



सेवा में,

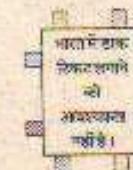
व्यवस्थापक : मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान

डॉ० श्रीमाली मार्ग, हाईकोर्ट कॉलोनी,
जोधपुर - 342001 (राजस्थान)

डाक व्यव
पत्र प्राप्त करने
वाले द्वारा
दिया जायेगा

व्यापारी जवाबी पोस्टकार्ड

परमिट नं. J.D. 8
जोधपुर प्रधान डाकघर
342001 (राज०)



सेवा में,

व्यवस्थापक : मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान

डॉ० श्रीमाली मार्ग, हाईकोर्ट कॉलोनी,
जोधपुर - 342001 (राजस्थान)

दुर्घैच सर्वे कलिधर्मप्रीता:



कीषवंतम्

आज मनुष्य अन्तर्वेदना से पीड़ित है, दुःखों की आग में जल रहा है, कराह रहा है। कलियुग के प्रवाह में, जिस दिशा में भी नजरें जाती हैं, उस तरफ ही ईर्ष्या, द्वेष, छल, कपट, मक्कारी, अहं, वैमनस्य की ही भावना दृष्टिगोचर होती है। यही नहीं, जहां पर पवित्रता का, श्रद्धा का, प्रेम का, शीतलता का अनुभव होना चाहिए, वहां भी इन सब तत्वों का अभाव ही दिखाई देता है।

आखिर ऐसा क्यों होता है? क्यों मानव मन को शांति प्राप्त नहीं हो रही? क्यों वह झूठा आडम्बर रच के अपने मन को शांति का आश्वासन देता है? आखिर क्यों? फिर वह कहां जाए?

धान्ति, प्रेम, सद्भाव की लोज में, विभिन्न धर्मदायों के व्यक्ति अनेकों प्रकार से, विभिन्न धर्मों की छत्र-छाया में जाश्रय लेते हैं। बड़े-बड़े सनसंघों और प्रबन्धनों का उद्योगन कर जीवन के लक्ष्यों को खोजने का प्रयाप्त करते हैं — नगर अञ्जकलना प्राप्त होती है, तब या तो मनुष्य का धर्म के ऊपर से विश्वास उठ जाता है, या फिर वह इसे ढोंग मानने लग जाता है... और वेदन होकर धर्म को त्यागने का प्रयाप्त करता है, अपने-आप को नास्तिक के रूप में स्थापित कर, दृश्वर में, बहु से, गुरु में अपना विश्वास समाप्त कर लेता है और वह पुनः सांसारिक प्रवचनाओं में फेसकर जीवन की मूल्य की ओर अग्नसर कर देता है।

इतिहास माझों है, कि नब-जब मनुष्य का गुरु से, ईश्वर से, प्रकृति से, विश्वास समाप्त हुआ है, नब-तब उसका विनाश हुआ है, और इस अविश्वास का मुख्य कारण है — अयोग्य व्यक्तियों का गुरु पद पर स्थापित हो जाना। अभ्यन्तर में 'शुरु' शब्द का 'जान' का सूचक है और जान की कमी को ही सीमा नहीं होती और न ही उसे सीमा में बंधा जा सकता है। जो ज्ञान की सीमा औं में बांध देते हैं अश्वा बांधने का प्रयाप्त

करते हैं, वे ही वास्तव में गुरु की अयोन्यता के सुचक हैं। गुरु तो एक दर्पण की भाँति होता है, जो अपने शिष्य को उसकी छवि दिखाकर उसे सही रास्ते पर गतिशील करता है, भयमुक्त बनाकर उसे जीवन प्रदान करता है।

बत्तमाल में यदि हम किसी भी गुरु के समीप जाये तो न्यूट होता है कि उनके पास जो ज्ञान के बहुत धार्मिक गीत अथवा रामायण के कुछ मनोहर वृषभों तक ही सीमित रह गया है। तब यह प्रश्न उठता सहज स्वाभाविक है, कि क्या उनमें इतनी ज्ञान की चेतना है, जिससे अपने शिष्यों को अभ्य प्रदान कर, जीवन के विविध पक्षों को जीते हुए, ज्ञान के सरोवर में डुबकी लगाने की कला सिखा सकें? अपने शिष्य को अभ्य प्रदान कर पूर्ण ब्रह्मत्व प्रदान करें... और केवल ब्रह्मत्व प्रदान ही नहीं करें, अपितु शिष्य को पूर्ण ब्रह्म स्वरूप में स्थापित कर सकें?

आज के दौर में ऐसा असम्भव सा प्रतीत होता है, परन्तु यह असम्भव नहीं है। असम्भव को सम्भव बनाने की कला लोग भूल चुके हैं, तथाकथित गुरु काहजाने वाले लोगों को इस क्रिया का ज्ञान ही नहीं है, इसलिए हम लगातार सत्य से दूर और बहुत होते चले जा रहे हैं।

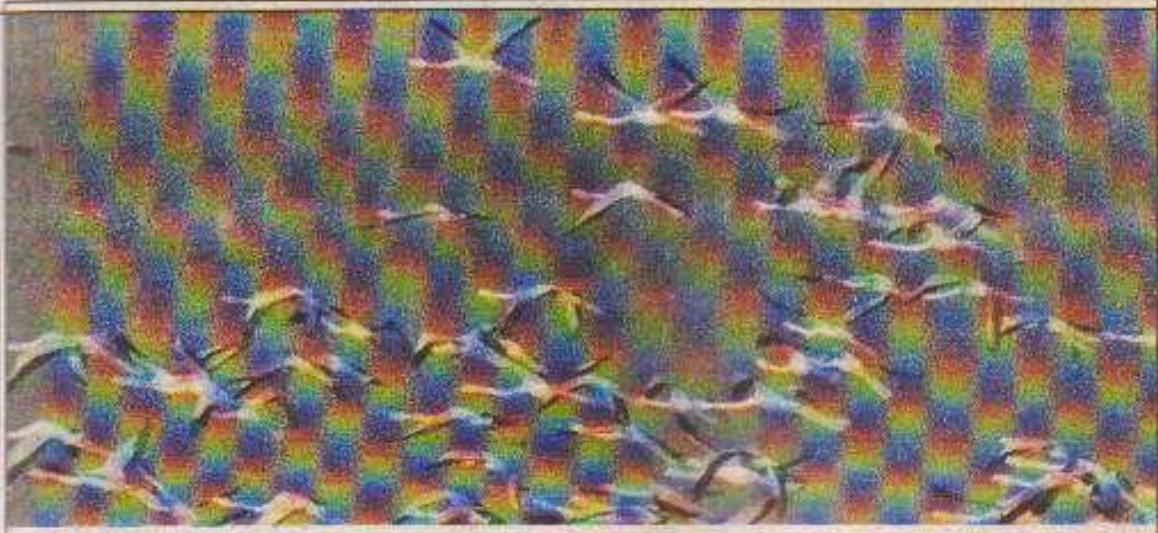
आज के युग में गुरु पद येन-बेन-प्रकारेण प्राप्त कर लेना ही शिष्य कहलाने वाले लोगों का उद्देश्य बन गया है। स्वार्थ मिहि शिष्यों में विदाद ही जाना, एक-दूसरे पर गुकवगा कर देना ऐसे लोगों के लिए सामान्य भी ग्रक्या ही गयी है, किर-जब ये गुरु पद हस्तांत कर लेते हैं, तो दुनिया में गुरु स्वरूप में अपना परिचय दे भोली-भाली जनसा को ठगते रहते हैं।

जबकि वास्तविकता यह है, कि जो वास्तव में गुरुत्व के ज्ञान की धारण किये हुए व्यक्तित्व होते हैं, उनके अपना परिचय देने की आवश्यकता नहीं होती, क्योंकि सूगन्ध को अपना परिचय देने की आवश्यकता नहीं होती, सूर्य की अपनी तेजस्विता दिखाने की आवश्यकता नहीं होती वह तो स्वयं ही अपना परिचय है। सूरज निकलेगा तो प्रकाश होगा ही, पृथ्वी खिलेगा तो सूगन्ध फैलेगी ही, उसके लिए अतिरिक्त प्रयास की आवश्यकता नहीं होती। सरे सोने का कहीं पर विजाप्त अथवा प्रचार नहीं होता, क्योंकि सोने का मात्र सोना होना ही पर्याप्त है। जहां अपावृत्ता है, अज्ञान है, असमर्थता है, वहीं पर बन्द है, लडाई-झगड़े हैं, ढीगा-झपटा है, जबर्दस्ती अपना स्थान बनाने की प्रक्रिया है।

गुरुत्व की धारणा का प्रक्रिया है की प्रक्रिया है प्रक्रिया है अवश्यक

नहीं है, शिष्यत्व करने के करना विश्वास होगा।

एक कठि को, अप समाज व आप को स्वयं सखड़ा हो जाता है



इसलिए गुरु पद कोई प्रतिस्पर्धा का विषय नहीं है, गुरुत्व कोई बलपूर्वक प्राप्त करने का विषय भी नहीं है। गुरुत्व धारणा करना तो तलबार की धार पर चलने से भी ज्यादा कठिन प्रक्रिया है, गुरुत्व धारण करना तो विष को कठ में स्थापित करने की प्रक्रिया है, समस्त जड़ चेतन के हलाहल जो पान करने की प्रक्रिया है . . . लेकिन गुरुत्व प्राप्त करना तो बहुत बाद की प्रक्रिया है। प्रारम्भिक प्रक्रिया के अनुसार तो शिष्यत्व प्राप्त करना आवश्यक है . . .

और लोगों को शिष्य बनने की प्रक्रिया का ज्ञान नहीं है, यदि एकाध को ही भी, तो भी वे अपने अन्दर शिष्यत्व को उतार नहीं पाते, क्योंकि शिष्यत्व धारण करने के लिए तो सर्वप्रथम अपने अहंकार 'मैं' को समाप्त करना होगा और जब ऐसा होगा, तब व्यक्ति में श्रद्धा, विश्वास और गुरु चरणों के प्रति प्रेम का भाव उत्पन्न होगा।

अब यह ठीक ही कहा गया है, कि शिष्यता प्राप्त करना एक कठिन कार्य ही नहीं, अपितु दुष्कर कार्य है। अपने जीवन को, अपने अस्तित्व को, अपने बोध को और अपने आप को समाप्त कर देने की कला ही शिष्यता है। एक योग्य शिष्य अपने आप को गुरु की आज्ञा से हलना समर्थन कर लेता है, कि वह स्वयं समाप्त हो जाता है और तब उसके स्थान पर स्वयं गुरु खड़ा हो जाता है। समस्त द्वेष समाप्त होकर अद्वेष का भाव आ जाता है। प्रकृति का प्रकृति से छुट्टा का छुट्टा में शून्य का शून्य में

चिलय ही जाना ही शिष्यत्व है, गुरुत्व है और परम तत्व है।

जल में कुम्भ, कुम्भ में जल है, बाहर भीतर पानी।

फूटा कुम्भ जल जल ही समाना यह तथ कहा जाना॥

जिस प्रकार जल से भरा हुआ एक कलश, नदी में बहता है और जब कलश का अस्तित्व समाप्त हो जाता है, तब उस कलश का जल, नदी के जल के साथ एकाकार हो जाता है, तब कलश और नदी के जल में भिन्नता नहीं होती, दोनों को नदी का जल ही कहा जाता है, इसी प्रकार जब शिष्यत्व का नया गुरुत्व में हो जाता है, तो केवल . . . और केवल नाम गुरुत्व ही रह जाता है और यहाँ सही अर्थों में जीवन की श्रेष्ठता है, यहाँ जीवन का लक्ष्य भी है।

और जब एक शिष्य की जीवन में इस प्रकार की घटना घटित होती है, तब वह जीवन के परम लक्ष्य को प्राप्त करता है, तब अद्वेष भाव आने पर उसकी स्वतः पूर्ण कुण्डलिनी जागरण की क्रिया सम्पन्न होती है, फिर वह उस कदम्ब के वृक्ष का रूप धारण कर सकने में सक्षम हो पाता है, जिसकी छाया तले समस्त विश्व, समस्त मानव जाति और यह समाज सुख शांति का अनुभव करता है, ज्ञान की शीतलता प्राप्त करता है, ब्रह्मत्व की चांदनी में दमकते हुए, अभूतत्व के मानसरोवर में अवगाहन करता है।

इस झूठ, छल, प्रथम, कथट, माया मोह के बंधनों को नोडता हुआ जीवन के उद्देश्य को प्राप्त करता है, . . . और तब इस समाज के अनुस लोग स्वतः कह उठते हैं

चलो दूर कदम्ब की छाँव तले

दो, तो आ
का आप
मरते हैं।
निम्न मंत्र
मंत्र

नहीं तब

४. कि
तो . .

दो जय,
और स्व

का उपयोग
आप से
आपको
इतना उ
सामग्र्य
प्यार का
आप इस
एक मात्र
मंत्र

५. ऐ
साक्षा
हे, कि
को सम

कृष्ण खाँसता



दों तो किसी भी रोग के राशन हेतु आज विकिरण विद्वान के पास अचूक छलाण है, परन्तु उन्होंके कामद्वान से विकिरण के पीछे धारणा यह है, कि सभी रोगों का उद्धव मनुष्य के बन से ही होता है। जन पर पड़े बुष्प्रभावों को यदि तंत्र द्वारा लियाग्रित कर लिया जाए, तो रोग स्थायी रूप से शान्त हो जाते हैं।

१. कृष्ण आपके बाल गिरने लगे हैं?

बालों का भीन्वर्य भी अपने आप में एक प्रमुख आकर्षण का केन्द्र है, स्वस्य, सूक्ष्म, और घने बालों का शौक किसे नहीं होता, लेकिन बालों का गिरना भी एक रोग है। आपके बाल कम धने होने से आपके व्यक्तित्व पर अकरण इसका प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है। लोगों ने इसमें छुटकारा पाने के लिए कई प्रकार के उपाय उपनाये, बहुत से लोगों ने तो धनत्यनि दवाईयों भी लगाई चिर को गजाकर इवाइ का लेप भी किया लेकिन फिर भी संतुष्ट नहीं हो पाये।

आपके बाल स्वस्य और घने बन सकते हैं, आन एक बार इस प्रयोग को करें तो सही—

किसी गाव में 'मोती शंख' को स्थापित वर उसमें जल भर दें तथा निम्न मंत्र का उच्चारण करें—

मंत्र

॥ उँ ही ही श्री ही ही उँ ॥

मंत्र का नप नियमित ११ दिन तक करें और रोज जल को अपने चिर पर लगा लें। कुछ समय के निरन्तर उपयोग से आपके बाल स्वस्य, घने और रुकमकार हो जायेंगे और बालों ने आजर्ण स्वतः ही उत्पन्न होने लगेगा।

साधना सामग्री : 100/-

२. कृष्ण ऐरुष्टता के लिए आप दवाओं पर निर्भर हैं?

किशोर से युवा बनने की ओर चढ़ते कदम जोश, उमंग और योवन से भरपूर रहते हैं, लेकिन कभी-कभी वे अपने योवन का दुरुप्रयोग अज्ञाननावश इरह नहीं कर लते हैं,

कि योवन युक्त होते हुए भी वे उपने पुरुषत्व को पूर्ण रूप से प्रभावी बनाने के लिए दवाओं पर निर्भर हो जाते हैं, क्योंकि हाई लाइक नीन बालों के लिए इतना समय ही नहीं रहता कि वे अपने बच्चों को उचित विद्या निर्देश दे सकें और अधिकांश लोगों के बच्चे गलत संगत में पड़कर अपने योवन को खो देते हैं। अपने बच्चे की बुरी संभितियों को छुड़ाने के लिए यह प्रयोग करें।

किसी पात्र में 'ईम्पु गुटिका' को स्वापित कर उसका पूजन कर निम्न मंत्र का नप ११ दिन तक योज '३ बार करें—

मंत्र

॥ उँ ही क्री क्री श्री क्री क्री क्री क्रट ॥

फिर भारह दिन के बाद गुटिका को नदी में प्रवाहित कर दें। विसर्ये कि धीरे-धीरे इवाइ छुट जायेंगी और वह फिर से योवन प्रात करने में सक्षम हो सकेगा।

साधना सामग्री : 100/-

३. कृष्ण आप शारीरिक रूप से कमजोर हैं?

व्या आप बहुत भाड़िया कमजोरी का अनुभव करते हैं या अपने गुप में सबसे पतले लगते हैं? शारीरिक स्वरूप से स्वस्य होने पर भी कमजोरी का ऐसास होता है? किसी बाल को करने में बहुत जल्दी अकान का अनुभव करते हैं? योड़ा सा चलने पर शायेर में शारीरिक का अनुभव होता है? दिल की धड़कन सामान्य से तेज हो जाती है व सानान्द होने में समय लगा जाता है?

यदि बहुत उपाय करने के बाद भी ठाक नहीं हो रहे

तो, तो आप इन उपाय को करें।

यह दिखने में तो सामान्य है, लेकिन इसकी तीक्षणता का आप इस प्रयोग को करने के बाद स्वयं अनुमान लगा सकते हैं। आप 'पारद मुद्रिका' पर २३ दिनों तक नित्य ५ बार निम्न मंत्र का जप करें—

मंत्र

॥ उँौ कामाय क्रं उँौ नमः ॥

प्रयोग समाप्त होने पर इस पारद मुद्रिका को एक महीने तक धारण करे फिर नवी में प्रवाहित कर दें।

साधना सामग्री : 80/-

४. किसी पर भी विजय प्राप्त करनी ही है, तो . . . सम्मोहन का उपयोग करिये

सम्मोहन का अर्थ है—स्वयं में इनना आकर्षण उत्पन्न हो जाय, जिससे सामने खड़ा व्यक्ति स्वयं मोहित हो जाय और स्वयं ही आपका सारा कार्य कर दे।

जीवन में कई बार ऐसे मौके आते हैं, जब व्यक्तित्व का उपयोग होता है, अगर आप में इनना सम्मोहन नहीं है, तो आप से प्रभावित कौन होगा? आपका व्यापार कैसे चलेगा? आपको व्यापार में सफलता किस प्रकार से मिलेगी? स्वयं में इनना आकर्षण उत्पन्न करिये, जिससे लोग आपसे स्वयं सम्बन्ध बनाने के इच्छुक हों और प्रयासरत रहें। आप किसी से ज्यार करते हैं और वह आपकी ओर ध्यान भी नहीं देती है तो आप इस प्रयोग के द्वारा भी सफलता प्राप्त कर सकते हैं।

'सम्मोहन शाला' का पूजन कर उससे ११ दिनों तक एक माला निम्न मंत्र का जप करें—

मंत्र

॥ उँौ कर्त्तौ सम्मोहनतय फट् ॥

ज्यारहें दिन ही शाला के नदी में प्रवाहित कर दें।

साधना सामग्री : 150/-

५. पेट को सुन्दर और संतुलित बनाया जा सकता है मैठम!

अपने फिरार को समाप्त कर, रखने के लिए आवश्यक है, कि आपका पेट संतुलित रहे। बड़ा हुआ पेट आपके सौन्दर्य को समाप्त ही करता है।

पेट को सुन्दर और संतुलित बनाने के लिए बहुत

पर देखते हुए योगासन में बैठ जाएं और २३ बार निम्न मंत्र का

जप करें—

मंत्र

॥ उँौ श्रीं सुवर्त्तनाय फट् ॥

३ दिनों के बाद इस नदी में प्रवाहित कर दें। इस प्रयोग को सम्पन्न करने के बाद अपका पेट स्वयं ही संतुलित और भुन्दर हो जाएगा, क्योंकि यह प्रयोग साधारण प्रयोग नहीं है।

साधना सामग्री : 100/-

६. कृष्ण आपका लहवा बीमार छिड़विड़ा, कठमजोर उमरण शारिर वाला होता जा रहा है, तो . . .

किसी आकस्मिक आघात के परिणाम स्वस्पद या अन्य किसी कारणवश यह वेश्वने में आया है, कि उसका कमर बड़ों की उपेक्षा बच्चे पर ज्यादा होता है। मरियूद की ताङियों में अत्यधिक स्थिराय उत्पन्न होने के कारण यह कभी-कभी सदमों का रूप धारण कर लेता है और वह केमल पुष्प इस कुप्रभाव को झेल नहीं पाता, फलस्वरूप वह बच्चे कमर ही बीमार पड़ जाता है और बात-बाल पर छिड़विड़ाना, घर कार्य का विरोध करना उसकी आवत्ता सी बन जाती है। ऐसी स्थिति में वह कभी रोता है, कभी हँसता है, तो कभी मौन हो जाता है। ये तीनों ही अवस्थाये उनके शरीर के मन पर महसा असर डालती हैं और धोर-धोरे उनकी स्मरण शक्ति कमज़ार पड़ने लग जाती है।

इस स्थिति से छुटकारा प्राप्त करने के लिए ही है यह अचुक 'मेघिनी गुटिका'।

शनिवार के दिन प्रातः कालीन बेना में धीपल के पेट की सात बार परिक्रमा कर कच्चे मूत्र से उसे बांध दें। और हाथ में मेघिनी गुटिका को लेकर मन ही मन बच्चे के रोग से मुक्त होने की जामना करें, पिर ५ मिनट तक वही रुड़े रुक्कर निम्न मंत्र का गान्मिक जप करें—

मंत्र

॥ उँौ कर्त्तौ कर्त्तौ एं कर्त्तौ कर्त्तौ उँौ ॥

तीन दिन ऐसा करें और फिर उस गुटिका को बालक के गले में पहना दें। महीने भर पश्चात मेघिनी गुटिका को नदी में प्रवाहित कर दें।

साधना सामग्री : 80/-

ਕਥਾ ਦੀ ਕਥਾ

ਮੋਖ

जो कार्य आप करना चाहते हैं, कर सकते हैं, तोकल निर्णय लेने में मौलिकता और नुस्खा-बृद्धि आवश्यक है, जन्वत्रागी में कोई कार्य न करें। बरोजगारों के लिये भी यह समय अनुकूल एवं अधिक लाभ देने वाला सिद्ध होगा। सदृश यह बाहर चलाते समय विशेष संवरपानी बरसती है। विश्वासघात की स्थिति बन सकती है। मित्र साथ लोड़ जाएंगे। तथा समय-अभ्यन्तर आपको पीड़ा पहुँचाने का प्रयत्न भी करेंगे। बापून्य सुख समान्य रहेगा, लेकिन संतान पक्ष के करण विना व्याप हो सकती है। धार्मिक एवं मानविक प्रत्यागों में व्यसनाता रहेगी। अनुकूलता ताति त्रेता आप 'सूर्य साथिना' सन्दर्भ करें, इस माह की शुभ तिथि २, १०, १५, २१, २५ है।

दुर्लभ

मह मात्र आपके लिए बहुत ही अच्छा रहेगा क्योंकि इस समय आपकी शब्दवशा बहुत ही अच्छी तरह है, इस कारण आपके सके हुए कार्य भी बनेंगे। आपने जो विजयेष शुरू किया है उसमें आपको बहुत ही सफलता मिलेगी। नैकरीपैदा वर्ग के लिए समय बहुत ही स्थिर रहेगा उनके कार्य रुक-रुक कर पूरे होंगे, साधनात्मक चिन्तन बनाये रखें। दात्पत्य सूख में विदि हो नी। श्रमिक वर्ग के लिए सभ्य बहुत ही लाभदायक रहेगा उनके सभी कार्य समय पर पूरे होंगे जिससे मन प्रसन्नचित रहेगा, परिवार में किसी नये महागम के जाने से प्रसन्नता का वातावरण रहेगा। दिवारी वर्ग के लिए सभ्य बहुत ही परिश्रम करने वाला रहेगा उनके स्वाच हुए कार्य रुक-रुक कर पूरे होंगे। इस सभ्य अप 'सरस्वती साधना' समाज करें। इस मात्र की शर्म तियो - १२११२३२८.

मिथ्या

बिरो के बहकावे में आकर के कोई कार्ड न करे अन्यथा आपको हानि होगी। इसनिव अपने पिता जी के डिग्नेस में ध्यान देतो ज्यादा ही नाभलायक रहेगा। अपने माता-पिता का आदर करें उनसे जान की बातें सीखें जिसकी आप मैं करते हैं। नौकरी पढ़ा जरूर के लिए समय बहुत लामदायक रहेगा उनके कार्य की सभी लोग सराहना बरेगे। तथा श्रापिक वर्ष का समय ठीक-ठीक ही रहेगा। परिवर्त में परशानियाँ बढ़ेंगी जिससे यह भी डूँगी रहेगा। बेरोजगार अवक्त्रियों के लिए समय अच्छा रहेगा उनकी नीकरी लगने की समावना है तथा प्रबल भावोदय का योग है इसलिए समय का सही उपयोग करें। इस समय आप योक्षणी साधना सम्पूर्ण करें, इस माह की अनकूल नियतियाँ — ३, १३, १८, २३, २८,

३५५

समय आने पर निर साय छोड़ सकते हैं, अतः किसी सी महोगी की आशा करना व्यर्थ के तनाव को ही जन्म देगी। व्यवहार के प्रयासों पर भीलिक सूझा-बूझ के साथ कार्य करें धर्मिक प्रसंगों को लेकर यात्रा योग बनेंगे तथा जारीक व्यवहार में वृच्छी होगी। नीठनसाधी के स्पष्टस्थ से सम्बन्धित चिंता रहेंगी। सतान की ओर से अनुकूलतायाक समाचार प्राप्त होंगे। अधिकारियों के राहयोग से गच्छ बाधा के निवारण होना। बाद विवद या मनभद्र होने की दृढ़ा में संयम से काम ले। साक्षात्कार में सफलता प्राप्त होगी। इस माह आप निखिल मुद्रिका धारण करें तथा 'गुरु इववस्थ धारण साधना' सम्पन्न करें। आपके लिये शुभा तिथियाँ हैं—१, ८, १२, १८, २३.

問題

आप अपने क्रोध पर नियंत्रण नहीं रख पाते हैं पहली आपकी भवसे बड़ी मूल है हमेशा अपने क्रोध पर नियंत्रण रखें। इस समय आपके परिवार के लोगों को आपसे बहुत दी आशाएं हैं उनकी भावनाओं को जमझाने का प्रयास करें इसलिए अपनी सारा समय पढ़ाई में लगाए तो बहुत ही अच्छा रहेगा। नीकरी पैदा करने के लिए तथा बहुत ही लकड़ी रहेगा उनकी यकायक नीकरी में पढ़ोत्तिहांगी तथा उनके कार्य की बरहना होगी समाज में उनका मान-सम्मान होगा व्यापारी वर्म के लिए समझ मध्यम रहेगा उनके कार्य सुन-सुन कर पूरे होंगे तथा उनको व्यापार में जानि भी हो सकती है इसलिए वर्म पैसे में व्यापार करें। इस समय आप 'महालक्ष्मी साधना' नम्पन करें। दस माह शुभ तारीख - ३, १२, १५, २३,

२५८

चला आ रखा अवक प्रयास सफलता देने वाला फिर होगा। जो कार्य आपने उपर इधर मैं ले रखा है, पहले उसे पूर करें तथा नये कारोबारी ममलों में किसी भी प्रकार की जलवायी न करें। स्वास्थ्य को लेकर तनाय रेणा तथा चिकित्सा व्यवहार में बहुदि होगी। सामाजिक मर्यादा तथा मान सम्मान को बनाए रखने का प्रयत्न करें। साधानात्मक दृष्टि से यह माह आपके लिए अनुकूल रहेगा। अधिकारियों से मेल जान उठ कर रखें। अदानती मुकाबलों में अनुकूलता प्राप्त होगी। भौतिक सुख-सुविधाओं में बहुदि होगी। आप 'पंचवेद साधना' सम्पन्न करें, इस माह की शुभ तिथियाँ - ४, ११, १५, २३, २८,

सर्वोदय, अनुत्त, चैव, पुष्प, छिपुष्कर, रिंडि
इन दिवसों पर आप किसी भी साधना को समझ कर लकड़ते हैं।
24 दिसम्बर - सर्वोदय सिंह योग
2 जनवरी - सर्वोदय सिंह योग
8 जनवरी - सर्वोदय सिंह योग
16 जनवरी - निष्पृष्ठ योग

हुला

(श, श्री, ख, ता, ती, दू, ते)
आपके लिए साक्षात्कार आपि में सफलता के योग बन रहे हैं, लेकिन प्रश्निम करना आपके लिए अनिवार्य होगा। बेरोजगार व्यक्ति रुद्र व्यवसाय में लाभ अर्थात् कर सकेंगे। उनकलता तो प्राप्त होगी, परन्तु उसके नारं में जान बालों बाखाएं भी कटकर सिर होगी। अपने उसके नारं सामान्य हो रहेगा। किसी से व्यहोग की आशा करना व्यवहार हो सकता है। जीवन साधी वा सहयोग तथा सतान सुख सामान्य ही रहेगा। आकर्षित धन प्राप्ति का योग नहीं, अतः लाभ धन व्यवहार न करें। इन समय आप 'बहाकाली साधना' सम्पन्न करें। अनुकूल तिथियाँ - ८, १३, २३, २४, २९.

तृष्णितक

(तो, ना, भी, जू, जे, लो, वा, वी, दू)
यह माह आपके लिए उत्साह से तो परिपूर्ण रहेगा लेकिन करोबारी भागों में कुछ विपरितता रहेगी। अपने चारियों के बहकावे में आकर कोई कार्य न करें। जो भी निषेध लेने द्वारा स्वयं की मानिक रुद्र-बूझ से ही लें। बेरोजगार वर्ग के व्यक्ति करोबारी स्थितियों को लेकर उत्साहित रहेंगे तथा दंतरच्छा आदि में सञ्जलताएं प्राप्त करेंगे। जीवनसाधी का सहयोग तथा सतान पक्ष आपके लिए अनुकूल। प्रेम-प्रसंगों वा लेकर सावधानी बरतें। शत्रु पक्ष के की ओर से विश्वासवात हो सकता है, पूर्ण सावधानी के साथ कार्य करें। चम्पूं अनुकूलता हेतु आप 'शक्ति साधना' सम्पन्न करें। अनुकूल तिथियाँ - ४, १२, १८, २३, २५, २७, हैं।

थलु

(वे, यो, आ, भी, था, या, जा, जी)
आपके सहयोग से जिसी मित्र वा रुका हुआ कार्य पूर्ण होगा। किसी भी लिया हुआ अन चुकाना पड़ेगा इसलिए व्यर्थ विवाद ने बचे। शक्तिक वर्ग अधिक दृष्टि से अनुकूलता प्राप्त करेंगे तथा स्वास्थ्य की दृष्टि से समय सामान्य रहेगा। जीवनसाधी की ओर से उपेक्षा प्राप्त होने से मन में विकल्प रहेगा। किसी के बहकावे में आकर कोई गलत कार्य न करें। जहां प्रेम प्रसंगों में अनुकूलता प्राप्त होगी वहीं प्रेम विवाह के मामलों वा लेकर तनाव रहेगा। धर्मिक पर्व मांग निक प्रसंग सामान्य रहेंगे। पूर्ण अनुकूलता प्राप्त हेतु आप 'कामदेव रति साधना' सम्पन्न करें। अनुकूल तिथियाँ - ५, १२, १३, २३, २५, २६.

मकर

(भौ, जा, जी, खू, जै, रु, जा, भी)
आप इस समय कर डूपति बन सकते हैं लेकिन आप योहु सं प्रवास बरगे तो इसलिए आप अपने समय का सही उपयोग करें और फैन पर लोरिया करते रहें अर्थात् नगम बहुत ही अ च्छा है आपके लिए इसलिए इन समय का उपयोग आप कीन बोगा औरोडपति के लिए कर सकते हैं। नीकरी पेशा वर्ग के लिए समय बहुत ही अ च्छा रहेगा उनके साथ ही पुरे कार्य समय पर पूरे होंगे जिससे मन प्रसन्नतावन्तर रहेगा हस समय आप महामृत्युजय साधना सम्पन्न करें। युध तिथियाँ १, ५, ११, २१, २३, २८.

ज्योतिष की दृष्टि से दिसम्बर २०००

यह मास रु जननेतिक दृष्टि से अनुकूल रहेगा पड़ोसी दृश्यों से घोटी अनुकूलता अवश्य आयेगी। शुक्र, मकर का और शनि वृषभ का नये सहयोग बनायेगा, महाराई में युधि अवश्य होगी कई राजनीतिक उच्च अधिकारियों के लिए प्रतिष्ठा हानि, भारत और अमेरिका सम्बन्धों में नया अध्याय बनेगा।

बहुत ही अच्छा रहेगा इसलिए समाज में भी आपका गान सम्मान होगा। बेरोजगार व्यक्ति के लिए समय सहयोग रहेगा अगर वह नवास करें तो निश्चित ही सफलता उनके हाथ लगेगी इस समय आप 'सौम्य महाकाली साधना' सम्पन्न करें। शुभ तिथियाँ ३, १०, १३, २८

कुम्भ

(गु, जे, वो, सा, शी, सू, से, सो, दा)
इस समय परिवार में बहुत ही कष्टमय समय चल रहा है इसलिए आप बहुत ही परेशान रहते हैं इसलिए इसमें सत नहीं होने व्यवहार समय एक सा नहीं होता है। अभी किसीमत आप की साथ नहीं दे रही है इसलिए अपने गुरु को भूले नहीं वह आपके बास्त है। इसान की जिन्दगी में दुख भूख नो आते ही रहते हैं। नीकरी पेशा वर्ग के लिए समय सहयोग ही रहेगा तथा श्रमिक वर्ग के लिए नमय व्यवहार ही लाभदायक रहेगा उनको बहुत से स्वाधिम अवश्य आवंगे ही सकता। एकापक करोडपति भी बन सकते हैं। इसलिए अपने आप पर पूरा विकास रखें जो आपने सोच रखा है वह अब होने जा रहा है। यहां आप पर आश्चर्य करेंगे कि यह केसे हो सका। इस समय आप 'लक्ष्मी साधना' सम्पन्न करें। शुभ तिथियाँ ३, १०, १६, २२, २४,

मीठा

(की, दू, थ, झ, के, ले, चा, ती)
यह समय आपके लिए साधानों के साथ व्यापीत करने का है, यूं तो आप पूर्ण पैलूबता से युक्त हैं लेकिन अधिक उत्साह कामके लिए हानिप्रद सिद्ध हो सकता है, इसलिए संयम का उपयोग करना न भूले जीवनसाधी का सहयोग प्राप्त होगा कहीं ने एकदम से धन की प्राप्ति होगी। तथा आप्यायिकता में ज्यादा ही निच रहेंगे इस समय किसी धार्मिक ध्यान में जाने का योग है। बेरोजगार व्यक्तियों के लिए समय बहुत ही अच्छा रहेगा उनके साथ ही पुरे कार्य समय पर पूरे होंगे जिससे मन प्रसन्नतावन्तर रहेगा हस समय आप महामृत्युजय साधना सम्पन्न करें। युध तिथियाँ १, ५, ११, २१, २३, २८.

इस मास के व्रत, पर्व एवं त्योहार

- 21 दिसम्बर - पौष कृ. पक्ष गुरुवार एकादशी व्रत
- 23 दिसम्बर - पौष कृ. पक्ष शनिवार प्रव्रोद्ध व्रत
- 25 दिसम्बर - पौष कृ. पक्ष योगवार अमावास
- 27 दिसम्बर - पौष शु. पक्ष बृद्धवार चन्द्रवशीन
- 3 जनवरी - पौष शु. पक्ष चंगलवार अष्टमी
- 6 जनवरी - पौष शु. पक्ष शनिवार एकादशी
- 7 जनवरी - पौष शु. पक्ष रविवार प्रदोष व्रत
- 9 जनवरी - पौष शु. पक्ष मंगलवार पूर्णमासी चन्द्र ग्रहण
- 13 जनवरी - माघ कृ. पक्ष शनि मकर संक्रान्ति

रामाया

साधक पाठक तथा संवेदन समान्य के लिए समय का वह समय यहाँ प्रस्तुत है जो किसी भी व्यक्ति के जीवन में उचित का करण होता है तथा जिन्हें जान कर आप खड़े अपने लिए उचित का मार्ग प्रशस्त कर सकते हैं।

नीचे दी गई सारणी में समय को श्रेष्ठ रूप में प्रस्तुत किया गया है — जीवन के लिए आवश्यक किसी भी कार्य के लिये यह वह व्यापार से सम्बन्धित हो, जोकरी से सम्बन्धित हो, घर में शुभ उत्सव से सम्बन्धित हो अथवा अन्य किसी भी कार्य से सम्बन्धित हो, आप इस श्रेष्ठतम् समय का उपयोग कर सकते हैं और सफलता का प्रतिशत 99.9% आपके मान्य में अंकित हो जायेगा।

**ब्रह्म मुहूर्त का समय प्रातः ४.२४
ले ६.०० बजे तक ही रहता है।**

वार/दिनांक	श्रेष्ठ समय
रविवार (17, 24, दिसम्बर 31, 7, जनवरी)	दिन ७.३६ से १०.०० १२.२४ से २.४८ तक ४.२४ से ५.३० तक रात्रि ७.३६ से ९.१२ तक ११.३६ से २.०० तक
सोमवार (१८, २५ दिसम्बर १, ८, जनवरी)	दिन ६.०० से १०.४८ तक १.१२ से ६.०० तक रात्रि ८.२४ से ११.३६ तक २.०० से ३.३६ तक
मंगलवार (१९, २६, दिसम्बर २, ९, जनवरी)	दिन ६.०० से ७.३६ तक १०.०० से १०.४८ तक १२.२४ से २.४८ तक रात्रि ८.२४ से ११.३६ तक २.०० से ३.३६ तक
बुधवार (२०, २७, दिसम्बर ३, जनवरी)	दिन ६.४८ से ११.३६ तक रात्रि ५.४८ से १०.४८ तक २.०० से ५.२४ तक
गुरुवार (२१, २८, दिसम्बर ४, जनवरी)	दिन ६.०० से ६.४८ तक १०.४८ से १२.२४ तक ३.०० से ६.०० तक रात्रि १०.०० से १२.२४ तक
शुक्रवार (२२, २९ दिसम्बर ५, जनवरी)	दिन ९.१२ से १०.३० तक १२.०० से १२.२४ तक २.०० से ६.०० तक रात्रि ८.२४ से १०.४८ तक १.१२ से २.०० तक
शनिवार (१६, २३, ३० दिसम्बर ६, जनवरी)	दिन १०.४८ से २.०० तक ५.१२ से ६.०० तक रात्रि ८.२४ से १०.४८ तक १२.२४ से २.४८ तक ४.२४ से ६.०० तक

वार/दिनांक	श्रेष्ठ समय
रविवार (१४ जनवरी)	दिन ६.०० से १०.०० रात्रि ६.४८ से ७.३६ तक ८.२४ से १०.०० तक ३.३६ से ६.०० तक
सोमवार (१५, जनवरी)	दिन ६.०० से ७.३० तक १०.४८ से १.१२ तक ३.३६ से ५.१२ तक रात्रि ७.३६ से १०.०० तक १.१२ से २.४८ तक
मंगलवार (१६, जनवरी)	दिन ६.०० से ८.२४ तक १०.०० से १२.२४ तक ४.३० से ५.१२ तक रात्रि ७.३६ से १०.०० तक १२.२४ से २.०० तक
बुधवार (१०, जनवरी)	दिन ७.३६ से ९.१२ तक ११.३६ से १२.०० तक ३.३६ से ६.०० तक रात्रि ६.४८ से १०.४८ तक २.०० से ६.०० तक
गुरुवार (११, जनवरी)	दिन ६.०० से ८.२४ तक १०.४८ से १.१२ तक ४.२४ से ६.०० तक रात्रि ७.३६ से १०.०० तक १.१२ से २.४८ तक
शुक्रवार (१२, जनवरी)	दिन १०.३० से १२ तक ४.२४ से ५.१२ तक रात्रि ८.२४ से १०.४८ तक १२ से ३.३६ तक ४.२४ से ६.०० तक
शनिवार (१३, जनवरी)	दिन १०.३० से १२.२४ तक ३.३६ से ५.१२ तक रात्रि ८.२४ से १०.४८ तक २.०० से ३.३६ तक ४.२४ से ६.०० तक

क 'दिसम्बर' 2000 मत्र-तत्र-यत्र विज्ञान '62'

अंक

कि यह व
दिव का ।
प
अनुचूल ।
प्रकाशित-२
जिव्हे सम

15 विसम्ब

वृद्धा
शक्ति
ज्ञान
दर्श

16 विसम्ब

17 विसम्ब

18 विसम्ब

19 विसम्ब

20 विसम्ब

21 विसम्ब

22 विसम्ब

ज्ञ
कुर्या

23 विसम्ब

24 विसम्ब

25 विसम्ब

कारा
प्रेमाव
मोह
दर्श

यह हमाँ नहीं बरसाहमिहिर कहा है

किसी भी कार्य के प्रारम्भ करने से पूर्व प्रत्येक व्यक्ति के मन में संशय-असेशय ही भवना रहती है, कि यह कर्त्ता सफल होगा या नहीं, सफलता प्राप्त होगी या नहीं, बधाएं तो उपस्थित नहीं हो जाएंगी, पता नहीं दिव का प्रारम्भ किस प्रकार से होता, दिन की समाप्ति पर वह स्वयं को तावदरहित कर जावेगा या नहीं।

प्रत्येक व्यक्ति कुछ ऐसे उपाय अपने जीवन में अपनाना चाहता है, जिनसे उसका प्रत्येक दिव उसके अनुकूल हो और आनन्द दृढ़ बन जाय। कुछ ऐसे ही उपाय आपके समक्ष प्रस्तुत हैं, जो बरसाहमिहिर के विदिध प्रकारित-अप्रकारित ग्रंथों से संकलित हैं, जिन्हें यहाँ प्रत्येक दिवस के अनुसार प्रस्तुत किया गया है तथा जिन्हें समझ करने पर आपका पूरा दिव पूर्ण सफलतादायक बन सकेगा।

- 15 विसम्बर नाम पर जाने के पूर्व निम्न इलोक का ११ बार पाठ करके ही जाएँ—
वृत्त्वा स्वदं स्थिर लिवासदती वभूद,
शस्त्रित्रयी वपुषि दीप्तिमति स्वर्वम् ।
ज्ञानं द्वितीय समुद्रं सविकाशमाम्,
वर्णे युरो! जिस्तित ते वरणार्दिनदम् ॥
- 16 विसम्बर अपेन्द्र को अपने साथ लेकर जाने से सारे महत्वपूर्ण कार्य सफल होंगे। (न्यौठावर ६०/-)
- 17 विसम्बर शहद का भक्षण कर बाहर जाने से पूरा तिन उल्लासमय व्यतीत होगा।
- 18 विसम्बर पांच लींग को एकत्र कर कान्ना में बांधकर अपने कार्य की सकलता के लिए प्रार्थना करें, उसे किसी घटिय में चढ़ा दें।
- 19 विसम्बर सुकृति को शहद में डालकर घार से बाहर निकलें। (न्यौठावर ६०/-)
- 20 विसम्बर हनुमान के विश्रांति समक्ष तेल का दीपक लगा कर बाहर जाएँ।
- 21 विसम्बर गुरु जन्म दिवस के अप में प्रातः, निखिलेश्वरानन्द स्तवम् का पूरा पाठ करें, विवस पर्वता गुरु चिन्नम करें। सामर्थ्यानुसार गुरु भेदा करने का संकल्प लें।
- 22 विसम्बर बाहर जाने से पूर्व निम्न देह का उच्चारण करें—
जय जय जय हनुमान जयसाहं ।
कृपा करहु युरुदेव की लहै ॥
- 23 विसम्बर प्रातः काल चेतना मंत्र औं ही मम प्राण देह रेम प्रतिरोध चेतन्य नाश्यहीं औं नमः क्वा पांच बार उच्चारण करें।
- 24 विसम्बर प्रत्येक कार्य से पूर्व अपने इष्ट देव के मंत्र का ग्यारह बार जप करें।
- 25 विसम्बर गुरु चित्र के समक्ष निम्न इलोक को पांच बार बोले कारुण्य सिन्धु लिखिते श्वर! दीलदर्जु ।
प्रेमावतार! परिवोष्य शिष्यवर्जम् ।
मौहं लिवार्थं यस्तिक्षय चित्तस्वस्त्रयं,
वर्णे युरो! जिस्तित! ते वरणार्दिनदम् ॥
- 26 विसम्बर प्रातः काल विष्टर से उठने समय जिस अंतर का शब्द
चल रहा हो, उसी पैर की स्वासे पहले शुमि पर रखें।
- 27 विसम्बर 'श्री' बीज का उच्चारण करते हुए अपनी यात्रा समाप्त करें।
- 28 विसम्बर अपने मस्तक पर अष्टगोथ का तिलक करके हाँ कार्य हेतु बाहर जाएँ।
- 29 विसम्बर पांच दी की बत्ती का दीपक जलाकर गुरु जी के छिन के समझ रख कर ही कार्य हेतु जाएँ।
- 30 विसम्बर किसी भी कार्य को आरम्भ करने से पूर्व 'क्लौ' मंत्र का पांच बार उच्चारण करें।
- 31 विसम्बर आज ११ बार 'क्लौ' मंत्र का उच्चारण करें
- 1 जनवरी दृश्य से ब्रने प्रदार्थ का येवन कर ही घर से बाहर जाएँ।
नीन्द्वा को अपने ढांडिने छाप से अपने पूरे उरीर पर स्पर्श करा कर निजन स्थान में पैक दें।
- 2 जनवरी प्रातः काल 'ओ श्रवेश्वराय नमः' मत्र बा ग्यारह बार जप करें।
- 3 जनवरी बाहर जाने से पूर्व निम्न मंत्र का उच्चारण करें—
कररज्ञे वस्तते तक्षसी कर रस्ते स्वर्वदती ।
कर रस्ते स्थितो द्रव्या प्रभाते कर रसर्जम् ॥
- 4 जनवरी प्रातः किसी काले कुते को शेटी खिलाएं, अपके आने वाले कष समाप्त होंगी।
- 5 जनवरी इस दिन आप अपने वन्दों में रुपेत रंग ली प्रथानना रखें, आपका दिन शुभ डागा।
- 6 जनवरी बाहर जाने से पूर्व सूर्य से बनो वस्तु उड़ाने करें।
- 7 जनवरी एक कान्ना पर कुकुम में भोल बार गुरु मन लिख बर उसे किसी नहिं में चढ़ा दें।
- 8 जनवरी प्रातः काल पांच गुलाब के फूल गुरु चित्र पर चढ़ाएं।
- 9 जनवरी बेसन से बनी बरन्तु का बान अर ही बाहर जाएँ।
- 10 जनवरी बाहर जाने समय चुट्की भर हींग की दीक्षण दिला की ओर केक में।
- 11 जनवरी नवदुर्गा विश्रांति समक्ष तेल का दीपक लगा दें।
- 12 जनवरी नवदुर्गा विश्रांति समक्ष तेल का दीपक लगा दें।
- 13 जनवरी गुरु समर्पण स्तुति करके ही घर के बाहर जाएँ।
- 14 जनवरी दुमेशा ही प्रसन्न रहकर कार्य आरम्भ करें।

स्तोत्र शक्ति

श्री विद्या, ज्ञानदायक

विद्या-महारूपीत्र

सर्वानीया महाशक्तिः सर्वविद्या प्रदायिनी
समस्त विद्याओं को देने वाली भगवती
ननिताम्बा की आराधना अवश्य करनी चाहिए

स्तोत्र वस्तुतः हृदय के भावों को स्तुति या काव्य रूप में अपने आराध्य को अर्पित करने की प्रक्रिया है। इसमें अन्य किसी कर्मकाण्ड या तंत्र विधान की आवश्यकता नहीं होती। स्तोत्र तो मात्र हृदय से पूर्ण भावमय होकर पढ़ें जाते हैं। हृदय के भाव और स्तोत्र की शब्द संरचना इन्हीं दोनों का सम्मिलित प्रभाव साथक या स्तुतिकर्ता को अभीष्ट सिद्धि प्रदान करता है। मात्र स्तोत्र पाठ से ही जीवन में कई प्रकार की अनुकूलताएं प्राप्त हो जाती हैं।

प्रातः स्मरामि लक्षितावदनारविन्दं
विम्बाश्वरं पृथुत्समौक्तिकशोभितास्मः ।
आरक्षर्तीर्थलघ्वः मणिकुण्डसादच्च
मन्दस्मितं सूजमवोज्ज्वलभास्तदेशम् ॥१॥

अर्थ – मैं प्रातः काल भगवती लक्षिताम्बा के कमल सदृश मुख मण्डन का स्मरण करता हूँ, जिनके लिंब फल के समान लाल लाल अधर, बड़े बड़े मोती के नयूनी से शोभित नामिका, कणों पर्यन्त केले हुए विशाल नेव तथा जो मणि जटित कुण्डल युक्तकान मन्द मुस्कान से युक्त, है, तथा जिनका मस्तक कम्तुरी के तिलक से सुशोभित है।

प्रातर्भजामि लक्षितामुजकत्पवरसी
रक्तं हृलोक्यस्तद्गुलियहस्तद्वाद्याम् ।
मणिकवचहेऽमवलव्याहृदशं भराद्वादः ॥

युण्डेक्षुचायकुसुमेषुचूणीवशान्नाम् ॥२॥

अर्थ – मैं प्रातः काल भगवती लक्षिताम्बा के भुजारूपी कल्पलता का स्मरण करता हूँ, जो लाल लाल अंगूठी से चुन्दरतम तथा कोमल अंगूली रूपी बोपलों से युक्त है, तथा जो भुजाएं रत्न नंगिष्ठ सोने के कक्षण तथा बाहुबन्ध से शोभित है, और जिन भुजाओं में धनुष, पृष्ठमय वाण अकुश तथा अभयदान भूशोभित हैं।

प्रातर्नम्भामि लक्षितावस्त्रणाविन्दं
भन्तेष्वाज्जितिरतं भवसिक्षुपोतम् ।
पद्मास्त्रादिष्वरतात्रकपूजलीयं
यदमाङ्कुशव्यज सुवर्णस्त्रात्युग्राद्वादम् ॥३॥

अर्थ— मैं प्रातः काल भगवती ललिताम्बा के चरण कमलों का स्मरण करता हूँ, जो अपने इन्हों के अभीष्ट मनोकामनाओं को पूर्ण करने हुए तथा संसार सागर से पार उत्सने के लिए नीका के सुदृश हैं, कमल के आसन पर विराजमान ब्रह्मा आदि देवताओं द्वारा पूजित हैं, जो चरण, पदम, अंकुर, अवत एवं सुदर्शन चक्र के चिन्हों युक्त हैं।

प्रातः स्तुवे परशिवां ललितां भयान्ती
ब्रह्मद्वारेष्विभवां करणानवद्वाम् ।
विश्वस्व लृष्टिविष्वस्थितिहेतुभूतां
विद्येश्वरो लिप्यमवाहु मनसातिवृद्धाम् ॥४॥

अर्थ— मैं प्रातः काल परम कल्याणमयी भगवती ललिताम्बा का स्मरण करता हूँ, जिनका वेभव बेदान्त प्रतिपादित है, जो कल्याणमयी और परम शुद्ध स्वरूप है। जो सेसार के उत्पत्ति नाश एवं स्थिति के लिए कारण स्वरूप है, जो समस्त विद्याओं के अधिकारी देवी है, जो वेद, वाणी तथा मन की गति में अगम्य है।

प्रातर्वदामि ललिते तद्य पुण्यन्ताम्
कामेश्वरीति कमलेति महेश्वरीति ।
श्रीशाम्भवीति जगतां जगत्की वरेति
दाहदेवतेति बचसा त्रिपुरेश्वरीति ॥५॥

अर्थ— हे भगवती ललिताम्बा ! मैं प्रातः काल आप के पावन हत्म नाम का उच्चारण करता हूँ, कामेश्वरी, कमला, माहेश्वरी, शाम्भवी, जगत्तनी, परा, वामदेवी तथा त्रिपुरेश्वरी आदि आप के ही नाम हैं।

शिवरिवा शिवपदा शिष्ठेहा शिष्ठयूजिता ।
उप्रमेवा स्वप्रकाशामजोवाचामजोवरा ॥६॥

अर्थ— हे भगवती ललिताम्बा आप शिव की प्यारी, शिव में लीन रहने वाली, जानियों द्वारा पूजा की गई तथा जानियों की परमारथ्य है। आप अवराजेया, मन वर्णी द्ये अवगम्या एवं प्रकाशमयी हैं।

चिर्छित्तिष्ठेतनारूपा जडशक्तिर्जडान्मिका ।
माघक्री द्व्याहृतिः सकृद्याद्विजवृद्धनिषेविता ॥७॥

अर्थ— आप ही चिन शक्ति हैं, चेतन रूप में रहने वाली

हैं, तथा जड शक्ति के लिए जड रूप धारण करने वाली हैं, गायत्री, व्याहृतियों तथा संघर्ष्य हैं। आप द्विनों द्वारा निरन्तर उपासनीया हैं।

तत्त्वस्त्रवा तत्त्वमयी एवज्ञकोशरक्तरस्थिता ।
जिः स्त्रीमामहिमा नित्यवौवता मदशालिनी ॥८॥

अर्थ— तत्त्व के आसन वाली तत्त्व स्वरूपा पांच बोशों के अन्वर रहने वाली सब्द वीक्षण युक्त, मद से पूर्ण रहने वाली आपकी महिमा अचल है।

मदधूर्णितत्त्वरक्ती परपात्त्वरण्डभः ।
चलवनद्वविन्धधर्मी चास्पेवकु सुमप्रिचा ॥९॥

अर्थ— आपनी मस्तों के कारण रक्त नेत्रों से झुक रक्त वर्ण के चरणों और कायोलों से युक्त चंदन के समान सुकोमल तथा शोलल अंगों वाली और चंपा के पुष्प के समान अनुराग देने वाली है।

कुशला कौमलाकारा कुरुकुल्ला कुलेश्वरी ।
कुलकुण्डास्वा कौलमार्जतत्परसेविता ॥१०॥

अर्थ— हे भगवती ! आप सब शक्ति सम्पन्न सुकोमल अंगों वाली शक्ति देने वाली शक्ति की स्वाभिनी है, उत्पत्ति स्थान में रहने वाली और शक्ति मार्ग के उपासकों की मनोकामना को पूर्ण करने वाली है।

कुमारस्यणलाधाम्या तुष्टिः प्रसिद्धितिर्थीतः ।
शान्तिः स्वस्तिमती कालिन्दिनिवती
विज्ञतात्पिती ॥११॥

अर्थ— आप कातिंक और नपेश की जननी हैं तुष्टि पुष्टि मति और धृति रूप है, शान्ति स्वरूप कल्याण देने वाली कांतिमयी आनन्द देने वाली तथा शामी विष्णों को नष्ट करने वाली हैं।

तेजोवती त्रिलक्ष्मा त्वेत्तरक्ती कामस्त्रिणी ।
मालिनी हस्तिनी माता सत्याचतुर्वासिती ॥१२॥

अर्थ— सर्वतेजोमयी तीन नेत्रों वाली चंचल नेत्र युक्त अंगी इच्छा अनुसार अपना रूप धारण करने वाली दिव्य नाला धारण करने वाली छह स्वरूपा सर्वजननी तथा मलय वर्तन पर निवास करने वाली हैं।

नि

निर्दिष्ट
महाप

उरुं
सम
सम
सम

से तुंडारे
मरि चिना
मे तुंडारे
अनुसरण

विच गुरु
हो गए, वि
रस से म
जल ही उ
बृक्ष में वि
रस ह, उ
चना एक

लह निक
भी थे प
रहने से उ
पत्र तो ।

**सुमुख्यो ललिती सुभूः शोभना सुशनायिका ॥
कल्पकण्ठी कान्तिमती क्षोभिणी सूक्ष्मसूपिणी ॥१३॥**

अर्थ— आपका चुख मार्गदर्शन कल्पन्त सुन्दर है, तथा कानल
के सामान सुकोमल है। सुन्दर तथा शोभा युक्त चित्र को कागड़ में धारण
करने वाली कान्तिमती तथा सूक्ष्मसूपिणी सूर्वन विचरण करने वाली है।

**वज्रेश्वरी वामदेवी वचोऽवलयाविवर्जिता ॥
सिद्धेभवती लितुविद्या लिदुमता वशस्त्रियनी ॥१४॥**

अर्थ— हे जगद्वाजे आप वच के समान कठोर भी हैं, अतस्य
धृद में गतिहृदय वन वाली है, लिक्षों की माला है, सिख विचातया
सिद्धों की घ्वासिनी है।

**विशुद्धिवक्त्र लिलदात्तरक्षत्रयर्था लिलोचना ॥
स्वद वाङ्गरिप्रहरणा वदनोक्त समस्तिता ॥१५॥**

अर्थ— आप लिलेता हैं, नाल धर्म की सम्पूर्ण शरीर वाली
विशुद्ध वक्त्र में निवाल करने वाली, एक मुख वाली तथा परशु खट्टण
आदि शब्दों वे दूरों पर प्रहार करने वाली हैं।

**वायव्याद्विविधा त्वक्स्था वशुतोक्त मध्यकरी ॥
अमृतातिमहाशत्तिसंवृता डाकिक्वीश्वरी ॥१६॥**

अर्थ— हे जगद्वावे जाप खीर ये प्रब्रह्म होने वाली हैं,

अज्ञानियों के लिए भैयकर रूप धरने वाली अनुत स्वरूपा महान शक्ति
से युक्त तथा डाकिनी को स्वामिनी है।

**अनाहतावज्जितवा रवामाभा वदनद्रुया ॥
वंश्वेज्जस्त्रक्षमात्माविद्यरा लितिरसस्तिता ॥१७॥**

अर्थ— अनाहत चक्र में निवाल करने वाली इद्यन वर्ण की
या नुखों वाली अमक्ते हुए दालों वाली हृदात्र आदि मालाओं को
धारण करके रक्त के मध्य निवास करने वाली है।

**आशुष्टकरं पुष्टिकरं पुत्रवं वश्वकारकम् ॥
विद्याप्रवं कीर्तिकरं सुकर्मत्वप्रदाचकम् ॥१८॥**

अर्थ— यह स्तोत्र आशु प्रदान करने वाला, पुष्टि देने वाला
पुत्र, पौत्र प्रदान करने वाला, शकुओं को वश में करने वाला, विद्या
और दुर्द्वेष देने वाला यश देने वाला एवं इन कर्मों की ओर प्रेरित
करने वाला है।

**सर्वसम्प्रदं सर्वसिद्धिं व सर्वसौख्यवम् ॥
सर्वभीष्ट्रदं चैव देशीतामसुमतीहरम् ॥१९॥**

अर्थ— हे भगवती आप का यह स्तोत्र नष्ट संवर्ति को देने
वाला, सभी सिद्धियों को देने वाला, सम्पूर्ण सुख प्रदान करने वाला,
समस्त मनोकामनाओं को पूर्ण करने वाला, भगवती जगद्ममा का
यह स्तोत्र जिन्य पठु करने से अभिष्ट फल को देने वाला है।

इसके जप या पाठ करने पर उत्सन्न हुई भगवती जगद्ममा
भक्तों की ननोकामनाओं को निष्ठित रूप से पूर्ण करती है।

स्तोत्र से लाभः— ललिताम्बा स्तोत्र का नित्य पाठ बालकों और विद्यायियों के लिए सर्वसा अनुकूल है, इससे
उनका मस्तिष्क ऊँचर और तीव्र रहत है, उनकी प्रनिधा का विकास होता है। ललिताम्बा को श्री विद्या भी कहते हैं, यह जान
को देती है तथा इस गजरजेश्वरी भी कहते हैं। यह धूम और विद्या देनों ही देती है, जिससे विद्या ज्ञान की प्राप्ति होती है।
ललिताम्बा देवी की उपासना से व्यक्ति के अन्वर समस्त ऊँच ए स्फुरित हो जाती है तथा मूलाधार से भव्यार तक समस्त
चक्र उद्भूत हो जाता है आत्मज्ञान की क्रमना करने वाले व्यक्ति को मणवती शक्ति ललिताम्बा की उपासना उब्रद्य ही करनी
चाणहि क्रयोकि यह नो विद्या और राज की देवी है। इसीलिए इसे शनरात्रेश्वरी देवी भी कहते हैं।

स्तोत्र सिद्धि विधि : — किसी भी सोमवार से इस स्तोत्र साधना को प्रारम्भ करें, अपने सामने गुरु चित्र और
मणवतो ललिताम्बा का चित्र रख लें, संक्षिप्त पूजन के बाद ललिताम्बा के चित्र पर चन्दन का तिलक, उक्त और सफेद
पूज्य अष्टित लें, अगरबत्ती जला दें। उपने मस्तक पर चन्दन का तिलक अवश्य करें। फिर 'ललिताम्बा स्तोत्र' का २१ दिन
नष्ट निष्ट्य २ पाठ करें। इसके पाठ से माधक की समस्त मनोकामना शीघ्र ही पूरी हो जाती है। और उसे हर कार्य में सफलता
मिलती रहती है।

जहां निखिल रस है, वहीं शिष्य जीवन्त है

अहस्त नाड़ी विद्युपड़न षटचक्र भेदन निधिविल रसेइवर ढोक्का

समर्पण- निधिविल तत्त्व में पूर्ण रूप से, नववर्ष का प्रारम्भ सेवा से, निधिविल रस में आप्लावित होकर जीवन का लक्ष्य निर्धारित कर उस महापथ पर जीवन के कठदम

अहं गुरुमि मनसा मनांसि,
सम् वित्तमनु चित्तेभिरेत् ।
मम वशेष् हृत्याजि वः कृणामि,
मम वातमनुवन्मर्त्ति एत् ॥

भगवन्ति का यह सूत्र स्पष्ट करता है कि मैं अपने मन से तुम्हारे मन को ग्रहण करता हूं, उसे अपने अनुकूल बनाता हूं। मेरे चित्त के अनुकूल अपने चित्त को बनाकर मेरा अनुसरण करो मैं तुम्हारे इदं को अपने वश में करता हूं। मेरे व्यवहार का अनुसरण करते हुए तुम मेरे साथ आओ।

यह सूत्र गुरु तत्त्व का सारभूत तथ्य है, जिसने अपना चित्त गुरु के चित्त में लगा दिया, "जिसके इदं में गुरु समृद्धि हो गए, जिसके व्यवहार में मैं गुरु का अनुसरण हो गया वह गुरु रस से सरबोर हो जाता है, जिस प्रकार वृक्ष में हर स्थान पर जल ही जल रहता है और वह जल दृश्यमन नहीं होते हुए भी वृक्ष में विद्यमान रहता है, उसी प्रकार जिसके जीवन में निधिविल रस है, उसका जीवन ही जीवन है। अन्य जीवन तो पंचभूतों से बना एक वेह मात्र है।

बारि मध्य धूत होई वरु लिकता ते बक तेल।

वृक्ष में निर्गुण निराकार वृक्ष विद्यमान है, मंथन करने से वह निकल ही आता है, पानी में धी नहीं है तो हजार वर्ष मध्य तो भी वा पिल नहीं हो सकता। तिल में तेल पहले से ही विद्यमान ग्रहने से मन्थने पर निकल ही पड़ता है। बालु को हजार वर्षों तक फले ते भी उसमें से तेल नहीं निकल मजलता। ठीक उसी प्रकार

जो शिष्य है उसमें निखिल रस अवश्य ही विद्यमान है, जीवशक्ति है तो अपने जीवन में तप त्राप, साधना द्वारा निरन्तर मध्यन कर उस निखिल रस से अकें आप को आप्लावित करने की।

एक साथ सब सधे सब साथे सब जाए।

केवल और केवल गुरु साधन सम्पन्न करने से ही व्यक्ति जीवन में गुरु तत्त्व से रसोआर हो सकता है। शुष्कनातो जीवन में ऊपर से ऊटी हुई है, जिस प्रकार पहाड़ कोड कर भी जल निकल ही पड़ता है, उसी प्रकार गुरु का सात्रिध्य जीवन में उस जल तत्त्व की प्राप्ति करता है, जो जीवन को रसमय बनाता है, जुरु जननत कोटि ब्रह्माण्डों के उपादान के लारग पंचमहाभूत पहले निर्गुण निराकार फिर संशुण निराकार और फिर संशुण साकार रूप धारण कर लेते हैं उसी निर्गुण निराकार भगवान का भगवती भूत शक्ति से गुरु निर्गुण तमक माया स्वरूप ब्रह्म विश्व और महेश बन जाते हैं।

'उपसमीपे आसनम् उपासनम्' उपने आप को पूर्ण रूप से समर्पित कर देना ही उपासना का चरम स्वरूप है। उपासक और उपासना दोनों के लीन होने पर केवल उपस्थ स्वरूप ही रह जाता है। जब-जब अपनी मन, इन्द्रिय, बुद्धि, चित्त, आहाकार से स्वरूप होकर बैठता है तो वह सात्रध्यान होता है। सामान्यतः वह समर्पित नहीं हो जाता, अकें परम आराध्य इष्ट देव के यामने बैठने के लिए अपने अपने उनके अनुस्थ बनाना आवश्यक है।

सद्गुरुक या
तात्पर्य या
और जीवन
लघु में अ
चेतनामय

परमहंसा
हुए जिन्हों
फैलाया
जीवन में
अद्भूत व
आवश्यक

कर रखी
बनाया है
छाटी सी
खण्ड-ख
जाएं।।
विख्यात

तो यह में
किया प्रा
हो तो नव
के लिए
मंजिल व
तो साधु
के जीवन
उसके उ

जना रहा
प्रदर्शनी
दृश्यमान
में विद्यु
उसमें य
मीनीव
सकते ह
जीव

प्रेरणा वज्र ज्ञानर गुरु

सृष्टि में उनन्त गुण हैं, उनन्त विद्या हैं, उनन्त कलाएँ हैं, इसके बावजूद भी ननुष्य अपने आप को अनुम और शुद्ध अनुभव करता है, तो स्पष्ट है कि उसके जीवन में प्रेरणा का सामर नहीं है। प्रेरणा का तात्पर्य है, प्रेरक से प्राप्त करना। जिस भाव से जीवन में प्राप्ति हो सके, वह भाव प्रेरणा भाव कहलाता है। प्रेरणा की साकार नूरी के बाल सदगुरु ही हो सकते हैं। यदि जीवन में गुरुत्व का एक सहवांश भी है तो वह सहवांश शिष्य को शांत नहीं लेणे सकता। उसके जीवन में गुरु का वह अंश निरन्तर लहरे उठाता है, गर्जन करता है, शिष्य को जीवन में कुछ करने की निरन्तर प्रेरणा देता रहता है।

निखिल रस वह अमृत बृद्ध है जो जीवन में बहने हुए हलाहल विह को भी उग्रता में परिवर्तित कर देती है, दृढ़ में एक बृद्ध वही का पड़ने पर दृढ़ फूट जाता है लेकिन निखिल अमृत रस प्रेरणा रस है जो सहस्र नाड़ीयों का भेदन करता हुए पूरे वेह मन और प्राण में व्याप्त हो जाता है।

सद्गुरु प्रेम का प्रतिमूर्ति ही नहीं साकार रूप होते हैं जिसमें गुरु में प्रेम कर लिया उसके लिए संसार के सारे प्रेम बोने हो जाते हैं, क्योंकि उसने प्रेम रस द्वारा निखिल रस का आख्यादान कर उसे अपने भीतर बढ़ा लिया। निखिल तत्त्व तो प्रब्रह्मानन् तत्त्व है, जो दूहरे हुए जीवन में प्रवाह ला सकता है, इम्मीलिपि गुरु को स्वेश्वर कहा गया है, शिव स्वरूप माना गया है। जहां गुरु है वहां रस जोषधी अवश्य ही है।

इसने अपने जीवन में गुरु को साकार रूप में देखा, निराकार रूप में भी देखा, सगुण रूप में भी देखा, निर्गुण रूप में भी देखा, गुरु से अनुभूति भी हुए और गुरु की अनुभूति भी प्राप्त हुई। यह सब कीदा गुरु किया है जिसमें शिष्य का कार्य अपने आप को समर्पित कर देना है। संकेहुए पानी में बबबू आ सकती है, रुके हुए जीवन में व्याधि आ सकती है लेकिन प्रवाहभान जीवन जल में और व्यक्तित्व में सारे दोष बहकर दूर हो जाते हैं। ये जीवन का निर्णय प्रवाह ही निखिल रस है। जहां इस प्रवाह को अपने अङ्गकार, बुद्धि से रोकने का प्रयत्न किया वही जीवन में अनुभूति समाप्त हो जाती है। जीवन में तरलता समाप्त हो जाती है। इस निखिल रस के प्रभाव को अवश्यक मत होने वाले ह्य प्रवाह में अपने जीवन को प्रवाहित करने में ही जीवन की साध्यता है।

लवीन लूटाव नव द्युग

हर क्षण जीवन में नवीनता आवश्यक है, जहां यह

परिवर्तन और नवीनता है वहां जीवन में जीनन्द आता रहता है, और जीवन में जब एक बार जीनन्द का प्रवाह प्रारम्भ हो जाता है, तब वह प्रवाह रुक नहीं सकता है। निखिल रस को 'तत्त्वमसी' कहा जाता है। सदगुरु कहते हैं कि शिष्य तुम मेरे 'तत्त्वमसी' हो तेरी आत्मा तत्त्व है और वह सत है, तुम भी दीरी तरह सत हो मेरे भीतर जो 'अणिमा' सूखम तत्त्व है वह ल्यून तेह में तुम्हारे भीतर व्याप्त है। बौज का देखकर कोई नहीं कह सकता कि इसमें कितना विशाल वृक्ष उगा हुआ है। गुरु का अणु रूप ही शिष्य स्त्री बौज है। उस आणु रूप में ही महान् वृक्ष बन पाकता है। यदि उसने पूर्ण प्रथा, साधन, तपस्या चे प्रिच्छन किया जाए।

यदि कोई व्यक्ति बहन से गकड़ा है और बंधन खोलकर उसे कहा जाए कि उस लोक्य देश की ओर चला जा सो वह बुधिमान व्यक्ति पृथग्ना पृथग्ना उचित स्थान पर पवृच्छा जाता है ठीक उसी तरह सदगुरु को पाकर भटकता हुए पुरुष अपने 'सत' रूप को पाने के लिए चल देता है। इस सन्मार में बधे रहने की अवधि तो उतनी ही है जिसने देश तक कोई गुरु आखो और बंधी पहुंच नहीं खोल देता उसके बावजूद तो 'सत' की प्राप्ति ही होती है।

नवीनता का संचार करना और जीवन को नवीन बनाना गुरु का कार्य है, शिष्य का कार्य विशुद्ध गम से अङ्गकार रहित होकर गुरु के समीप जाकर बैठ जाना है, जहां वह विश्वास और श्रद्धा विद्यमान रहती है वहां निखिल रस बढ़ने लगता है, रसेश्वर शिव रस प्रवाहित होता है।

सदगुरु धेय लक्षण उच्चरूप

भागीरथ ने तपस्या कर गंगा को विवश कर दिया कि वह हिमालय से उत्तर कर भारत में प्रवाहित हो। गंगा भागीरथ के इसी प्रयास के कारण, तपस्या के कारण गंगा को भागीरथी कहा गया। इस गंगा के पवित्र और तीखे बेग को भगवान शिव ने ही अपनी जटाओं में धारण कर पूरे भारत वर्ष को उत्पन्न किया, जहां एक और भगवान शिव पवित्र गंगा को धारण करने वाले हैं, वहां दूसरी और भगवान शिव नीलकण्ठ महादेव भी कहलाये, जिन्होंने समुद्र मंथन के पश्चात उत्तर विष को अपने कण्ठ में धारण किया।

गुरु का कार्य भी भगवान शिव के समान ही दोता है, शिष्य के सामने हजारों-हजारों दुख है, और गुरु के समझ हजारों-हजारों शिष्य हैं। इन सब के दुख रूपी विष को अपने भीतर धारण करना गुरु का कर्तव्य है। अनादिकाल से ज्ञानरूपी

सदगुर यहीं तो कार्य करते आए हैं। 'समझवामि युगे युगे' का तात्पर्य यहीं है कि जब-जब संसार में अज्ञान का अधकार बढ़ेगा और ज्ञान का सूर्य कम्स्त होने लगेगा तो सदगुर किसी न कियी रूप में आकर संसार के उज्ज्ञान को दूर कर नवीन विज्ञान-विज्ञान चेतनामय ब्रह्मावरण का निर्माण अवश्य हो करेगे।

इस शताब्दी का यह सीधा प्रभाव है कि हमें सदगुर-देव परमहंस स्वामी निखिल जगन्नन्द जी ने सदगुर प्राप्त हुए जिन्होंने अपने जीवन में केवल और केवल ज्ञान का प्रबन्ध किया था और जीवन की ओर जीवन में सिद्धांश्म किया। इकाकर स्थापित किया जाए। इसका अद्भुत ज्ञान पूरे संसार को दिया। इस क्रिया में सबसे पहले आवश्यक है विश्वाणु।

'विश्वाणु' का तात्पर्य है जो कुछ भी रचना आपने कर रखी है अथवा जिस प्रकार से भी आपने अपने आप को बनाया है। वह शुद्ध नहीं है, पूर्ण नहीं है। संसार के दुखों की छोटी सी खोट लगते ही आपके जीवन में बनाया हुआ मठल खण्ड-खण्ड ढो जाएगा। आप अपने जीवन में हताश निराश हो जाएं। इसलिए यह उद्दिष्ट है कि स्वयं इस कथ्ये जीवन का विश्वाणु कर स्वयं भेद ही नया जीवन निर्माण कर सकें।

गुरु किसी एक स्थान पर स्थापित होना नहीं चाहते वे तो वह में स्थापित अहस-सहस्र नाड़ियों में पहले विश्वाणु की किया प्रारम्भ करते हैं और जब वह विश्वाणु प्रारम्भ हो जाता है तो नवीन निर्माण प्रारम्भ होता है। जिस प्रकार मवन निर्माण के लिए यदि नील ही कच्छी हो तो उसके ऊपर कितनी ही मणिल की ईमास्त बनाई जाए वह अवश्य ही निर जाएगी। गुरु तो स्पष्ट स्वयं भेद के विश्वाणु की किया प्रारम्भ करते हैं शिष्य के जीवन की पूरा नींव तक खोद कर सुदूर नींव का निर्माण कर उसके ऊपर उसके जीवन का नया महल बनाते हैं।

शिष्य समझता है कि वह अपने जीवन का मठल स्वयं बना रहा है जो उसके जीवन में सुख आ रहे हैं वह तो उसके प्रयत्नों का फल है और जो उसके जीवन में दुरु आ रहे हैं वे इश्वर की इच्छा से जा रहे हैं। ऐसे समय में गुरु ही उसके जीवन में विश्वाणु क्रिया सम्पन्न कर उसे वह स्मरण दिलाते हैं और उसमें यह अमता प्रदान करते हैं कि तूम स्वयं विश्वाणु होकर भी नींव से लेकर कंगरे तक अपने जीवन का निर्माण स्वयं कर सकते हो।

जीवन निर्माण का आधार

विष्वाणी गुरु जब शिष्य के जीवन स्वारूप में नाड़ियों

में व्यास दीवों को बूर करते हैं तो इस विश्वाणु क्रिया में प्रारम्भ में बड़ा ही कष्ट होता है क्योंकि मनुष्य अपनी आदतों से मगबूर होता है परम्परा से अलग हटकर कार्य करने में उसे अवश्य ही हितक अनुभव होती है। ऐसे समय में गुरु ही आकर उसे जकड़ोरत है जन्मों जन्मों से निद्रा में बुल शिष्य को जगाते हैं।

जैसे निद्रा में जागने पर एक चालक रोता है उसी प्रकार प्रारम्भ शिष्य भी रोता है लेकिन जब उसे यह ज्ञान होता है कि उसे नींद से उसलिए जगाया गया है कि वह अपने सूचा मूल का ज्ञान कर ले गुरु उसे अपने हृदय से लगाकर उसके भ्रय की व्यास को छू करते हैं। उसके जीवन की पूरी आनन्दग्राम बनाने के लिए ही उसे जागत किया है। वह ज्ञान प्राप्त होते ही शिष्य आनन्दित हो उठता है इस आनन्द प्रदान करने वाले दिव्य विद्या को ही 'सहस्रनाई विश्वाणु' पट्टचक्र भेदन भठा गया है।

पच प्राण, अपान, उदान, समान, व्यान प्राण को भेदन कर गुरु की शक्ति मूलधार से प्रवाहित होकर सहस्रर तक पढ़ुनती है तो व्यक्तित्व में प्रविष्टता आने लगता है। एक-एक चक्र का भेदन एक युग परिवर्तन की क्रिया है और गुरु अवश्य अपने शक्षिपात द्वारा शिष्य पर यह महती क्रिया सम्पन्न करता है। इसे पट्टचक्र भेदन कहा गया है। वह स्पष्ट है कि इन भेदन में प्रारम्भ में पीड़ा अवश्य होती है लेकिन इस पट्टचक्र भेदन तार जब निखिल रस सहस्र नाड़ियों में प्रवाहित होने लगता है तो पूरा जीवन नर्तन ये आनन्ददुल हो जाता है, भीर यही गुरु की इच्छा रठती है कि मैं शिष्य को अपने ही समान आनन्द, नर्तन मुक्त, अपने ही निखिल रस में सरोबार कर सकूँ।

नववर्ष का उपहार

नववर्ष तो मनाते आए हैं 'हेप्पी न्यू इयर' गते आए हैं लेकिन गुरुदेव के संग गुरुदेव के आश्रम में, गुरुदेव की दिव्य भूमि में, गुरुदेव के स्पर्श युक्त इस सर्वोत्तम दीक्षा का आनन्द अनिवार्यनीय है। इस नववर्ष में गुरु के सायुज्य में अपने जीवन का इतिहास शिष्य अपने हाथ से स्वयं लिखेंग क्योंकि गुरु त्रिमूर्ती के सहस्रोंग से शिष्य की सहस्र नाड़ियों का भेदन कर नवीनिर्माण की नवीन क्रियाएं स्वयं प्रारम्भ होंगी और निखिल के शिष्य इस नवीन शताब्दी के कर्णधार होंगे।

आप सबका स्वागत है गुरु शक्ति पीठ आरोग्य धार नई विलीनी में। यदि आप शिष्य हो तो अवश्य ही आयंगे और गुरुदेव के साथ बन्दनीय माताजी के सात्रिष्य में अपने जीवन को अमृतमय बनाएंगे।

सहख नाड़ी विद्युपडन षट्क्रक्त भेदन निखिल रसेश्वर दीक्षा

पांच मिन्टों के नाम -

1. नाम
पूरा पता
2. नाम
पूरा पता
3. नाम
पूरा पता
4. नाम
पूरा पता
5. नाम
पूरा पता

उस यशस्वी साधक का नाम जिसने पांच सदस्य बन कर दीक्षा में भाग लेने की पात्रता प्राप्त की है

1. नाम
पूरा पता

विशेष: जो साधक पत्रिका के पांच नए सदस्य (जो आपके परिवार जन न हों) बनाएगा, उसे हो यह 'सहखनाड़ी विद्युपडन सहख षट्क्रक्त भेदन निखिल रसेश्वर दीक्षा' उपहार स्वरूप नि:शुल्क प्रदान की जाएगी। पांच मिन्टों के पांच प्रामाणिक पते, जिन्हें आप पत्रिका सदस्य बनाना चाहते हैं, इस प्रपत्र में लिखकर जोधपुर के पते पर भेज दें।

प्रपत्र के साथ रुपये 1125/- 195 (195 + 30) = 225×5/- का बैंक इफ्ट या भनीओडर की सीधी प्रक्रिया साथ भेज दें, जिससे कि आपका स्थान इस महत्वपूर्ण समारोह हेतु आरक्षित किया जा सके।

सम्पर्क :

मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान, डॉ. श्रीमाली मार्ग, हाईकोर्ट कॉलोनी,
जोधपुर - 342001, (राज.) फोन - 0291-432209 फैक्स : 0291-432010
शिहाश्रम, 306 काहोट एवं लोट पीतमपुरा,
नई दिल्ली - 34, फोन - 011-7182248 फैक्स : 011-7196700

‘विद्यम्ब’ 2000 मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान ‘70’

मिः

से अंग
हो जा
अपने

ही वि
आद्य
सम्मे

किसी
अपना
जो का
लरे

जीव

रमाय
प्रकाश
शीतल

शुल्क '7
पी. पी.
रमिस्ट
प्रियतम
२० पत्रि

स्व

मान

गिः शुल्क उपहार

प्रियतमा अप्सरा माला

प्रियतमा अप्सरा एक ऐसी श्रेष्ठ अप्सरा है, जो कठोर दृदय की भी लड़ाकुना औं से ओढ़-प्रोत बना देती है और वह व्यक्ति भी उस पर दौड़ा कर जीतता में आजन्दा से लदा लीर हो जाता है और फिर यह अप्सरा प्रदान करती है सुगलिथत द्रव्य, तितिश आभूषण तथा अपले साधक की समर्पणाओं का समाधान।

इस अप्सरा को आप सिद्ध कर सकते हैं और यिन्हे होने पर अप्सरा केवल आपकी ही दिखाई देगा, आपके आस-पास अब्द्य लोगों को कुछ भी अनुभव नहीं होगा। अप्सरा साधाना से सम्पूर्ण साधक के मन में एक नवीन उत्साह व्याप्त हो जाता है, उसके व्याहितच में समीकृत व्याप्त हो जाता है, जिससे लोग उससे मिलता करने का प्रयास करते लगते हैं।

विधि - इस नाला की किटी भी शुक्रतार लो रात्रि १० बजे के बाद शुद्ध जल से रक्त लटाएं तथा गोष कर निली टाँडे के चान्दे में उथापित करें। तेज पर कुम्भम, अक्षय, सुगलिथत द्रव्य एवं गुलाब के टील गुप्त छटाकर प्रियतमा अप्सरा प्राप्ति की दुर्द्दारा व्याप्त करें। साधक को याहैर कि वह शुद्ध तेज वहन लट तथा हत लगाकर इस साधाना को करे। फिर उली माला से 'ॐ श्री हों प्रियतमे प्रियकरि हुरु राधय राधय ॐ तामः' मंत्र की पांच माला सम्पूर्ण करें। हुरु विद्याल को १५ दिन तक करें, फिर नाला लो जल में तिरखिन करें।

जीवन का सर्वश्रेष्ठ दान - "ज्ञान दान"

जन दान को जीवन का सर्वश्रेष्ठ दान बताया गया है। २० पूर्व प्रकाशित पत्रिकाएं प्राप्त कर मंत्रिरूप में, सम्पत्तानों में, समारोहों में, मंगल कार्यों में, डाक्षण्यों को, निधन परिवारों को दान कर सकते हैं और इस प्रकार उनके जीवन को भी इस देह जन के प्रकाश से ज्ञानोंका कर सकते हैं, जो अभी तक इससे बचता है। इस क्रिया के माध्यम से अनेक मनुष्यों को साधनात्मक जन की शोतृलता प्राप्त होगी और उसका जीवन एक श्रेष्ठ पथ पर अग्रसर हो सकेगा।

आप क्या करें?

आप केवल एक पत्र (संलग्न पे स्टकार्ड फ्रॉम ३) भेज दें, कि 'मैं २० पूर्व प्रकाशित पत्रिकाएं मंगाना चाहता हूं। आप मि: शुल्क 'मंत्रसिद्ध प्राण प्रतिष्ठित प्रियतमा अप्सरा माला' ३६५/- (२० पूर्व प्रकाशित पत्रिका के ३००/- + डाक व्यय ६५/-) की बी, बी, पी, से भिजवा दें, बी, बी, पी, आपने पर मौं पोस्टमीन की धन शणि वेकर छुड़ा लूंगा। बी, बी, पी, छुटने के बाद मूले २० पत्रिकाएं रजिस्टर्ड डाकडारा भेज दें।' आपका पत्र आपने पर, ३००/- + डाक व्यय ६५/- = ३६५/- बी, बी, पी, से मंत्र सिद्ध प्राण प्रतिष्ठित प्रियतमा अप्सरा माला' भिजवा दें, जिससे कि आपको यह दुर्लभ उपहार सुरक्षित स्थ से प्राप्त हो सके। बी, बी, पी, छुटने पर आपको २० पत्रिकाएं भेज दी जाएंगी।

सम्पर्क अपना पत्र जोधपुर के पते पर भेजें।

मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान, डा. श्रीमली मार्ग, हाईकोट कॉलोनी, जोधपुर - ३४२००१, (राज.)

फोन - ०२९१-४३२२०९, टेली फैक्स: ०२९१-४३२०१०

Muntra-Tantra-Yantra Vigyan, Dr. Shrimuli Marg, High Court Colony, Jodhpur-342001, (Raj.), India. Phone : 0291-432209

उपनिषद तो ज्ञान आगर है

मुण्डकोपनिषद्

प्राण और और प्राणशृंखला

भूः, भुवः, स्वः, महः, जनः, तपः सत्यम्
सप्तलोक, सप्त चक्र और यज्ञादिन की सप्त
जिह्वाएं - काली, कराली, मनोजवा,
सुलोहिता, सुधूप्रवर्णा, स्फुलिंगिनी और
विश्वरुचा

अगिरा ऋषि के अनूठे शब्द आज भी
साधक हैं

दस उपनिषदों में जीवन की विभिन्न क्रियाओं आत्मा, जीवन, ब्रह्म, मृत्यु, अमृत्यु तथा गुरु शिष्य सम्बन्ध का विस्तृत विवरण है, जीवन को भली भांति समझने के लिए उपनिषद आधारभूत ग्रंथ है।

ईशा, केन, कठ, प्रश्न उपनिषद ईश्वर से विशेष रूप से सम्बन्धित है वही मुण्डकोनिषद संसार में व्यवहार में आने वाली विद्या और अन्य विद्या जिसे आध्यात्मिक ज्ञान भी कहा जा सकता है। इन दोनों प्रकार की विद्याओं के सम्बन्ध में विस्तार से विवरण है। ज्ञान का स्तर जीवन में उच्चतम स्थिति तक पहुँचाया जा सकता है। जिस ज्ञान से आधिक रूप से परब्रह्म परमेश्वर का ज्ञान होता है। उन दोनों के भेद को विस्तार से इस उपनिषद में स्पष्ट किया है।

मुण्डकोनिषद के तीन भाग हैं जिन्हें प्रथम मुण्डक, द्वितीय मुण्डक और तृतीय मुण्डक कहा गया है और प्रत्येक मुण्डक के दो दो खण्ड हैं, प्रस्तुत अंक में मुण्डकोनिषद के प्रथम मुण्डक की व्याख्या प्रस्तुत है।

प्रथम मुण्डक (प्रथम खण्ड)

अ॒ ब्रह्मा देवातां प्रथमः संब्रू॒व विश्वस्य कर्ता॑

भूवनन्ध गोपा॑।

स ब्रह्मविद्वां सर्वविद्वत्प्रतिष्ठामध्यवाच्य न्यौषुप्राप्त्य

प्रह ॥१॥

अथवीं वां प्रवदेत् —— भासद्वाजोऽक्षिरसे॑
प्रश्वराम् ॥२॥

शोऽनको हृते —— सर्वमिदं विज्ञातं
भवतीति ॥३॥

तत्पै स हृतवाच —— परा चैवायश्च च ॥४॥

तत्राप्यथ, ऋग्वेदो यजुर्वेद ——

तदक्षेत्रमधिज्ञ्यते ॥५॥

यत्तद्ब्रह्म स्वमन्द्राहामगतोत्तम —— परिप्रथमित
धीरा: ॥६॥

व्यथोर्णन्ताभिः लृपते गृहते ——

तथाक्षेत्रात्प्रभवतीह विष्वम ॥७॥

तपसा चौक्तते ब्रह्म —— कर्मचु चामुतम् ॥८॥

वः सर्वज्ञः सर्वविद्वस्य ज्ञातमत्यं तपः /
तस्मादेतत्वं ब्रह्म ज्ञाम स्वप्नश्च च प्राप्यते ॥९॥

देवताओं में ब्रह्मा जिन्हें प्रथम देव कहा जाता है दस विश्व के सामाजिक संगठन की रचना करने वाले देव हैं उनके द्वारा की गई व्यवस्था के अनुसार ही देवता इस संसार के सामाजिक संगठन की रक्षा करते हैं उन्होंने सब विद्याओं के आधार भूत विद्या ब्रह्म विद्या का उपदेश अपने ज्येष्ठ पुत्र अश्वर्ण को दिया अर्थर्वा ने यह उपदेश अंगीरा कृषि को दिया अंगिरा कृषि ने यह उपदेश भूत्यवाहा को दिया इन महान अंगीरा कृषि से शौनक नामक कृषि ने ज्ञान प्राप्ति की इच्छा से विद्या के सम्बन्ध में विस्तार से जानना चाहा और एक अत्यन्त गंभीर मूल पुळन किया —

कि किसके जानने से सबकुछ जाना जा सकता है? यह मूल प्रश्न ही अपने आप में लाखों प्रश्नों को लिए हुए है, जहाँ भी व्याकुं भूल प्रश्न को न पकड़ कर उन्न्य विषयों को पकड़ता है वह मूल बात की कभी भी नहीं समझ पाता है, तत्त्व उनेक है जेकिन उन तत्त्वों में भी उन सबका जनक परम तत्त्व क्या है यह जानना आवश्यक है, परन्तु है कि किसके जानने से सब कुछ जाना जा सकता है। संसार में एक पशु को देखकर के सारे पशुओं के सम्बन्ध में उसकी शारीरिक रचना इन्द्रियों के बारे में जान हो जाता है। इसी प्रकार सारे विषयों को एक अकेला व्यक्ति समझ नहीं पाता है एक ही क्षेत्र में आगे बढ़ना चला जाता है इसीलिए शौनक कृषि ने अत्यन्त महत्वपूर्ण प्रश्न किया है कि वह मूल तत्त्व क्या है?

अंगिरा कृषि कहते हैं कि संसार की समस्या विद्याओं को वो भागों में बांटा जा सकता है प्रथम विद्या अपराविद्या

कहलाती है। कृषि ने इस विद्या को वैज्ञानिक ज्ञान कहा है जिसको प्रस्त्रेक युक्ति को सिद्ध किया जा सकता है जो केवल धारणा पर अधारित नहीं है वह ज्ञान जिसे बास-बास परखते ही उसी समय में स्पष्ट होता है। इस अपराधिक्या ज्ञान में ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद, अथर्ववेद, शिल्पा, कल्प, व्याकरण, निष्ठवन, छन्द, ग्रीष्मिति का ज्ञान आता है। स्पष्ट है कि जो भी ज्ञान लिखित है संहिता बहुत है जिसमें गणना है, काव्य है, व्याकरण है, वह सब ज्ञान वैज्ञानिक भाषाओं पर लिहित है कोई भी विज्ञानी इन सारे ज्ञान का अध्ययन विवेचन कर सकता है, इसमें पारंगत ही सकता है।

यह ज्ञान जिसे आद्युर्वेद, भीतिकशास्त्र, रसायनशास्त्र, काव्यशास्त्रना, भी कहा जा सकता है। अपने आप में पूरी तुलि संगत विषय है और संसार इस सारे ज्ञान को ही पूरी ज्ञान मानकर चल रहा है, मनुष्य अपनी पंचेन्द्रियों से जो देखता है, प्रमझता है, विवेचन बरता है, उसे ही वह ज्ञान मानता है तथा आधुनिक भाषा में उसे ही विज्ञान मानता है, अंगिरा कृषि भी यही कहते हैं लेकिन इसके साथ ही उन्होंने यह भी कहा कि केवल अपराधिक्या का ज्ञान ही पूरी रूप से ज्ञान नहीं है इसके ज्ञान में ही सब कुछ ज्ञान जा सकता है ऐसा सम्भव नहीं है।

इस सप्तरविद्या से भी आगे एक पराविद्या है और पराविद्या को हैन्टलेक्चर्चुअल नलेन कहा जाया है। पराविद्या वह महान् विद्या है जिससे बड़ा का ज्ञान होता है और ब्रह्म जिसे देखा नहीं जा सकता जिसका कोई वंश नहीं, कोई स्वरूप नहीं, कोई वर्ण नहीं, वह नित्य है, सब जगह पहुंचा हुआ है, सब जगह होते हुए भी वह सूक्ष्म है, अच्छा है, संसार में सब स्थितियों का कारण है। विद्यान लोग इसी पराविद्या का ज्ञान प्राप्त कर पूर्ण ब्रह्म से साक्षात्कार कर लेते हैं।

एक अन्यन्त सुन्दर उदाहरण बतें हूप कृषि ने कहा है कि जिस प्रकार एक मकड़ी अपने शरीर के भीतर से जाने का सूनन करती है और स्वयं उसी ने घिमट जाती है जैसे इस पूँछी पर छजारों प्रकार के बृक्ष औषधियों उन्पन्न होती है, जिस प्रकार जीवित पूर्ण जे शरीर से रोम निकलते हैं उसी प्रकार इस बहु से प्रकारे लूपी पूरा शरीर बन जाता है।

इस अक्षर ब्रह्म से यह विश्व कैसे उन्पन्न हुआ? इस बड़ा द्वारा तप अर्थात् उण किया सम्पन्न हुई उण किया से यह विश्व विकसित होने लगा तप का तात्पर्य है उण किया, उण किया और तप से ही अन्न का विकास होता है तप एक प्रारम्भिक

क्रिया है और अब एक अनिम स्थिति।

अन्न का तात्पर्य गोहू, ज्वार, बाजरा इत्यादि से नहीं है अब ऐसी वस्तु है जिसमें प्राण मन सत्य लोक, कर्म सब को उत्पन्न करता है। जो मन में भावना उत्पन्न करे, सत्यता उत्पन्न करे, व्यक्ति को कर्म करने के लिए प्रवृत्त करे, वही अन्न है। इसी अन्न से सारा जगत चलता है। दैहिक अर्थों में अन्न शरीर की क्षुधा ज्ञान करने वाला पद्धर्थ है लेकिन वास्तविक रूप से मनुष्य छाता जो 'उण किया' की जाती है वह तप ही मनुष्य का ज्ञान है और यह ज्ञान काशी भी ज्ञान नहीं रहता। यह किया के रूप में प्रगत होता ही रहता है। ज्ञान प्राप्ति के लिए तप आवश्यक है।

केवल यज्ञ में आहुति डालने से तप सम्पन्न नहीं हो सकता तप तो उण किया का नाम है, मनुष्य अपने जीवन में किसी भी क्षेत्र में तीव्रता से उण किया करता है तो वह तप उसके ज्ञान के स्वयं में प्रगट होता है, वही ज्ञान उसे उस क्षेत्र में पूर्णता दिलाता है, जिसमें उसने उण किया सम्पन्न की है। उसी ज्ञान से उसके लिए अन्न बनता है। यह अन्न उसके वेद मन में और भी अधिक शक्ति प्रवान करता है। और इसी से इस ज्ञान का व्यवहार चलता है।

प्रथम मुण्डक (द्वितीय खण्ड)
तदेतत्सत्यं संत्वेषु कमरीणि कवयो वान्यापश्यंस्तानि
त्रेतायां बहुधा संततानि ।
तत्त्वाचरथं लिदत्त सत्यकामा एष वः पठयाः
सुकृतस्य त्वोके ॥१॥

वदा स्तेत्यवते हार्चि- ----- प्रतियादवेच्छद्वया
दुतम् ॥२॥

वस्याज्जिहोत्रमदश्मि -----
सोकान्तिनस्ति ॥३॥

कात्ती कात्तात्ती च ----- लेलायमाना इति सप्त
जिहा ॥४॥

एतेषु वस्त्वरते ----- देवानां
पतिरेकोऽधिवासः ॥५॥
एहोहीति तपाहनयः ----- पुण्यः सुकृतो
ब्रह्मलोकः ॥६॥

और ज्ञान प्रवोग में का कर्म इसके जिस विकारण से मिलता है साथान्य नहीं कह सकता यह में वे रखा है। सत्यग

पत्रवा होते अदृढ़ा ----- परामुक्तुं ते
पुनरेवापि विनिते ॥७॥

अविद्यावामन्तरे वर्तमानाः ----- अन्धेनेव
नीयमाना वर्थन्तयः ॥८॥

अविद्यावरं बहुधा -----
क्षीणस्त्रोकाश्च्यवन्ते ॥९॥

इष्टापूर्तं मन्त्यमाना ----- हीनतरं वा
विशन्ति ॥१०॥

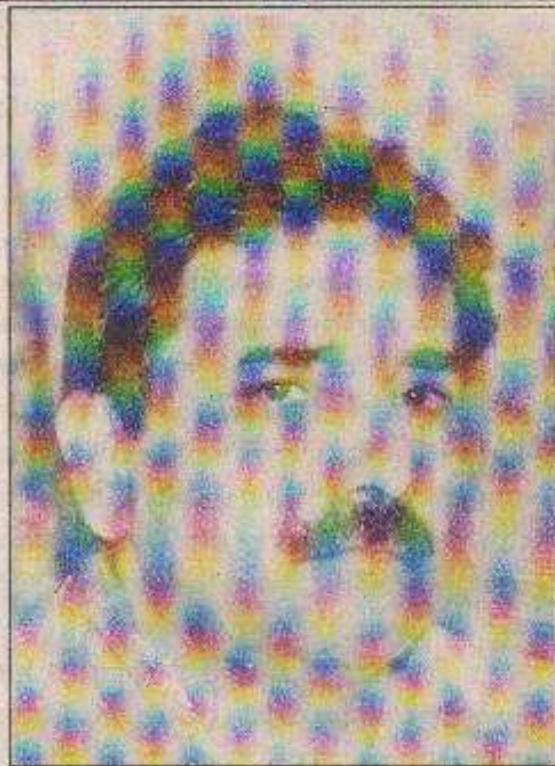
तपः श्रद्धे ये हुपवसन्त्यरण्ये ----- पुरुषो
हृव्यवात्मा ॥११॥

परोद्य स्तोकानकमचितात्माहरणो --- श्रोत्रियं
ब्रह्मनिष्ठम् ॥१२॥

तस्मै स विद्वानुपस्थाव चम्यकरणान्तचित्ताव
शमान्तिरत्य।
येनाकारं पुरुषं वेद सत्यं प्रोक्ताच तां तत्त्वारे
ब्रह्मविद्याम् ॥१३॥

जिस प्रकार अपराधिदा का तात्पर्य वैज्ञानिक विवेचन
और ज्ञान है उर्ध्वं जो बात पहले से कही गई है, जिसी गई है,
प्रयोग में लाई गई है, उसी के अनुसार कार्य करना अपने जीवन
का कर्म करना उसमें विद्ये गण खिलानों को अपनाना। ठीक
इसके विषयीन परा विद्या ज्ञानात्मक है ज्ञान कण और प्रकृतिकावद
जिस विद्या के ज्ञान से ज्ञानिक ज्ञान उत्पन्न होता है जिसके
कारण से जिन में पूर्ण शास्ति प्राप्त होती है मन और आत्मा का
मिलन होता हो वह परा विद्या है।

उसी द्विनीय खण्ड में यज्ञ भाग इत्याविद्या ब्रह्म का
साक्षात्कार करने के लिए साधन वज्ञ इत्याविद्या एक परम्परा,
स्थिति कहा है, कैरिया कृषि कहते हैं कि वेत युग और आने वाले
युग में वेद में और यज्ञ आदि द्वारा जिन कर्मों का वर्णन किया
गया है। वे ही मार्य चन्द्रेंगे उन्हों का विस्तार होगा। इसीलिए
सत्ययुग के पश्चात् यज्ञ आवि का बढ़ा महत्व कहा गया कि



सत्य संकल्प वाले व्यक्ति जो पुरुषार्थ द्वारा जिस लोक का
निर्माण करना चाहते हैं उसके लिए यही सत्य मार्ग है।

यज्ञ के सम्बन्ध में ये आनं विशेष महत्व की है जब
यज्ञ में अग्नि प्रदीप होती है ज्वलाएं, लपटें नारी हैं उस समय
यज्ञ में 'आज्य भागाहृति' नाम की दो आहुसियां पूर्ण शख्स से
डाली जाती हैं। आज्य भागाहृति का अर्थ है, धृत युक्त पवार्थ,
यह धृत मनुष्य की श्रद्धा का सम्पूर्ण रूप से प्रतीक है जब तक
धृत नहीं डाला जाता है तब तक यज्ञ में तीव्रता नहीं आ सकती
इसी प्रकार जीवन रूपी यज्ञ में जब कर्म रूपी धृत (धी) डाला
जाता है तभी जीवन न्याला तीव्र होती है और जीवन की क्रियाएं
सकल हो सकती हैं।

यदि यज्ञ ठीक प्रकार से नहीं किया जाए अग्नि उचित
रूप से प्रदीप नहीं हो, आहुतियां श्रद्धा पूर्वक नहीं हो, इस विवेचन
में सात विद्याओं का विवरण आया है, ये विद्याएं रह होने पर
यज्ञ पुण्य नहीं होता।

रथष्ट रूप से वर्णन आया है कि अगर अग्निहोत्र दर्शण
रहित हो, पौरीमासेहि रहित हो, चातुर्मासिष्टि रहित हो, नवान्तरि
रहित हो, अनिश्चित्य रहित हो, आहुति रहित हो, वेश्वरेव यज्ञ
रहित हो, अर्थात् विद्यि रहित हो, तो यज्ञ कलयुक्त न रहकर अवल

केवल ज्ञाता बनकर रह जाता है। जिससे धन की और समय की हानि ही होती है।

यज्ञ में जो लपटें उठती हैं वे यज्ञाचिन रूपी देवी की सात विकारण हैं। ये जिहाएँ हैं काली, कराली, मन के समान वेग से उठने वाली मनोजवा, रक्त वर्ण वाली सुलोहिता, धृष्टयुक्त सृधृष्टवर्णा, विंगारियों वाली स्फुलिंगिनी, भिन्न-भिन्न रूपों वाली विश्वरुचि मनुष्य के शरीर में सात चक्र हैं, इसी प्रकार इसी शरीर में सात लोक हैं, ये सात लोक हैं, भू, भव, स्व, मह, जन, तप, सत्यम्। मनुष्य प्राण मार्ग द्वारा भू लोक से प्रारम्भ होकर अंततः सत्यम लोक तक पहुंचता है। मूल रूप से यज्ञ एक लोक से दूसरे लोक तक जाने की अवस्था है। यज्ञ के द्वारा प्राण में अग्नि उत्पन्न होती है, और उस अग्नि पर यात्रा करता हुआ मनुष्य अपने भीतर के एक एक लोक को प्रदीप करता रहता है। मूलाधार चक्र भूलोक है और ब्रह्म रन्ध्र सत्य लोक है।

भू लोक में प्राण की अग्नि का नाम काली, भव लोक में अग्नि का नाम कराली, स्व लोक में अग्नि का नाम मनोजवा, मह: लोक में सुलोहिता, जन: लोक में सृधृष्टवर्णा, तप: लोक में स्फुलिंगिनी, और सत्यम लोक में अग्नि विश्वरुचि कही जाती है। भू लोक अर्थात् भौतिक लोक जो सामने विखाई पड़ता है। प्राण यज्ञ द्वारा एक एक लोक जायत होता रहता है।

जो यज्ञ करने वाला अपनी इस प्राणश्चेतना युक्त अपनी इस यज्ञ किया द्वारा आहुति देता है जीवन में बाह्य और आत्मिक दोनों रूपों में क्रियाशील होता है, तो उसी अग्नि के प्रभाव स्वरूप एक एक लोक में यात्रा करता हुआ अपने भीतर के सूर्य को उदय करता है जब भीतर का सूर्य उदय होता है तो उन रसियों से मनुष्य का जीवन तेजोमय बन जाता है।

अग्निरा कृषि कहने हैं कि केवल बाह्य यज्ञ करने वाले व्यक्ति अपने आप को धीर और पंडित मानते अवश्य हैं लेकिन वे बास्तव में मूर्ख हैं जब तक आंतरिक यज्ञ की ज्ञाता प्रदीप नहीं होती। जब तक बाह्य यज्ञ से कोई अनुभूति प्राप्त नहीं होती।

कुछ लोग यह समझते हैं कि हमने इस प्रकार यज्ञ इत्यादि सम्पन्न करके अच्छे काम कर लिये हैं, और अपने आप को बड़ा मानते हैं व्यक्ति ऐसे व्यक्ति निः काम में लगे रहते हैं उसी में अनुसन्धान हो जाते हैं, और यह नहीं जान पाते कि वे क्या कर रहे हैं।

बास्तविक यज्ञ तो सुकृत लाद है और सुकृत काव्य क्या है? सुकृत कार्य शान चिन स्थित प्रज्ञ होकर शारीरिक साधना नप और आन्तिक साधना श्रद्धा से जीवन में रहते हैं वे अपने जीवन के सब दोषों से शुद्ध हो जाते हैं, वे ही उस द्वार पर पहुंचते हैं जहाँ अमृत है, पर ब्रह्म पुरुष है। जो व्यक्ति साधना, तपस्या, श्रद्धा द्वारा शारीरिक मानसिक और आन्तिक दृष्टि से सर्वथा शुद्ध हो जाते हैं वे सूर्य रूपी विलक्षण शुद्धता के मार्ग पर चल देते हैं और इसी नाम से परमानन्दा को प्राप्त होते हैं।

ब्रह्मण के सम्बन्ध में अर्णीरा कृषि ने विशेष विवेचन किया है और इस रूपए कहा है कि यज्ञ, योग, दान, पुण्य आदि इन कर्मों से जो सकाम मावना में दुःख है अर्थात् कुछ प्राप्ति की इच्छा है और जब उसे यह सुख देववर्ष प्राप्त हो जाते हैं तो विच व्यक्ति के मन में संसारिक विप्रयों से उदासीनता आ जाती है वही ब्राह्मण है।

गुरु की महिमा के सम्बन्ध में केवल इतना ही कहना प्रधार्म है कि जब श्रुता पूर्वक कोई जिजास शान्त चित होकर इन्द्रियों का कल्याण मार्ग पर लगा कर गुरु के निकट पहुंचता है तब वह विद्वान अर्थात् गुरु ब्रह्म विद्या द्वारा अक्षर पुरुष 'ब्रह्म' का तात्त्विक जान और सत्य का उपदेश देते हैं अपने शिष्य को भू, भव, स्व, मह, जन, तप: की यात्रा सम्पन्न कराते हुए सत्यम लोक तक ले जाते हैं।

बड़वानी साधना शिविर

बड़वानी से ३० कि.मी. की दूरी पर प्रसिद्ध बाग की गुफाएँ हैं।

बड़वानी से ८ कि.मी. की दूरी पर ब्रसिद्ध जैन तीर्थ बावन मजा जी है, जो पूरे विश्व में प्रसिद्ध है।

बड़वानी से लगभग ५० कि.मी. की दूरी पर अहिल्या देवी की नगरी महेश्वर तीर्थ है, दहां का घाट प्रसिद्ध है, एवं माझन मिश्र की नगरी है। यहाँ पर माझन मिश्र का गालवार्य भगवान शंकराचार्य से हुआ था। महेश्वर से लगभग ५० कि.मी. की दूरी पर ओंकारिश्वर ज्योतिर्लन्ड है।

बड़वानी नर्मदा के तट पर स्थित एक प्राचीन नगर है। बड़वानी से १२ कि.मी. दूरी पर नर्मदा नदी के किनारे प्रसिद्ध काटेश्वर कोटि तीर्थ है। '२४-२५ गणेश साधना शिविर'

इस विष्व भूमि पर नर्मदा के तट के पास आप समस्त गुरु भाई बहिनों के प्यार भरा आमंत्रण हम तो केवल अपने हृदय के भावों द्वारा आप से निवेदन कर सकते हैं, आप भी नदगुरुदेव के आत्म अंश हैं, आप अवश्य आएंगे।

जीवन में आठ प्रकार से सहायक हैं

लिलिता-बा साधना

व्यक्ति कितनी ही साधनाएं क्यों न कर ले . . . सिद्धियाँ और सफलताएं भी प्राप्त कर ले, किन्तु जगदम्बा साधना की आवश्यकता उसे पग-पग पर फिर भी पड़ती ही है। जब तंत्र माह हो, प्रकृति के बीच कोई अलग चैतन्यता हो, मन में नया कुछ घटित करने की, उसे प्राप्त करने की इच्छा बलबली हो रही हो तो जगदम्बा के ही सर्वाधिक सशक्त स्वरूप लिलिता साधना से श्रेष्ठ कौन सी अन्य साधना हो सकती है . . .

परं व्यक्ति एक भाव के लिए अपना अहं भाव, अपना कर्ता भाव छोड़कर देख तो पाया कि यह प्रकृति स्वयं उसका प्रधान कर रही है, उसकी आवश्यकता की पूर्णि वर रही है। अच, नल, वायु, प्रकाश प्रत्येक कुछ उसी की कृपा से ही तो वितरित हो रहा है, जिना किसी भी भाव या जाग्रा के। जाग्रा तो हम द्वा बना लेते हैं, स्वयं को स्थापित करने के ब्रह्म में।

यही जगदम्बा का विराट रवरूप है, वे ही अलग अलग रूपों से अलग-अलग माध्यमों से हमारे जीवन का कल्याण करने

वाली हमें प्रतिद्वाण रंजित करने वाली व इसने भी अधिक गह बिंदे ही प्रतिकण इनारे मुख तुरख में कातर होने वाली भी है।

मां कोई भी जायंन कर रही हो, किसी भी प्रकार ले ल्यस्त कर्यों न हो उसका सम्पूर्ण ध्यान केवल अपने बच्चे में ही लगा रहता है। हाथ कार्य में व्यस्त रहते हैं और आखें उच्चक-उच्चक कर प्रतिक्षण अपने शिशु को निहारने में। बच्चे की कोई भी भाषा नहीं होती फिर भी मां उससे बात कर ही लेती है, और भाषा के मान भी तो उसे मातृ मुख ने ही होता है। इसी में मातृभाषा की सज्जा प्रचानित हुई।

जिन्हें
सधु के
पवित्र
सर्व
अनेक
कुमा
अप्रो
महोद
अनि
नारा
शिव
कार

जो का अ
केवल लौ
निकाली
सकता है
उपभो
की ललित
सकते हैं।

किया कि
शस्त्रीय
पिर सम्ब
साधक को
विजानि
उसे प्रत्येक

रत्नोल्लम्भ
मात्र, जट
बीज स्पृ
बन जाए।

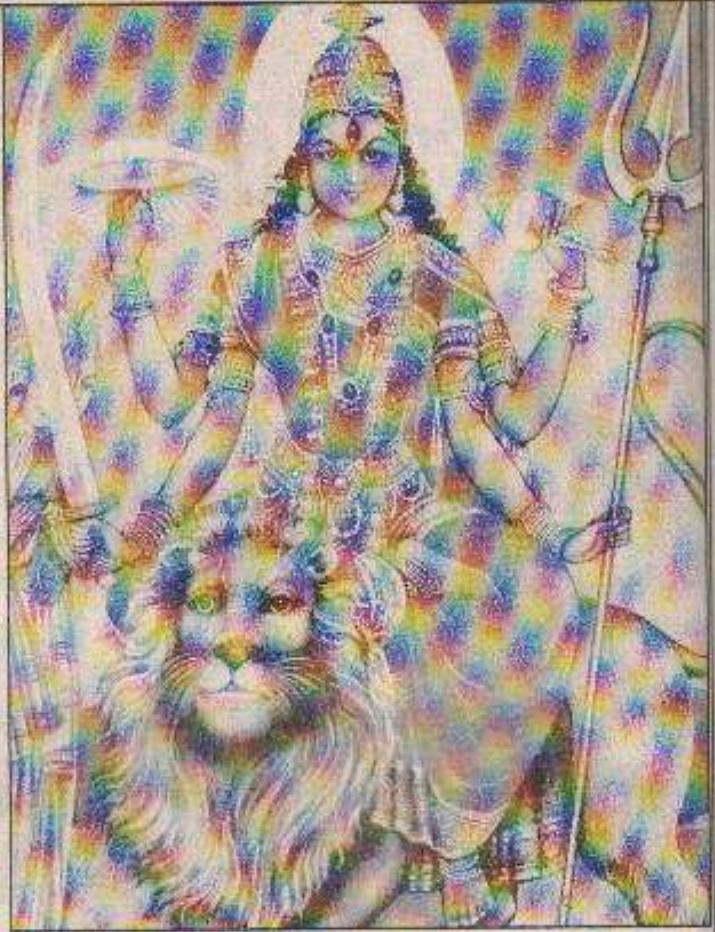
रोगनिवार
इस यंत्र के
वाली कहे
है, और न
में साधना

आपने मधुर, स्नेह सेल चुम्बनी के माध्यम से मानों
वर्षी वाक्-शक्ति, प्राण, चैतन्यता सब कुछ उपने
शिशु में प्रवाहित करती रहती है, वह केवल अपने
हृष्ट का रक्त आपना दुर्घटन कराकर ही उसका
पोषण नहीं करती, और इसी से प्रत्येक जीवन में
अपने मातृत्व के प्रति विशेष आश्रु, प्रेम, ललक
और सम्मान होता हो जाता है।

साधक सी प्रयार्थन एक शिशु ही छोटा
है। कोई इस शिशुत्व को सहन न्योकार कर लेता
है और किसी को आजे चलकर न्योकार करना
पड़ता है। जिसे हम अपनी साधना का चल कहते
हैं वह वस्तव में क्या उसी मानूखरूजा भगवती
जगद्गत्ता द्वारा वीर्ग भाषा जान के समान ही नहीं
है? समरूप जान-विजान, साधना और उप उपी
दिव्य पूज से भी निकलकर तो सूर्य के प्रकाश की
उरह प्रत्येक व्यक्ति का आरह है। जीवन की और
हर दुग की आपाधारण के मध्य यह चात हम नितनी
जन्मती स्वीकार करते, उनना ही हितकर होगा, न
केवल आध्यात्मिक रूप से वरन् भौतिक रूप से
भी।

यह युग कलियुग के अंत से जाना जाता
है, और जो प्रवृत्तियाँ, जिसी नामोलकता के बीच
जीवन निया जारहा है उससे कोई भी अपरिचित
नहीं। इम आपको कलियुग की दूषितता और
सदाचार या नैतिकता की दुश्मद देने अष्टवा नाम
जपने की शिक्षा देने की अहंमन्यता करने के इच्छुक नहीं, कर्देकि
ऐसा बढ़ने से आपकी समस्याएँ हल नहीं होने वाली। यह भवश्य ही
लकता है कुछ अणी के निए एक मोठी गुडगुड़ी भरा स्फून्निल जगत
सामने तेर जाए और किर वही नित्य की आपाधारी।

सही अर्थों में यह तंत्र का एक माह ही नहीं सम्पूर्ण रूप से
तंत्र का युग है। कलियुग पर अर्थात् 'बलि' पर नियंत्रण करने का
उद्दन्य भलि, आनधना या नियंत्र नोते की तरह दोहराय जा रहे
धार्मिक प्रवचनों में नहीं अपितु साधनाओं में। सक्षात् मां भगवती
जगद्गत्ता द्वारा उद्भूत जान का सत्यता में 'कलि' पर केवल काली
ही विनय प्राप्त करने में सक्षम है और काली का नात्पर्व ही है तांत्रोक्त
साधना। मा भगवत्ती नात्पर्व का मूल स्वरूप महाकाली की साधना
के विधान तो अथ से इति तक केवल तांत्रोक्त ही है, कोई भी साधना
जूथ उठाकर देखा जा सकता है। इन्हीं महाकाली की सब
सीमाप्रदायक साधना प्राचीनकाल से ही लक्षिताम्बा साधना के
नाम से विख्यान होती है। ललिताम्बा कोई पृथक महाकाली नहीं बास्तव



में महाकालों का ही एक विशेषण है, महाकालों के तेजस्वी व
सौन्दर्यमय स्वरूप का ही नाम ललिता है।

**लक्षित शून्यर भवजन्य उक्त वर
विशेष तदवती लक्षित**

लक्षित ही सम्पूर्ण तंत्र शास्त्र का मूल देवी एवं आराध्य
मानी गई है, और यह विद्या इन्हीं अधिक तीव्र गोपनीय और तुलनमय
मानी गई है कि इसको गुरु तक को भी बताना निषेच कर दिया
गया। इसी से यह विद्या या साधना लुप एवं अप्रवलित हो गई।
ललिता देवी के नाम से शक्तिपीठ अवश्य विद्यान के लेखिन ललिता
साधना सर्व साधारण के बीच में रहस्यमय ही बनी रही। इसका
कारण मात्र इतना ही था कि इसकी जो साधना विधि उपलब्ध थी
वह इन्हीं अधिक तीव्र थी कि लाप्पान्द साधक उसकी तजञ्चिता
सहन ही नहीं कर सकता था। प्राचीन काल में जब इष्ट, गुरु के
सामोग्य में रहते थे तब सेवा के मध्य शुल्क थीं और इकायात करते
हुए उसे इस दोज्य बना देते थे कि उह कालान्तर में ललिता के मूल
रहस्य एवं साधन को आत्मसान कर सके।

तिशुभूष्महन्दनों
 मधुकेटमहन्दी च चण्डमुण्डविजापिनी ।
 सर्वलुपविनाशा ॥ च लर्ववानयधातिनी ।
 सर्वशस्त्रमयी विद्या सर्वस्त्रविधारिणी तथा ॥
 अज्ञेकशस्त्रहस्ता च अज्ञेकशस्त्रविधारिणो ।
 कुमारी वैद्य कन्द्या च कौमारो गृवती वति ॥
 अट्टोटा चैव प्रोटा च इडुमात्रा वस्त्रवा ।
 महोदरी मुच्छके शी धोरक्षया महाबला ॥
 अरिज्जवासा रोद्गुर्सी कारसरात्रिस्त्रयस्तिवनी ।
 जारावर्णी भद्रकाली विष्णुमात्रा जलेदरी ॥
 शिवदूती करात्री च अज्ञनता परमेश्वरी ।
 कात्यायनी च सावित्री प्रत्यक्षा ब्रह्मवादिनी ॥

इस दिशा में सिद्धाश्रम स्थित योगीराज गुणातीलानन्द जी का आभार मानना चाहिए, जिन्होंने अपने सम्पूर्ण जीवन को केवल ललिता साधना में ही संलग्न कर एक ऐसी पङ्क्ति खोज निकाली जो एक गृहस्थ द्वारा भी उतनी ही सहजता से अपनाई जा सकती है जिस प्रकार से किसी सन्यासी साधक द्वारा और विनाशुभाव या दीर्घना के जीवन के सभी मनोर्धारित कार्य महाकाली की ललिता स्वरूप से समाहित तीर्थण शक्ति से सम्पन्न किए जा सकते हैं।

यामी गुणातीलानन्द जी ने उपरी साधना में यह अनुग्रह किया कि यदि एक डिशेष प्रकार का यंत्र रचित कर उसमें ललिता की शक्तियों लो विभाजित कर उनकी पृथक् पृथक् स्थापना की जाए और फिर सम्बन्धित विशेष ललिता मंत्र का नया किया जाए तो सायान्य साधक को भी कोई दृष्टप्राप्त नहीं देखना पड़ता और शक्ति इस प्रकार विभाजित होकर धीरे धीरे साधक के शरीर में समाक्षित होती हुई उसे प्रत्येक दृष्टि से परिपूर्ण कर देती है।

योगीराज गुणातीलानन्द जी ने इस विशिष्ट यंत्र की सलाह रन्नोल्लस्त महायंत्र की वी तथा ललिता की आठ पीठ शक्तियों प्रभा, माया, नया, सुधम, विशुद्धा, नदनी, सुप्रभा, एवं विजया का अंकन जीन स्वर से तांत्रोक्त पद्मनि द्वारा किया, जिससे यह यंत्र पूर्ण कलप्रद बन जाए।

इन आठ पीठ शक्तियों में रक्षात्मक, धनयादक, रोगनिवारक, शत्रुनिवारक जैसी शक्तियाँ आठ रूपों में विभाजित हैं। इस यंत्र की स्थापना मात्र ही अपने-आप में दुर्गति का विनाश करने वाली कही गई है।

इस साधना के लिए किसी भी दिवस का कोई बन्धन नहीं है, और न पैसा ही कोई दिवस नियम है जिस साधक दिन अथवा रात्रि में साधना सम्पन्न करें।

जो समस्त जगत से भी अधिक ललित हैं, मोहक और सौन्दर्यवती हैं वही तो ललिता हैं । मां भगवती जगदम्बा ऐसी ही हैं । सम्पूर्ण तंत्र शास्त्र की मूल आदाद्या देवी ललिता ही जगदम्बा साधना का रहस्य हैं . . .

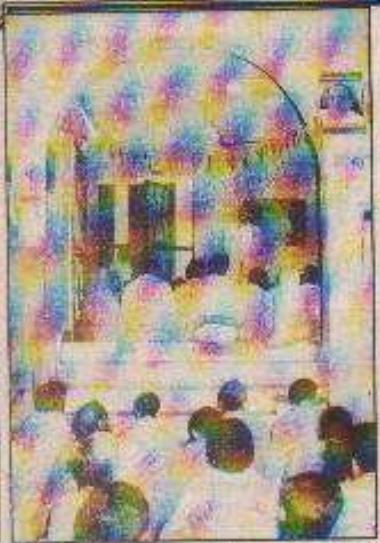
जिस प्रकार से एक बालक कष में होने पर कभी भी अपनों मां को पुकार सकता है, यह साधना भी ठीक ऐसी ही पुकार है। वस्त्र या तो पीले ही अथवा लाल। पीले वस्त्र पहिले कर साधक प्रवाणिनुज्ज्व होकर बेटे और विशेष प्रभाव के लिए लाल वस्त्र धारण कर वक्षिण दिशा की ओर मुख करके बेटे।

इस साधना में इस विशेष महायंत्र का प्रयोग देवी की प्रत्येक शक्ति का ध्यान करने हृषि और उसे करने कंदर स्माहित करने के प्रबल भावना स्वरूपे हृषि अष्टाषष्ठी की आठ विनियोगी द्वारा ही करनी है, अन्य कोई विधान आवश्यक नहीं है क्योंकि शेष यह यंत्र ही अपने आप में पूर्ण चैतन्य और फलप्रद है। साधक को चाहिए कि वह 'श्री सुंदरी माला' के द्वारा मूल नंत्र की एक माला नंत्र जप करे। वह मंत्र जो कि केवल इस विशेष महायंत्र से ही साप्तनिधि है वह प्रकार है—

// उ॒३४ श्री तत्त्वित्यादै ही फट ॥

यहांपि मूल प्रयोग तो एक दिन का ही है फिर भी साधक की चाहिए अगोरी नित्य काम से कम पांच द्वारा मेत्र जप उच्चारण करना रहे, जिनसे ललिताम्बा देवी की समरन शक्तियों उसे निरंतर प्राप्त होती रहे। अन्यथा प्रतिदिन इस यंत्र का द्वारा एवं सम्बन्धित पूजन तो करें है। किसी डिशेष कार्य पर जाते समय इस यंत्र को पाने कपड़े में लपेट कर अपने साथ रखा जा सकता है, इससे आकर्षण विप्रतियों अदि से साधक भय रहित हो सकता है।

आप अपने वो मित्रों को पवित्रा सरस्य बनाए तथा कार्ड के ६ पर अपने दोनों पित्र का पता लिखकर भेजें कार्ड मिलने पर रु. ४३८/- की वी. पी. द्वारा आपको मंत्र सिद्ध प्राप्त प्रतिष्ठा युक्त रन्नोल्लस्त महायंत्र, सुंदरी माला भेज देंगे तथा वोनों मित्रों को एक वर्ष तक नियमित रूप से पत्रिका भेजी जाएगी।



हुरुद्धान दिव्यांशी

जिस अंगूष्ठी पर रैमड़ो प्रयोग और असंख्य दीक्षाएं
सम्पादित होती हैं, उस सिद्ध वैतन्त्र दिव्य शूलि—

पर ये दिव्य साधनात्मक प्रयोग

सामर्थ साधनों एवं शिष्यों के लिए यह योजना प्रारम्भ हुई है। इसके अन्तर्गत विशेष दिवकरों पर पिल्ली शिद्धांश में पूज्य गुरुदेव के निर्देशन में वे साधनए पूर्ण दिव्य दिवान के साथ संबन्ध कराई जाती हैं, जो कि उस दिन शम 7 बजे 9 बजे के बीच सम्पन्न होती है और यदि अहो व विश्वास हो, तो उसी दिन से लाभना दिव्य का अनुभव भी होने लगता है।

भावना में मान लेने वाले साधक को बैत्री पूजन सामग्री आदि संस्करण द्वारा निःशुल्क उपलब्ध होगी (प्रोती, दुष्प्राण और व्यापत अपने साथ में लाभ न होने वाले देशी प्राप्ति कर लें)।

उन तीनों दिवकों पर आधान में भाग लेने वाले साधकों के लिए दिव्य नियम मान लेंगे

1. अप अपने छिन्हों वा गिरों अधिक स्वजनों को (जो गत्रिका के सदस्य नहीं हैं) मन्त्र-तंत्र-यत्र दिवान पत्रिका का वार्षिक सदस्य इनाकर विल्ली गुरुद्धान में सम्पादित होने वाले लिसों एक प्रयोग में भाग ले सकते हैं। गत्रिका को सदस्यता वा एक वार्षिक शूलक रु. 225/- है, परन्तु आपको मात्र रु. 438/- ही जमा करना है। प्रयोग से सम्बद्धित विशेष निःशुल्क द्वाग-प्रतिज्ञित सानर्थ (श्री गुटिका भाष्टे) आपको निःशुल्क प्रदान की जाएगी।
2. यदि अप पत्रिका गद्दर्य नहीं है, तो अप स्वयं तथा अपने किसी एक निवार के लिए पत्रिका गद्दर्य कर उपरोक्त लिसी साधन में भाग ले सकते हैं।
3. पत्रिका सदस्य इनाकर अप फिरी एक परिदार को जूहि प्रभ्यसा की इस गद्दन साधनात्मक ज्ञान धारा में जोड़कर एक पुनीत एवं पुण्यदायी कार्य करते हैं। यदि आपके प्रवास से एक परिवार में अधृता कुछ शाशियाँ में इश्वरों दिनान, जाधन त्वक दिनान आ पता हैं, तो यह आपके जीवन की सफलता को ही प्रतीक है। उपरोक्त प्रयोग तो सर्वथा निःशुल्क है और एक फ्री डारा ही नवदान स्वरूप साधक को प्राप्त होते हैं। प्रयोगों की भौतिकावर गणि को अर्थ व तराजू में नहीं तौल सकते।

12.12.2000 मंगलवार

तिलोत्तमा आप्सरा साधना

गुरुद्धान के एक रिवाने पुष्प को देखकर हृष्ण का पुष्प अपने आप ही चिकित्सित हो जाता है। और ऐसा ही सम्बन्धन हृष्ण में होने लगता है, जब चीनीदर्य की साकार प्रतिमा अपने पूर्ण दीवान और स्वयं के साथ साधक के सम्बन्ध आ खड़ी होती है, ठीक एक गुरुद्धान के अधिक्षिले पुष्प की भाँति। उसके रूप में सम्भोग ही कुछ ऐसा होता है, कि साधक अपने सभी नमान, कलेश और परिशानियों को भुला बैठता है और एक नवीन उमर, जोश के आलावा ही जाता है। निर प्रकार एक कंकड़ी की झील के सके हुए जल में फैकने से एक हिन्दूर अतीत है, उसी प्रकार तिलोत्तमा के मोहक अंदाज से साधक के जीवन में एक हिन्दूर सी ही तो आ जाती है।

पर तिलोत्तमा को यदि वश में किया जा सकता है, तो मात्र मर्दों द्वारा साधना बत्त से। इस साधना से नहां साधक को जीवन में तिलोत्तमा वा साहचर्य प्राप्त होता है, वही उसके जीवन में हास्य, विनोद की भी प्राप्ति होती है। तिलोत्तमा अपने साधक को हर प्रकार का सुख प्रदान करती है, अधिक अमाव भी समाप्त हो जाता है।

फोटो द्वारा 'दीप्ति कार्य सिद्धि दोक्षा' केवल १२ से १४ दिसम्बर को ही
आप जाहे तो निष्पत्ति विवरों से पूर्व ही अपना फोटो एवं नीचाकर राशि का बैंक डाफट ('मन्त्र-तंत्र-यत्र विश्वान' के नाम से) भेजकर भी इन विवरों पर होने वाली दोक्षा को प्राप्त कर सकते हैं। आपका फोटो एवं पांच सवालों के पते विल्ली व्यायालेव को समय पर प्राप्त हो सके, इस हेतु आप अपना वन स्पीड-पोस्ट द्वारा ही भेजें। एवं विनम्र से विनम्र पर दीप्ति सम्पर्क न हो सकती।

कछ भी न
तो वह आ
है कि हर
है, विरह
करती है,
यह नहीं त
हो जाते है
शिष्य जी
मुक्तव से
साक्षात् न
प्रति श्रद्ध

वरम स्व
प्रसा ही प
पथ पर ग

♦ दीप्ता उ
उगाय है जा
कर जो भी
प्रश्नोत्तर व
अतुलतीय
प्राप्त कर
प्राप्त कर
♦ गुरु प्र
कार हेतु ज
विनुपान प्र
सकलाता त
एक लघु ता
♦ दीप्ता भै
का जल ए
उपराज वि
जायुआ। य
रात्रि ७ बा
ले उपराज
किया जाए
सम्पर्क

13.12.2000 शुद्धवार गुरु हृदय धारण साधना

जब शिष्य को वह बोध हो जाता है, जिससे गुरुगुरु के बिना जीवन में अन्य कुछ भी नहीं है, समस्त साधनाओं और चिदियों के आधार मात्र सचगुरुवेद ही है, तो वह अपने हृदय की एक-एक रग में जी उठते उतार लगा जाहता है। उसके मात्र होते हैं, कि हर हल में वह गुरुदेव में निमित्त हो जाए। यह एक प्रकार की छटपटाहट होती है, जिसकी भाव भूमिया होती है, और ऐसे में गुरु हृदयस्थ धारण साधना वही काय करती है, जैसे प्याजे की पानी, अथे को दो नीन। इस साधना के उपरान्त शिष्य को यह नहीं लगता कि गुरुदेव मुख्यमें दूर है। इस वैक्षण्य ने जब गुरुदेव हृदय में ही स्थापित हो जाते हैं, तो यिस हृदय में डेट-बेटे हो शिष्य का कल्पना करने रहते हैं। बरन्तु, शिष्य जीवन का प्रारंभ तो गुरु साधना से होता है, परन्तु इस साधना के लिए बिना गुरुदेव से पूर्ण रूप से जुड़ने की क्रिया नम्भव हो नहीं पाती। एक तरह से यह साधना साक्षात् गुरु कृपा हो जाती है, जो तभी प्राप्त हो पाती है, जब साधक के अन्वर गुरु क्रिया और कृपा सूर्य से प्रकल्पित हो चुकी होती है।

14.12.2000 शुद्धवार आत्म सम्मोहन प्रयोग

सम्मोहन एक पेसा विज्ञान है, जिसके द्वारा किसी अन्य व्यक्ति को नहीं बरन स्वयं को भी सम्मोहित किया जा सकता है। आत्म सम्मोहन साधना का एक ऐसा ही पक्ष है, जिसके द्वारा अपने मन की वश में करके, सम्मोहित कर साधक सही पथ पर निश्चील कर सकता है।

१. यदि साधना में आपका मन एकाग्र नहीं हो पाता,
२. यदि आपका किसी का मन में मन नहीं लगता,
३. यदि आपका मन पढ़ाई में नहीं लगता हो,
४. यदि आप में आत्म विश्वास की कमी है,
५. यदि आपको क्रोध बहुन अधिक आता है,
६. यदि आप में किसी प्रकार की कोई हीन भावना हो या
७. किसी अन्य प्रकार का मनो रोग है, तो इन सभी का उपाय है सम्मोहन

- दीक्षा आज के तुल में पुरुष प्रामाणिक उत्ताप है साधना की ठाराइयों को प्राप्त कर लेने का, जीवन के अभियोगी, अशूरेपन को घुर कर केने का, जीवन में अतुलनीय बहा, साहस, दीर्घ एवं शीर्ष प्राप्त लड़ लेने का, साधना में शिदि प्राप्त कर लेने का।

- गुरु-द्वारा शिष्यितान कारण शिष्य जिस लक्ष्य लेते हुए दीक्षा प्राप्त करता है, उसमें शिष्युपाल प्राप्त कर लेता है, जीवोंके तह साफलता और बेकला प्राप्त करता है एक लापूर्णता है।
- दीक्षा में आज लेने जाने सभी साधकों का जल से अग्रा अविषेक करके के उपरान्त विशेष शिष्यितान प्रदान किया जाएगा। यह दीक्षा इन तीनों विवरों की साथे एवं वस्ते प्रदान की जाएगी। दीक्षा में उपरान्त एक डालोंकी में ग्रंथि

ये जगत के बल इन ३ दिनों के लिये
किल्की पांच व्यक्तियों
को वार्षिक लघुलव बनाकर
उनके बाक यते लिखता कर
व्यक्ति लघुलव के दीक्षा आप
कि गुरुक ग्राप्त कर लेते हैं।

शक्तिपात्र यक्त दीक्षाएं

श्रीग्री कार्य सिद्धि दीक्षा

2255
=Rs. 1125/-

ठोटे सोटे कार्यों के लिए दीक्षा यक्त दीक्षा साधना की अभ्यास लक्ष्य को अपेक्षा साधक को अपने गुरुपर्याय में विश्वास रखना चाहिए। साव भाग्य के प्राप्ति वेदने वाले की देवता भी सहयोग करता परन्तु नहीं करते हैं। परन्तु जहाँ बार ऐसा भी होता है, कि साधक बेहव प्रवास करने के बाव भी लक्ष्य को प्राप्त कर नहीं पाता, तब वह क्या करें ?

यदि आप अपने मानस में किसी लक्ष्य को लेकर चल रहे हैं, और अभी तक उसे ग्राकाल रूप नहीं दे सके हैं, कारण कोई भी ही सकता है— साधनों का अभाव, वार्षिक वर्ष, अत्यन्त विश्वास का कमी, प्रतिद्रव्यान्ति, या व्यय के ली पूर्व व इन जन्माकृत दोष, कार्य में ऐकड़ी, प्रकार की वापार उपस्थित होनी स्वामाविक हैं। . . . परन्तु ये नभी अवश्य गुरु प्रदान दीक्षा काये शिदि दीक्षा द्वारा भन्नोभूत हो जाते हैं, और साधक का दोनों दुआ कार्य पूरा होता है, यदि साधक पूर्ण विश्वास के नाथ यह दीक्षा प्राप्त करे।

सम्पर्क : सिद्धान्तम् 306, कोहाट एक्सेव, गोलमपुरा, नई दिल्ली - 34, फोन : 011-7182248, टेली फैक्स : 011-7196700

भूतं भव्यं च यद् जाने अनेन प्रतिधीयताम्



परमावृत्तीसाधना।

जिसे सिद्ध करने पर किसी को देखते ही उसका
पूरा भविष्य आंखों के सामने साकार हो ऊँटता है।

ल 'दिव्यमर्व' 2000 मंत्र-तत्र-यंत्र विजान '82' ८

उसमें आ
बात कहने
आत्मविश
साधना उ
वास्तविक
जन्मकुण्डल

इस विशेष
जीवन में
सम्बन्ध में
हो जाय तो
हे तो इस
को कम क
कि जो दु
कम से क
आर्थिक ल
आदमी ब्र
ओर हजार

कि वह आ
उसके मान
में हैं, जिस
युक्ति है, १

पाश्चात्य विद्वान् कीरो ने भी पंचांगुली साधना की थी, जिससे उसे फलकथन में अपूर्व सिद्धि प्राप्त हुई . . . उसने भारत में आकर इस ज्ञान को प्राप्त किया और पंचांगुली साधना के कारण ही उसकी पुस्तक पूर्ण प्रामाणिक जानी जाती है।

व्यक्ति किसी दूसरे का भविष्य कथन करता है, तो उसमें आन्तरिक्षास अवश्य होना चाहिए, केवल गोल माल बात कहने से भविष्य कथन की सार्थकता नहीं है और यह आन्तरिक्षास तभी उत्पन्न हो सकता है जब उसने स्वयं कोई साधन उद्घाटन की हो। साधन का बल ही उसका वास्तविक बल होता है जो उसे हाथ की रेखाओं अथवा जन्मकुण्डलों का ज्ञान करता है।

अब प्रश्न यह उठता है कि सामान्य व्यक्ति के लिए इस विशेष साधना की क्या उपयोगिता है, हर व्यक्ति अपने जीवन में आगे घटना होने वाली प्रट्टनाओं की जानकारी के सम्बन्ध में उत्सुक रहता है, यदि आज आपको यह जानकारी हो जाय कि आगे बाले समय में मेरे धर में श्रीमारी आगे वाली है तो इस सम्बन्ध में आप उचित उपाय कर प्रट्टना की नीतिना को कम कर सकते हैं, समय रहते ऐसा उपचार कर सकते हैं, कि जो दुष्प्रभाव आपको आकस्मिक रूप से मिलता है वह कम से कम बन पड़े। यदि व्यापार ने आगे अच्छे योग और आर्थिक लाभ की जानकारी पूर्ण रूप से मिल जाय तो व्यापारी आदमी बड़ी रिस्क ले सकता है बड़ा पूर्णानिवेश कर सकता है और हजारों के लाभ के लाखों के लाभ में बदल सकता है।

मनुष्य स्वमं बलः इसी बात के लिए उत्सुक रहता है, कि वह अपने भविष्य को जान सके। अनेकों रहस्यमय प्रश्न उसके मानस में उठते रहते हैं — क्या ऐसी कोई शक्ति ब्रह्माण्ड में है, जिसके सम्बन्ध इससे स्पष्टित हो? व्या ऐसी कोई युक्ति है, जिसके माध्यम से हम उपना भूत, भविष्य और

वर्तमान स्थान रूप से देख सकें? ऐसे अनेकों प्रश्न उसके मानस पठल पर उंकुरित होते रहते हैं।

आज ऐसी कई पद्धतियां बन चुकी हैं, जिनके द्वारा अपने अंतीत और भविष्य का आकलन किया जा सकता है — हस्त रेखा विज्ञान, नेगेलियन थोरै, फलित ज्योतिष, ताश के पत्तों के माध्यम से आदि-आदि।

इनमें से मध्यसे ज्यादा प्रचलित विधि है — हस्त रेखा विज्ञान, जिसके माध्यम से हाथ की लकड़ीं का, जो डेखने में तो कुछ लाइन ही दिखाई देती है, किन्तु सैकड़ों सूक्ष्म तन्तुओं को अपने अन्दर समेटे रहती है, जिनका सूक्ष्मातिसूक्ष्म अध्ययन एक अच्छा हस्त विशेषज्ञ ही कर सकता है।

संसार में जिनने भी पुस्तक द्वारा स्वियां हैं, उनके छापों की लकड़ियां कभी एक जैसी नहीं होती और उन लकड़ीं में दी उनका भूत, भविष्य और वर्तमान छिपा होता है, आवश्यकता होती है उस शक्ति के माध्यम से, उन सूक्ष्म रेखाओं को पढ़कर ब्रह्माण्ड से सम्पर्क स्थापित करने की, क्योंकि जब तक ब्रह्माण्ड में व्याप आगुओं से झारी आत्म शक्ति का सम्बन्ध नहीं होगा, तब तक इस कालज्ञान प्राप्त नहीं कर सकते . . . तभी हमें पहले की, अब की और आगे बाले समय की घटनाओं का पूर्णतः ज्ञान प्राप्त हो सकता है।

संत और यंत्र की ऐसी ही क्षमता निश्चियां हैं, जिनके माध्यम से अपने जीवन में परिवर्तन जाया जा सकता है और सुखी, सफल एवं सम्पन्नता युक्त जीवनव्यापन किया जा सकता है।

ही प्राप्त है। यह सिद्धि की जागता-माध्यम की उच्च पंचांगुली साध्य

चित्र त्रयोग

पंचमी

करना

में ही,

की सा

पाले व

स्थापि

गुरु पृ

विधिव

ध्यान

एवं

आ

मंत्र

म

आज साधना और सिद्धि, कालज्ञान आवि विधायं
केवल साधु सन्तों तक ही भीषण कर नहीं रह गई है। कोई भी
इन्हें सम्पन्न कर सफलता तक पहुँच सकता है।

सभी की उन्मुक्तता का केन्द्र भविष्य का ज्ञान अर्जित
करने के लिए पंचांगुली साधना सर्वश्रेष्ठ मानी गई है, जिसके
माध्यम से अपने या किसी भी व्यक्ति के भूत,
भविष्य और वर्तमान को आसानी
से जाना जा सकता है।

पंचांगुली देवी
कालज्ञान की देवी है,
जिनकी साधना
कर साधक को
होने वाली
घटनाओं व
दुर्घटनाओं का
पूर्वानुमान
हो जाता है
तथा इसी
साधना के
द्वारा हस्त
विज्ञान में
पारंगत
हुआ जा
सकता है और
भविष्यवक्ता बना
जा सकता है।

प्राचीन काल के
योगी, साधु, बन्ध्यार्थी इस
साधना को सिद्ध कर लोगों को
भविष्य के बारे ने बताया करने थे और यह,
कीर्ति, वैभव सच कुछ प्राप्त कर लेते थे, और और कुछ लोगों की
चालाकी और कठयना की बजह से, जो ये समझते थे कि यदि
किसी के साधना की पूर्ण जनकारी हो गई, तो हमें कौन पूछेगा?
इसालिए यह ज्ञान एक छोटे ने दायरे में ही स्थित कर रह गया,
समय ने पलटा छुया और बहुत बड़ा गन्न समुदाय इस ज्ञान को
प्राप्त करने के लिए प्रयत्नसरत हो गया, जिसके कारण इस साधना
का प्रचार-प्रसार होने लगा, जो उन दोगों साधु-सन्तों पर एक
तीव्र प्रहार ही था, क्योंकि वे इस विद्या का लाभ उठाकर, दूसरों

को आसानी से नूस्खे बनाकर उन्हें अपने अधीन कर लेते थे।

इस साधना को सम्पन्न कर ऐसे दोगियों पाखण्डियों
का पर्दफाश कर, स्वयं के साथ-साथ समाज का भी कल्याण
किया जा सकता है।

पंचांगुली साधन के माध्यम से सामने वाले को देखकर

उसका भविष्य पूर्ण रूप से जात हो जाता है, वह

स्वयं भी अपने उपात्कालीन संकटों का

पूर्वानुमान कर अपने जीवन की रक्षा

आप कर सकता है, किसी भी

व्यक्ति के भविष्य के

प्रत्येक क्षण को अक्षरशः

जान सकता है, और

षटित होने वाली

दुर्घटनाओं की पूर्व

जानकारी ढेर

उन्हें सावधान

कर सकता है।

इस

साधना को सिद्ध

करना जीवन की

श्रेष्ठता है तथा

किसी भी साधना

को करने से पूर्व इन

साधना को अवश्य

ही कर लेना चाहिए,

जिससे कि साधना के

अनार्पित रह गई दृष्टियों और

आने वाली अट्टवनों को सुगमता से

दूर किया जा सके।

महाभारत युद्ध में धूरताट नेत्रहीन होने का
बनह से उस युद्ध को नहीं देख सकते थे, किन्तु संस्त्रय की दिव्य
दृष्टि से उन्हें कौराणी और पांडवों के दीन हुए दूर्ज का अक्षरशः
विवरण कड़ सुनाया, लोग उसे दिव्य दृष्टि का ज्ञान कहते थे,
किन्तु वास्तव में कुछ भी देख लेने की शक्ति उस दृष्टि के माध्यम
से नहीं, अपितु उस शक्ति के माध्यम से प्राप्त हुई थी, जिसे
उन्होंने साधना के बल पर प्राप्त किया था, ज्योति मात्र वृष्टि के
माध्यम से भूत, भविष्य एवं वर्तमान का ठीक-ठीक ज्ञान प्राप्त
होना उठिन सी प्रक्रिया है, ज्ञान तो चैतन्य शक्ति के माध्यम से

ही प्राप्त होता है, जिसे उपने अन्वर से प्रस्तुति करना पड़ता है। यदि पंचांगुली मंत्र के साथ-साथ काल ज्ञान मंत्र को भी सिद्ध कर लिया जाय, तो संजय के समान ही दिव्य वृष्टि प्राप्त की जा सकती है, किरण यह जरूरी नहीं, कि निस व्यक्ति का भूत-भविष्य जानना हो, वह साधने ही हो। पंचांगुली साधना का उच्चतम स्थिति दिव्य वृष्टि सम्पन्न होना है। यहाँ प्रस्तुत पंचांगुली साधना की उसी भवभूति को उपने से समेटे हुए है।

साधना विधि

१. इस साधना को करने के लिए पंचांगुली यंत्र व चित्र तथा सिद्धि माला जो प्राण-प्रतिष्ठा युक्त एवं मंत्र सिद्ध हो, प्रयोग करना आवश्यक होता है।

२. यह साधना शुक्ल पक्ष की किसी भी द्वितीया, पञ्चमी, सप्तमी या पूर्वमासी को की जा सकती है।

३. यह साधना प्रातः कालीन है, इस ब्रह्म मधुते में ही करना चाहिए।

४. इस साधना को किसी एकात्म स्वलय या पूजा कक्ष में ही, जहाँ शोर न हो, सम्पन्न करना चाहिए। यह सात दिन की साधना है।

५. पौले आसन पर पूर्व दिशा की ओर मुख करके, पौले वरच धारण कर तथा गुरु धावर ओढ़ कर बैठ जायें।

६. फिर बाजोट पर पंचांगुली देवी का चित्र व यंत्र स्थापित कर दें। यंत्र की किसी ताम प्लेट में रखें।

७. यंत्र पर कुकुन से स्वर्णिक का चिन्ह बनायें।

८. सबसे यहले गणपति का ध्यान करें, फिर संक्षिप्त गुरु पूजन करें।

९. पूजन के पश्चात घोट्झोपचार विधि से यंत्र का विधिवत पूजन करें—

ध्यान

पंचांगुली सहारेवी श्री लीमारुद्धर शास्त्रे।
अधिष्ठात्री करस्थात्री शक्ति: श्री त्रिदर्शेश्वितुः॥

मंत्र

ॐ जमों पंचांगुलीं पंचांगुलीं पश्चरसी माता
मव्यंगल वशीकरणी लोहमध्ये दंडमणिनी चौस्त
काम विहंडनी रणमध्ये राजसमध्ये शत्रुमध्ये
दीयालमध्ये भूतमध्ये प्रेतमध्ये पिशाचमध्ये
झोंठिपमध्ये डाकिनीमध्ये शरिखनीमध्ये
वाक्षिणीमध्ये दोषणीमध्ये शाकनीमध्ये गुणीमध्ये

जास्तीमध्ये विलारीमध्ये दोषामध्ये वोषशरणमध्ये
दुष्टमध्ये घोर कष्ट मुझ ऊपर तुशो जो कोई करे
करावे जड़े जड़ावे चिन्तावे तस्स मादे श्री
मरता श्री पंचांगुली देवी तरणो वज्र जिधरि पड़े उठे उ
ठं ठं सद्यहा॥

१०. हाथ में जल लेकर मंत्र जप करने का संतालप करें।

११. निम्नलिखित पंचांगुली मंत्र का भिन्न माला से ७ दिन तक एक-एक माला मंत्र जप करें।

१२. मंत्र जप करने का व्यमय निर्भरित होना चाहिए।

१३. साधना अमासि के पश्चात समलूप सानख्यों को किसी नहीं या कुप में विसर्जित कर दें।

१४. जप बाल में ध्यान रखने योग्य बातें—

* ऋष्यर्चय ब्रह्म का प्राप्तन करें।

* नित्य साधना से पूर्व स्नान करें।

* भूमि शायन करें।

* गुद्रता एवं पवित्रता का ध्यान रखें।

* अधिक से अधिक मीन रहने का प्रयत्न करें।

* मास मंदिरा का त्याग करें।

* सातिवें भोजन ही श्रृणुप करें।

* मंत्र जप पूरी निष्ठा के साथ करें। मंत्र जप के समय ज्यादा हिले हुले नहीं और न ही जप के बीच में उठे।

* शीर्षक का साधन काल में जलते रहना अनिवार्य है।

इस प्रकार पूर्ण विश्वास के साथ की गई साधना में मंत्र की सिद्धि होती ही है तथा उस साधना को भूत, भविष्य एवं वरांमान की सिद्धि ही जाती है।

आप अपने दो मित्रों को पत्रिका सदस्य बनाएं तथा काढ़ के दू पर अपने दोनों मित्र का पता लिखकर भेजे काढ़ मिलने पर रु. ४३८/- की बी. पी. डारा आपको मंत्र सिद्ध प्राण प्रतिष्ठा युक्त पंचांगुली यंत्र, सिद्धि माला भेजे देंगे तथा दोनों मित्रों को एक वर्ष तक नियमित रूप से पत्रिका भेजी जाएगी।

शिष्यों को आवाहन है, कि वे अपने आश्यात्म विषयक मीलिक लेख, विचार, प्रेरणापूर्व घटना, साधनात्मक तथ्य, या ऐतिहासिक प्रेरक प्रसंग, आश्वयेदिक नुस्खे आदि सामग्री को पत्रिका में प्रकाशनार्थ इस पते पर भेजें।
मंत्र तंत्र यंत्र विज्ञान, हाईकोर्ट कालोनी जीधपुर - ३४२६०३ राज, उचित लम्ब पर आवश्यकतानुसार आपके लेखों को पत्रिका में लघून दिया जा सकता है।

पुक्त दृष्टि में:

साधारा शिविर पुवं दीक्षा यमाशोह

16-17 दिसम्बर 2000 मुम्बई

आठ महासिद्धि साधना शिविर एवं यज्ञ समारोह
स्थान: कल्पनी पार्क सिल्हाचाल जैन सुपर मार्केट के पास मलाड
लिंक रोड, मलाड पश्चिम मुम्बई - 400064
सम्पर्क: - * सतीश मिश्रा 8050323 * नरेश भिंद 4313992 * बन्दुटवरमलान 4929090 * वैरेक्कल नंद 8856080 * अरोक पांडे 4963617 * भरतकर्ण नंद 911-604702 * कौर्ता भाई 412166 * एडगोकट गय 8886094 * कृष्ण गोडा 8412860

24-25 दिसम्बर 2000 बड़वानी (म. प्र.)

गणेश लक्ष्मी साधना शिविर

स्थान: डॉ. पटेल मांगलिक भवन नवा बस स्टेप्पड के पास
बड़वानी (म. प्र.) 'बन्दीर' बस स्टेप्पड से बड़वानी जावें।
सम्पर्क: - * उमर भिंद काटना बड़वानी * रेतान चौडान छातुआ। * पौंछा चैचे बड़वानी 07290-23310 * विजय गुप्ता बंदीर 412400 * अजि चैहान बन्दीर 573606 * मनोहर सिंह ठाकुर 22150 * एल. डी. बिल्से 07290-24028 * राजेन्द्रभिंद चैहान 077290-24343 * ओमप्रकाश शर्मा * नरेन्द्र कुमार गुना बड़वानी 22290 * जिनप्रकाश सोना कुम्ह 07290-34634 * लंजय ठक्कर कुक्को, * सरबार सिंह ठाकुर * निमानी भाई पाटीदार, भगवान पाटीदार * शोभाराम पाटीदार * चूरुर देवर, * डॉ. डॉ. एम. पवार, * रामेश्वरन पाटीदार, * नरेन्द्र भिंद सोलंकी, * नुधान वाणिना

1 जनवरी 2001 दिल्ली

**सहस्र नाडी विश्वरूपन घटचक्र भेदन
निखिल रसेश्वर दीक्षा**

स्थान: आरोग्यधाम, गुजरात अपार्टमेंट के पीछे जोन ४/५
पीतमधुरा, नई दिल्ली - ३४ फोन: 7182248, 7029044
परम पूज्य सवगुरुरेव डॉ. नारायण दत्त श्रीमाली जी की
कृपा तले एवं यन्दनीय माता भगवती के चरणारविन्दों
तले दिल्ली की विव्यतम गुरु भूमि में आप समस्त गुरु
भाई अहिनों को प्यार भरा आमंत्रण हम तो केवल अपने
इवय के भावों द्वारा आप से निवेदन कर सकते हैं, आप
सवगुरुरेव के आन्म अंश हैं, आप अवश्य आएंगे।

17-18 जनवरी 2001 मुलताई बेतुल (म. प्र.)

सूर्य नारायण महालक्ष्मी साधना शिविर
स्थान: शासकीय बालक उच्चतर माध्यमिक विद्यालय शाला
मैदान मुलताई (म. प्र.)

सम्पर्क: - * प. के. श्रीवास्तव मुलताई 07147-24686 * निवास भिंद 24966 * डॉ. के. डागडे 25021 * मनोज उच्चाल 07141-38692 * प्रह्लाद उच्चाल 07146-48541 * डॉ. वी. डाकरे 07160-64024 * लिंकी अंडा 07161-20733 * एम. एल. धूर्वे, ननकलाल मवसे, मैदान मालवीय, दिनोप साह, श्रीमती शकुन धाटे

22-23 जनवरी 2001 इलाहाबाद

मोनी अमावस्या महाकुम्भ महोत्सव इलाहाबाद
स्थान: काली सड़क उत्तरी पटरी संगम तट इलाहाबाद
सम्पर्क: - * एस. के. मिश्रा इलाहाबाद 0532-501551 * डॉ. प्रमोद यादव 636029 * हेम सिंह 632160 * ए. के. शर्मा 440792 * अंगमाला 407092 * मवनाय यादव गोरखपुर 0551-51010 * ए. स. सो. भिंद रायबरेली 0535-205985 * जगदम्बा सिंह 205330 * जा. उम. भिंद 202327

28-29 जनवरी 2001 चांपा (जांजर्जार) छत्तीसगढ़ शिव शक्ति साधना शिविर

टेलियम सरन्दवती शिशु बंधिर के पास चांपा (छावड़ा विजासपुर में
लाइन पर छत्तीसगढ़)
* आर. सी. भिंद 07818-33343 * नोकेश राठेझ 07752-40289 * के. गा. पटेल 40280 * संतेष चौहानी, चांपा 07817-45845 * राधेश्वाम साह 45845 * क. क. तिवारी 0771-242680 * अखिलवेश्वर 07759-21636

19-20-21 फरवरी 2001 काठमांडू नेपाल

महाशिवरानी साधना शिविर

'भुकुटी मण्डप' काठमांडू नेपाल

* डॉ. एम. के. भिंदाल 009771-430644 * कुल बडापुर ५७ 242468 * वामोदर लुवेंदी 487318 * उत्तर खालिङड़ा 40555 * मलाहू बजिय 40356 * जनेश्वर बाजेमय 40754 * चन्द्रकुमार 40754 * हिमत भिंद के, सो. 25224 * जयती लाला 21514 * चमर सिंह 22214

अन्य आयोजकों के नाम अंगले अंक में

पौरी पृथिव्या मंगलवार १-१० जनवरी की मध्यसात्रि ३२
बजकर १२ मि. से ३ बजकर २० मि. ता. १० जनवरी तक
कुल ३ घंटा १७ मिनट तक चन्द्रयहण है। इसी से माघ स्नान
महाकुम्भ पर्व प्रयाग का शुभारंभ भी है। इस अवसर पर साधना
मंत्र जप स्नान शाल्क वा तर्पण अत्यन्त लाभदायक है।



COLLECTION OF VARIOUS

- > HINDUISM SCRIPTURES
- > HINDU COMICS
- > AYURVEDA
- > MAGZINES

FIND ALL AT [HTTPS://DSC.GG/DHARMA](https://dsc.gg/dharma)

Made with
By

Avinash/Shashi

Icreator of
hinduism
server

